● वर्ष-3
● अंक-61
रायपुर, गुरुवार
19 अक्टूबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा....

यहां धर्मांतरण-लव जिहाद जोरों पर: हिमंत

लोरमी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा आज छत्तीसगढ़ के मुंगेली जिले के दौरे पर रहे. जिनका कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से भव्य स्वागत किया. जहां हिमंत बिस्वा सरमा लोरमी के मानस मंच में आयोजित भाजपा के विजय विश्वास कार्यकर्ता सम्मेलन में शामिल हुए. भाजपा के तमाम कार्यकर्ताओं ने असम के मुख्यमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया. कार्यक्रम के बीच मंच पर लोरमी विधानसभा से भाजपा के विधायक प्रत्याशी बिलासपुर लोकसभा के सांसद और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अरुण साव, तखतपुर के विधायक प्रत्याशी धर्मजीत सिंह, पूर्व विधायक तोखन साहू, पूर्व विधायक भूपेंद्र सिंह ठाकुर सहित भाजपा के सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे. इस दौरान उन्होंने भूपेश सरकार पर जमकर निशाना साधते हुए इस बार छत्तीसगढ़ में बीजेपी की सरकार बनाने लोगों से अपील की.

उन्होंने कहा छत्तीसगढ़ के सीएम भूपेश बघेल प्रदेश के युवाओं को बेरोजगारी भत्ता देने की बात कहते हैं जबकि हम युवाओं को सीधे रोजगार देंगे.वहीं असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने मीडिया के सवाल पर कहा शराबबंदी भाजपा के मेनिफेस्टो में रहेगा तो बंदी होगा. भाजपा जनता को गलत वादा नहीं करेगी, हम भूपेश बघेल नहीं है. सीएम बघेल के नफरत की राजनीति के सवाल पर कहा कि बघेल दारू का दुकान खोलके मोहब्बत की राजनीति कर रहे हैं, प्रधानमंत्री आवास बनाना नफरत की राजनीति है क्या. इस बीच हिमंत बिस्वा ने बड़ा बयान देते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ में धर्मांतरण, लव जिहाद जोरों पर है. इसको हम असम में झेले हैं, एक बार लव जिहाद और धर्मांतरण हो गया तो हिन्दू खत्म हो जायेगा, छत्तीसगढ़ के लोगों को सतर्क करना हमारी जवाबदारी है.उन्होंने सोनिया गांधी को इटली जाने बीजेपी के सलाह पर भी कहा कि दिल्ली में केजरीवाल के चलते एयर, वाटर पॉल्यूशन है. इसीलिए उन्हें ब्रिटेन जाने की सलाह दी गई है ताकि उनको लंबा आयु मिल सके, इसमे गलत क्या है. असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा का सम्बोधन भाषण में यह भी कहा की राजनीति में वादा निभाना पड़ता है. छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल युवाओं को बेरोजगारी भत्ता देने की बात कहती है लेकिन हम युवाओं को सीधे रोजगार देंगे. इस कार्यक्रम के दौरान अरुण सावन ने कहा छत्तीसगढ़ में विकास करना है, कमल खिलाना है. छत्तीसगढ़ को लूटने वाले भूपेश सरकार को उखाड़ के फेंकना है.

असम की पूरी डेमोक्रेसी वेंज हो गई

असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा आज लोरमी विधानसभा पहुंचे। जहां भाजपा के विजय विश्वास कार्यकर्ता सम्मेलन में शामिल हुए। साथ में लोरमी के भाजपा प्रत्याशी एवं प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष अरुण शाह और लोरमी विधायक धर्मजीत सिंह भी मंच पर उपस्थित थे। असम के मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया वहीं पत्रकारों से बात करते हुए कांग्रेस सरकार पर जमकर निशाना साधा और कहा की धर्मांतरण और लव जिहाद को बहुत बड़ा मुद्दा बताया। असम सीएम ने कहा कि छत्तीसगढ़ में जिस तरीके से धर्मांतरण और लव जिहाद हो रहा है ये एक बहुत बड़ा मुद्दा है। मैं इस पर छत्तीसगढ़ के लोगों को आगाह करना चाहता हूं क्योंकि असम में मैं इस चीज को झेल चुका हूं। एक बार धर्मांतरण और लव जिहाद हो गया तो पूरी तरीके से हिंदू खत्म हो जाएगा। जैसे असम में हिंदू लगभग खत्म हो चुके हैं। असम के मुख्यमंत्री ने सोनिया गांधी पर बोलते हुए कहा की आप इटली चले जाओ वहां आराम से रहो, वहां प्रदूषण कम है आपकी आयु बढ़ेगी यहां दिल्ली में बहुत प्रदूषण है। अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में प्रदूषण करके रखा है अगर कोई भाजपा नेता ने यह बात कही है तो उसमें गलत क्या है। सोनिया गांधी बुजुर्ग है कांग्रेस की नेता हैं।

राहुल गांधी ने भाजपा में वंशवाद पर उठाया सवाल

तो पलटवार में बोले में हिमंत बोले- अनपढ़ बच्चा

नईदिल्ली। वंशवाद की राजनीति को लेकर देश में वार-पलटवार का दौर चलता रहता है। इन सब के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मिजोरम में भाजपा के भीतर वंशवाद को लेकर गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पर निशाना साधा था। इसी को लेकर अब असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने राहुल गांधी पर पलटवार किया है। राहुल गांधी की आलोचना की हुए हिमंता ने उन्हें अनपढ़ बच्चा बता दिया जिसे राजनीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं है। हिमंता ने कहा कि अमित शाह का बेटा कैसे आया सामने? वह बीजेपी में नहीं हैं लेकिन राहुल का पूरा परिवार राजनीति में है। राहुल को लगता है कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) भाजपा का एक अंग है। भाजपा नेता ने साफ तौर पर कहा कि मुझसे उसके बारे में ज्यादा मत पूछो, वह एक अनपढ़ बच्चा है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि क्या राजनाथ सिंह के बेटे, जो अभी यूपी में विधायक हैं, की तुलना (कांग्रेस महासचिव) प्रियंका गांधी से की जा सकती है? क्या वह भाजपा को नियंत्रित करते हैं? उन्होंने कहा कि राहुल गांधी को नए लोगों को मौका देना चाहिए और फिर वंशवाद की राजनीति पर बात करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राहुल

को राजनीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं है और उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि वह वंशवाद की राजनीति के मूल में हैं। एक परिवार - माँ, पिता, दादा, बहन, भाई - हर कोई राजनीति में है और पार्टी को नियंत्रित कर रहा है। लेकिन, वह भाजपा में उसका समानांतर कैसे देख सकते हैं? बेचारा अनपढ़ आदमी वह और क्या कह सकता था। उन्हें लगता था कि बीसीसीआई बीजेपी की एक शाखा है।

राहुल ने क्या कहा था

भाजपा के परिवारवाद के आरोप पर राहुल ने कहा था कि अमित शाह का बेटा वास्तव में क्या कर रहा है? राजनाथ सिंह का बेटा क्या करता है?...पिछली बार मैंने सुना, अमित शाह का बेटा भारतीय क्रिकेट चला रहा है। उन्होंने कहा कि उनमें से कई अनुराग ठाकुर जैसे बच्चे वंशवादी हैं। आपको बता दें कि मिजोरम में चुनाव होने हैं और राहुल गांधी राज्य के दौरे पर थे। कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि दोनों पार्टियाँ ज़ेडपीएम (ज़ोरम पीपुल्स मूवमेंट) और एमएनएफ (मिज़ो नेशनल फ्रंट) भाजपा और आरएसएस के लिए राज्य (मिज़ोरम) में प्रवेश करने के साधन हैं। कांग्रेस पार्टी कभी भी (राज्य में) प्रवेश का साधन नहीं बन सकती क्योंकि हम वैचारिक रूप से पूरी तरह से भाजपा के खिलाफ हैं।

जो बाइडेन तेल अवीव पहुंचे, अरब नेताओं से बैठक रद्द

नईदिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन बुधवार को इजरायल-हमास संघर्ष के बीच तेल अवीव पहुंचे। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बेन गुरियन हवाई अड्डे पर बाइडन से मुलाकात की और एक दूसरे को गले लगाया।

गाजा पट्टी में एक अस्पताल में विस्फोट में सैकड़ों लोगों की मौत को लेकर समूचे पश्चिम एशिया में आक्रोश फैल गया है जिसके कारण इजराइल-हमास युद्ध की चुनौती और मुश्किल हो गई।बाइडन अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत जॉर्डन की भी यात्रा करने वाले थे लेकिन वाशिंगटन से रवाना होने से पहले अरब नेताओं के साथ उनकी बैठक रद्द हो गई जिससे संघर्ष के इस क्षण में अहम बातचीत के लिए नेताओं की आमने-

सामने की बैठक का मौका नहीं मिल पाया। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने बेन गुरियन हवाई अड्डे पर बाइडन से मुलाकात की और एक दूसरे को गले लगाया, जिसके बाद दोनों नेताओं के बीच बैठकें होंगी। इस बैठक में बाइडन के गाजा पट्टी में फलस्तीनियों को अहम मानवीय सहायता के लिए मार्ग उपलब्ध कराने पर जोर देने की संभावना है।सात अक्टूबर को हमास के हमलों के जवाब में इजराइल गाजा पर संभावित जमीनी आक्रमण की तैयारी कर रहा है। हमास के हमले में 1,400 इजराइली नागरिकों की मौत हो गई।व्हाइट हाउस के राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रवक्ता जॉन किर्बी ने राष्ट्रपति के विशेष विमान 'एयरफोर्स वन' पर सवार पत्रकारों से कहा कि ''बाइडन जमीनी स्थिति के बारे में इजराइलियों से जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं और कुछ कठिन सवाल पूछ सकते हैं''।किर्बी ने कहा, ''वह उनसे मित्र के तौर पर सवाल करेंगे।''राष्ट्रपति की इजराइल के सुरक्षा बलों और हमले में मारे गए लोगों के परिजनों एवं उन बंधकों के रिश्तदारों से भी मुलाकात करने की योजना है जिन्हें इजराइल में घुसपैठ के दौरान बंधक बनाया गया।स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि गाजा में इजराइल के हमले में करीब 2,800 फलस्तीनियों के मारे जाने की सूचना है। अन्य 1,200 लोगों के मलबे में जिंदा या मुर्दा दफन होने की आशंका है।ये आंकड़े मंगलवार को अल-अहली अस्पताल में विस्फोट से पहले के हैं। हालांकि विस्फोट का कारण स्पष्ट नहीं है।हमास संचालित स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि इजराइल के हमले के कारण यह विस्फोट हुआ जबकि इजराइली सेना ने हमले में किसी भी प्रकार की संलिप्तता से इनकार किया है।

ब्रह्मोस एयर-लॉन्च वर्जन मिसाइल का सफल परीक्षण; 1500 किमी से भी अधिक दूरी से दुश्मनों को बनाएगी निशाना।

प्रमुख समाचार

एनसीएलएटी के सदस्यों को अवमानना का नोटिस

नईदिल्ली। भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने बुधवार को कहा कि राष्ट्रीय कंपनी कानून अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलएटी) की हालत खराब हो गई है और उन्होंने फिनोलेक्स केबल्स मामले में न्यायिक सदस्य राकेश कुमार और

तकनीकी सदस्य आलोक श्रीवास्तव को अवमानना नोटिस जारी किया है। यह पूछते हुए कि शीर्ष अदालत को उनके खिलाफ अवमानना कार्यवाही क्यों नहीं शुरू करनी चाहिए, उन्होंने उन्हें 30 अक्टूबर को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का आदेश दिया।उन्होंने कहा कि मैं न्यायमूर्ति अशोक भूषण के बारे में बात नहीं कर रहा हूं। वह उन सबसे प्रतिष्ठित न्यायाधीशों में से एक हैं जिन्हें मैं जानता हूं... लेकिन एनसीएलटी और एनसीएलएटी अब सड़ चुके हैं। यह मामला उस सड़न का उदाहरण है। अदालत ने कहा कि प्रथम दृष्टया हमारा मानना है कि एनसीएलएटी के सदस्य सही तथ्यों का खुलासा करने में विफल रहे हैं। अदालत ने एनसीएलएटी पीठ के 13 अक्टूबर के फैसले को भी रद्द कर दिया, जिसमें कंपनी को वार्षिक आम बैठक के आंकड़े जारी करने का आदेश दिया गया था।

तेलंगाना में कांग्रेस को हराने सभी मिल गए : राहुल

नईदिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने तेलंगाना में सत्तारूढ़ बीआरएस और भाजपा पर निशाना साधते हुए बुधवार को कहा कि राज्य में 30 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव में मुकाबला उनकी पार्टी और मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की अगुवाई

वाली पार्टी के बीच ही है। अपनी बहन प्रियंका गांधी वाद्रा के साथ ऐतिहासिक रामप्पा मंदिर में पूजा-अर्चना के बाद यहां एक जनसभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी चाहती है कि भारत राष्ट्र समिति तेलंगाना चुनाव जीते। आरोप लगाया कि भाजपा, बीआरएस तथा असदुद्दीन ओवैसी नीत ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिममीन कांग्रेस को हराने के लिए एक साथ मिलकर काम कर रही हैं। उन्होंने कहा, ''तेलंगाना चुनाव में मुकाबला कांग्रेस और बीआरएस के बीच है। हमने भाजपा को पहले ही हरा दिया है। लेकिन भाजपा चाहती है कि तेलंगाना में बीआरएस जीतेऔर एआईएमआईएम भी उनके साथ है।'' राहुल गांधी ने भाजपा और बीआरएस के बीच मौन सहमति होने का आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा संसद में जो चाहती थी।

दिल्ली से ज्यादा मुंबई की हवा हुई दमघोंटू

नईदिल्ली। मुंबई में हवा की गुणवत्ता बुधवार को लगातार दूसरे दिन खराब हो गई, जिससे हवा दिल्ली से भी बदतर हो गई। सिस्टम ऑफ एयर क्वालिटी एंड वेदर फोरकास्टिंग एंड रिसर्च के अनुसार, मुंबई का समग्र वायु गुणवत्ता सूचकांक दिल्ली के 83 (संतोषजनक) की तुलना में 119 (मध्यम) रहा। शहर के छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (सीएसटी) क्षेत्र के आसपास हवा की गुणवत्ता बहुत खराब दर्ज की गई और एक स्वास्थ्य सलाह जारी की गई। स्वास्थ्य चेतावनी में कहा गया है, हर किसी को असुविधा महसूस हो सकती है। लोगों को लंबे समय तक बाहर रहने से बचना चाहिए क्योंकि इससे श्वसन संबंधी बीमारी हो सकती है। लोगों से सीएनजी पर स्विच करके वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करने का भी आग्रह किया गया। कई एक्स एक यूजर ने लिखा और कोहरे में घिरी इमारतों और दृश्यता कम होने का एक वीडियो साझा करते हुए लिखा, दक्षिण मुंबई धुंध में डूब रहा है। सुबह 9 बजे शून्य दृश्यता। एक ने लिखा कि मुंबई में पीएम 2.5 प्रदूषण का 30 प्रतिशत परिवहन क्षेत्र के लिए जिम्मेदार है। उद्योगों + बिजली उत्पादन क्षेत्र का लगभग दोगुना जो 18 प्रतिशत पर है।

मिजोरमः भाजपा ने जारी की 23 उम्मीदवारों की सूची

नईदिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने सात नवंबर को होने वाले मिजोरम विधानसभा चुनाव के लिए निवर्तमान सदन के अध्यक्ष और सत्तारूढ़ एमएनएफ से हाल में पार्टी में शामिल होने वाले कई अन्य नेताओं समेत 23 उम्मीदवारों के नामों की बुधवार को घोषणा की। भाजपा ने ज्यादातर नए चेहरे उतारे हैं जबकि इनमें से चार प्रत्याशी महिलाएं हैं। नामांकन दाखिल करने की अंतिम तारीख 20 अक्टूबर है। भाजपा की प्रदेश इकाई के मीडिया संयोजक जॉनी लालथनपुइया ने बताया कि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि क्या पार्टी इस पूर्वोत्तर राज्य में सभी 40 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगी। दिल्ली में केंद्रीय नेतृत्व बृहस्पतिवार को एक और सूची जारी कर सकता है। भाजपा ने 2018 के चुनाव में 39 सीटों पर चुनाव लड़ा और एक सीट पर जीत हासिल कर पहली बार राज्य विस में अपना खाता खोला था।पार्टी के इकलौते विधायक डॉ. बीडी चकमा इस बार चुनाव नहीं लड़ेंगे क्योंकि उन्होंने सक्रिय राजनीति से संन्यास की घोषणा कर दी है। एक सप्ताह पहले सत्तारूढ़ मिजो नेशनल फ्रंट छोड़कर भाजपा में शामिल होने वाले विधानसभा अध्यक्ष लालरिनलियाना सैलो मामित सीट से चुनाव लड़ेंगे।

आजम खान को पत्नी-बेटे समेत 7 साल की सजा

नईदिल्ली। रामपुर की एक अदालत ने बुधवार को समाजवादी पार्टी (सपा) के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व मंत्री आजम खां, उनकी पत्नी तज़ीन फातिमा और बेटे अब्दुल्ला आजम को वर्ष 2019 के फर्जी जन्म प्रमाण पत्र मामले में दोषी ठहराते हुए सात साल की जेल की

सजा सुनाई। समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव ने अदालत के इस निर्णय के बाद आरोप लगाते हुए कहा कि खां के धर्म की वजह से उनके साथ अन्याय हो रहा है। अभियोजन पक्ष के वकील अरुण प्रकाश सक्सेना ने बताया, एमपी—एमएलए अदालत के मजिस्ट्रेट शोभित बंसल ने फर्जी जन्म प्रमाण पत्र मामले में आजम खां, उनकी पत्नी तजीन फातिमा और बेटे अब्दुल्ला आजम को सात साल की सजा सुनायी और 50 हजार रुपये जुर्माने का जुर्माना भी लगाया। फैसले के बाद, तीनों को न्यायिक हिरासत में ले लिया गया और अदालत से ही जेल भेज दिया गया। अदालत के आज फैसला सुनाये जाने के मद्देनजर शहर में व्यापक सुरक्षा बंदोबस्त किये गये थे। सक्सेना ने बताया कि रामपुर से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मौजूदा विधायक आकाश सक्सेना ने तीन जनवरी 2019 को गंज पुलिस थाने में मामला दर्ज कराया था।

छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रत्याशियों की दूसरी सूची जारी, 53 के नाम शामिल

रायपुर। छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रत्याशियों की दूसरी सूची जारी कर दी गई है। इसमें 53 लोगों के नाम शामिल किए गए हैं। इसके अनुसार पूर्व महापौर जतिन जायसवाल जगदलपुर से कांग्रेस के प्रत्याशी बनाए गए हैं। जतिन उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव के करीबी माने जाते हैं। 58 वर्षीय जतिन नए चेहरे हैं। जगदलपुर सीट से भाजपा ने भी अपने पूर्व महापौर किरण देव को प्रत्याशी बनाया है। जगदलपुर अनारक्षित सीट पर दो पूर्व महापौर के बीच विधानसभा चुनाव में मुकाबला होगा।

छत्तीसगढ़ में दो चरणों में चुनाव होने वाले हैं। जिसमें पहले चरण में सात नवंबर को चुनाव होंगे और दूसरे चरण में 17 नवंबर को की तारीख सुनिश्चित की गई है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस की पहली सूची 15 अक्टूबर को

जारी हुई थी,वहीं 12 अक्टूबर को नईदिल्ली में केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक हुई थी।

बिंद्रानवागढ़ से कांग्रेस ने जनक ध्रुव को बनाया विधायक प्रत्याशी: वर्तमान में प्रदेश अध्यक्ष आदिवासी कांग्रेस के पद पर हैं। 10 साल बाद फिर आमने सामने जनक ध्रुव और गोवर्धन मांझी । 2013 के विधानसभा चुनाव में गोवर्धन मांझी से 30 हजार मतों से हारे थे जनक ध्रुव । जनक ध्रुव दूसरी बार बिंद्रानवागढ़ से कांग्रेस के प्रत्याशी बनाए गए हैं।राजिम से कांग्रेस ने वर्तमान विधायक अमितेश शुक्ल पर भरोसा बरकार रखते हुए उन्हें छठवीं बार राजिम से प्रत्याशी घोषित किया है। अमितेश शुक्ल 2018 के चुनाव में 59 हजार मतों से विजयी हुए थे । राजिम को शुक्ला परिवार की परंपरागत सीट माना जाता है।1999 में श्यामाचरण के लोकसभा जाने के बाद अप चुनाव हुए और अमितेश शुक्ल ने जीत दर्ज की।अजीत जोगी को सरकार में पंचायत मनात्री बने कांग्रेस पार्टी वहां 1999 से लगातार अमितेश शुक्ल को प्रत्याशी बना रही है पिछले 5 चुनाव में से अमितेश शुक्ल 3 बार जीते है और 2 बार हारे हैं।

53 प्रत्याशियों के नाम, विधानसभा क्षेत्र प्रत्याशी का नाम

सरगुजा संभाग में विधानसभा सीटें
भरतपुर-सोनहट(एसटी) गुलाब सिंह कमरो
मनेंद्रगढ़ (सामान्य) रमेश सिंह
प्रेमनगर(सामान्य) खेलसाय सिंह
भटगांव (सामान्य) प्रेमनाथ राजवाड़े
प्रतापपुर(एसटी) राजकुमार मरावी
रामानुजगंज(एसटी) डा. अजय तिर्की
सामरी (एसटी) विजय पैकरा
लुंड्रा(एसटी) डा. प्रीतम राम
जशपुर(एसटी) विनयकुमार भगत
कुनकुरी(एसटी) यूडी मिंज
पत्थलगांव(एसटी) रामपुकार सिंह
बिलासपुर संभाग में विधानसभा सीटें
लैलुंगा(एसटी) विद्यावती सिदार
रायगढ़(सामान्य) प्रकाश शक्राजीत नायक
सारंगढ़(एससी) उत्तरी जांगड़े
धर्मजयगढ़(एसटी) लालजीत सिंह राठिया
रामपुर(एसटी) फूलसिंह राठिया
कटघोरा(सामान्य) पुरुषोत्तम कंवर
पाली-तानाखार (एसटी) दुलेश्वरी सिदार
मरवाही(एसटी) डा. केके ध्रुव
कोटा(सामान्य) अटल श्रीवास्तव
लोरमी(सामान्य) थानेश्वर साहू
मुंगेली(एससी) संजीत बैनर्जी
तखतपुर(सामान्य) डा. रश्मि आशीष सिंह
बिल्हा(सामान्य) सियाराम कौशिक
बिलासपुर(सामान्य) शैलेष पांडेय
बेलतरा(सामान्य) विजय केशरवानी
मस्तुरी(एससी) दिलीप लहरिया
अकलतरा(सामान्य) राघुवेंद्र सिंह
जांजगीर-चांपा(सामान्य) व्यास कश्यप
चंद्रपुर(सामान्य) रामकुमार यादव
जैजैपुर(सामान्य) बालेश्वर साहू
पामगढ़(एससी) शेषराज हरबंश
रायपुर संभाग की विधानसभा सीट
बसना(सामान्य) देवेंद्र बहादुर सिंह
खल्लारी (सामान्य) द्वारिकाधीश यादव
बिलाईगढ़(एससी) कविता प्रान लहरे
बलौदाबाजार(सामान्य) शैलेष नितिन त्रिवेदी
भाटापारा (सामान्य) इंदरकुमार साव
धरसींवा(सामान्य) छाया वर्मा
रायपुर-ग्रामीण(सामान्य) पंकज शर्मा
रायपुर- पश्चिम (सामान्य) विकास उपाध्याय
रायपुर-दक्षिण(सामान्य) महंत रामसुंदर दास
अभनपुर(सामान्य) धनेंद्र साहू
राजिम(सामान्य) अमितेश शुक्ल
बिंद्रानवागढ़(एसटी) जनकलाल ध्रुव
कुरूद(सामान्य) तारिणी चंद्राकर
दुर्ग संभाग की विधानसभा सीटें
संजारी बालोद(सामान्य) संगीता सिन्हा
गुंडरदेही(सामान्य) कुंवरसिंह निषाद
दुर्ग शहर (सामान्य) अरुण बोरा
भिलाई नगर(सामान्य) देवेंद्र यादव
वैशाली नगर(सामान्य) मुकेश चंद्राकर
अहिवारा(एससी) निर्मल कोसरे
बेमेतरा(सामान्य) आशीष कुमार छाबड़ा
जगदलपुर संभाग
जगदलपुर(सामान्य) जितिन जायसवाल

कांग्रेस आतंकवादियों का समर्थन करती है: हिमंता बिस्वा सरमा

कवर्धा/मुंगेली। छत्तीसगढ़ में पहले चरण के चुनाव के लिए नामांकन का दौर चल रहा है। कवर्धा से बीजेपी ने विजय शर्मा को अपना प्रत्याशी बनाया है। विजय शर्मा यहां से कांग्रेस के दिग्गज नेता और मंत्री मोहम्मद अकबर के खिलाफ चुनाव लड़ेंगे। बुधवार को विजय शर्मा ने अपना नामांकन दाखिल किया। नामांकन के दौरान असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा भी मुख्य अतिथि के तौर पर कवर्धा पहुंचे थे। नामांकन से पहले एक रैली का आयोजन किया गया था। जिसमें हिमंता बिस्वा जमकर गरजे।

रैली को संबोधित करते हुए हिमंता बिस्वा सरमा ने कांग्रेस सरकार पर जोरदार हमला बोला। हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा कि जब से कवर्धा में आया हूं। अकबर-अकबर सुना हूं। पहले उत्तर प्रदेश में अकबर सुनता था। लेकिन भाजपा की सरकार आते ही अकबर गायब हो गया। छत्तीसगढ़ में भी भाजपा की सरकार बनते ही कवर्धा से अकबर गायब हो जाएगा।हमने असम में बहुत बांग्लादेशी घुसपैठियों को भगाया है,अब छत्तीसगढ़ और कवर्धा की बारी है।

हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा यहां पहुंचा तो अकबर-अकबर सुनाई दे रहा था। असम में भी एक अकबर आया था, लोगों ने उसे दिल में बिठाया। आज सभी जिले में हिन्दू अल्पसंख्यक बन कर रह गए हैं। एक अकबर आता है, तो 100 अकबर लाता है। उत्तर प्रदेश में भी पहले बाबर-बाबर सुनाई देता था। जब भाजपा की सरकार बनी, तो बाबर को खत्म कर दिया और अब वहां राम मंदिर का निर्माण हो रहा है। बाबर, हुमायूं, अकबर को उठाकर फेंकना जरूरी है। इसे जल्दी विदा करो।

हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा कि 60 साल कांग्रेस ने राज किया लेकिन मंदिर तोड़कर मस्जिद बनाया है। मोदी सरकार में फिर से मंदिर बनाने का काम किया है।कांग्रेस रावण की पूजा करती है। बीजेपी राम की पूजा करती है। इसलिए उत्तर प्रदेश में राम मंदिर बना रही है। छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल गरीबों का ढाई लाख आवास खा गए। गरीबों का मकान छीनने वाली सरकार को एक मिनट भी सरकार में रहने का अधिकार नहीं है। राहुल गांधी इजराइल और फिलिस्तीन की लड़ाई में हमास का पक्ष ले रहे हैं। जबकि हमास आतंकवादी है। कांग्रेस हमेशा आतंकवादी का समर्थन करती है।

कवर्धा में नामांकन रैली को संबोधित करने के बाद हिमंता बिस्वा विजय विश्वास कार्यकर्ता सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए मुंगेली के लोरमी पहुंचे। जहां हिमंता बिस्वा ने लोरमी की जनसभा को संबोधित किया।इस दौरान हिमंता ने पीएससी घोटाले को लेकर कांग्रेस पर हमला बोला। हिमंता ने कहा कि सरकार ने गरीब बेरोजगारों का हक लूट लिया। बीजेपी सरकार आने पर 16 लाख परिवारों को आवास मिलेगा।

हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा छत्तीसगढ़ में धर्मांतरण और लव जेहाद शुरू हो गया है। जहां भी कांग्रेस की सरकार है हिंदू तकलीफ में जीवन जी रहे हैं।कांग्रेस ने बाबर को पाला है,भूपेश बघेल ने अकबर को पाला है और हम श्रीराम का मंदिर बनाएंगे। मुंगेली में हिमंत बिस्वा की सभा को लेकर धरमजीत सिंह ने भी बड़ी बात कही।धरमजीत सिंह ने हिमंता बिस्वा सरमा को अपना आदर्श बताया।साथ ही कहा कि ये बहुत बड़ा मार्मिक और भावुक क्षण है। मैं 1990 से इस क्षेत्र से राजनैतिक रूप से जुड़ा हूं।मुझसे कोई गलती हुई हो तो उसके लिए जनता से हाथ जोड़कर माफी भी मांगता हूं। इस दौरान बीजेपी के प्रदेशाध्यक्ष अरुण साव ने प्रदेश में कांग्रेस की सरकार को हटाकर बीजेपी को सत्ता में वापस लाने की अपील जनता से की।साथ ही साथ हिमंता बिस्वा सरमा को तखतपुर आने का निमंत्रण भी दिया।

छत्तीसगढ़ का ऐसा नेता जिसका 30 साल से नहीं कटा टिकट

कांकेर। छत्तीसगढ़ में पहले फेस के चुनाव के लिए राजनीतिक दलों के साथ प्रत्याशियों के बीच सम्मान की लड़ाई जारी है। कांग्रेस और बीजेपी के बीच हर चुनाव में मुख्य मुकाबला रहता है।लेकिन आज हम ऐसे नेता के बारे में आपको बताने जा रहे हैं। जिन्हें पार्टी ने हर चुनाव में मौका दिया है।भले ही वो चुनाव जीते या हारे। 1993 से लेकर 2023 के चुनाव तक उनका टिकट नहीं काटा गया है। हर बार के चुनाव में उन्हें प्रत्याशी बनाया गया यहीं नही बीजेपी ने सांसद की टिकट भी देकर उन्हें मैदान में उतारा।

हम जिस नेता के बारे में आपको बताने जा रहे हैं उनका टिकट कभी नहीं कटा। इस नेता का नाम है विक्रम उसेंडी। विक्रम उसेंडी बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष का दायित्व भी निभा चुके हैं। कांकेर जिले के अंतागढ़ विधानसभा के घोटुलबेडा गांव के

निवासी विक्रम उसेंडी बीजेपी के वरिष्ठ नेता हैं। 90 के दशक में शिक्षक पद से इस्तीफा देकर विक्रम उसेंडी राजनीति में आए। अविभाजित मध्यप्रदेश जब अंतागढ़ नारायणपुर विधानसभा में आता था। उस वक्त 1993 में विक्रम उसेंडी विधायक चुने गए थे।

छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद 2003 से 2014 तक तीन बार विधायक चुने गए। 2004 से 2008 तक वन मंत्री रहे। 2003 से 2004 तक शिक्षा मंत्री भी रहे। 2014 में 16 वीं लोकसभा के लिए कांकेर लोकसभा से सांसद भी चुने गए। सबसे खास बात ये है कि पार्टी ने इनका टिकट कभी नहीं काटा। जब से राजनीति में प्रवेश किया तब से इन्हें 7 बार टिकट मिला है।5 बार इन्होंने चुनाव जीता है। 2 बार हारा है। 2023 के विधानसभा के लिए इन्हें पार्टी ने फिर से अंतागढ़ विधानसभा के लिए विक्रम उसेंडी को प्रत्याशी बनाया गया है। विक्रम उसेंडी 7 बार अब तक चुनाव लड़ चुके हैं जिसमें 6 बार विधानसभा के लिए चुनाव लड़ा।विधानसभा चुनाव में विक्रम उसेंडी को 4 बार जीत हासिल की।2014 लोकसभा चुनाव में विक्रम उसेंडी को सांसद का टिकट मिला।जिसमें उन्हें जीत हासिल हुई।

रोड नहीं तो वोट नहीं पर अड़े ग्रामीण, कांग्रेस हो या बीजेपी नहीं मिली समस्याओं से मुक्ति

बिलासपुर। चुनावी माहौल में मीडिया ने विधानसभा का हाल जनता के बीच ला रहा है। इसी कड़ी में मीडिया की टीम मस्तूरी विधानसभा का हाल जानने पहुंची। जब हमारी टीम विधानसभा का दौरा कर रही थी। तो ऐसे गांव में पहुंची जहां के लोगों ने मतदान करने से मना कर दिया है।आपको बता दें कि इस विधानसभा में कांग्रेस की लहर के बाद भी बीजेपी का कब्जा हुआ था। बावजूद इसके गांव में पिछले कई सालों से बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। जिसे लेकर ग्रामीणों ने चुनाव में मतदान नहीं करने की बात की है। ग्रामीणों ने विरोध स्वरूप इस बार मतदान में हिस्सा नहीं लेने का ऐलान किया है। मीडिया को जब इस बात की जानकारी हुई तो वो गांव में पहुंची।इस दौरान ग्रामीणों को मतदान के लिए प्रेरित किया।बावजूद इसके ग्रामीणों ने अपनी व्यथा बताते हुए फैसला नहीं बदलने की बात कही है।

जिस जगह की हम बात कर रहे हैं उसे मानिकपुर गांव कहते हैं।स्थानीय लोग इसे खोंदरा से जौंधरा तक कहते हैं। क्योंकि 120 किमी का दायरा मस्तूरी विधानसभा क्षेत्र में आता है। पिछले बीते कार्यकाल में यहां से बीजेपी शासनकाल में स्वास्थ्य मंत्री रहे कृष्णमूर्ति बांधी ने जीत हासिल की थी।पिछले विधानसभा चुनाव में जब बीजेपी का किला धाराशाई हुई,तो मस्तूरी की मीनार डॉ कृष्णमूर्ति बांधी ने बचा ली।बावजूद इसके मानिकपुर गांव के बाशिंदों की मांगों को आज तक पूरा नहीं किया जा सका।

मानिकपुर गांव के लोगों ने इस बार मतदान में हिस्सा नहीं लेने का मन बना लिया है। इस गांव में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी के शासन के दौरान आखिरी बार

सड़क बनीं थी।इसके बाद जो सड़क टूटी आज तक नहीं बनीं।रोड के साथ-साथ नाली और दूसरे गांवों तक जाने वाली सड़क भी खस्ताहाल है।बारिश के दिनों में गांव के लिए ब्लॉक मुख्यालय तक पहुंचना दूभर हो जाता है। रोड के लिए कई बार स्थानीय लोगों ने चक्काजाम,धरना प्रदर्शन और कलेक्टोरेट घेराव किया।बावजूद इसके समस्या का समाधान नहीं हुआ। इस विधानसभा के विधायक बीजेपी के शासन काल में स्वास्थ्य मंत्री रह चुके हैं।लेकिन ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए शहर का मुंह ताकना पड़ता है। आपको बता दें कि मस्तूरी विधानसभा अनुसूचित जाति वर्ग के लिए आरक्षित सीट है। इस सीट पर 2003 और 2008 के चुनाव में बीजेपी ने डॉ।कृष्णमूर्ति बांधी को प्रत्याशी बनाया। 2013 के चुनाव में मस्तूरी विधानसभा सीट पर बीजेपी को हार का सामना करना पड़ा। कांग्रेस से लोक कलाकार दिलीप लहरिया चुनाव जीते। लेकिन कांग्रेस को ये सीट मिलने के बाद भी मस्तूरी क्षेत्र की जनता को समस्याओं से छुटकारा नहीं मिला। 2018 में बीजेपी के डॉ कृष्णमूर्ति बांधी कांग्रेस के प्रत्याशी दिलीप लहरिया को हराकर फिर विधानसभा पहुंचे। कृष्णमूर्ति बांधी 36.37 वोट प्रतिशत और सर्वाधिक 67950 मत के साथ विधायक चुने गए थे।

राजनांदगांव में कांग्रेस का शक्ति प्रदर्शन, सीएम की मौजूदगी में कांग्रेस उम्मीदवारों का नामांकन

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है। पहले चरण में प्रदेश की 20 सीटों पर मतदान है। राजनांदगांव में पहले चरण में 7 नवंबर को मतदान है। जिले के सभी विधानसभा सीटों पर कांग्रेस के प्रत्याशियों ने नामांकन दाखिल किया है। सीएम भूपेश बघेल की मौजूदगी में कांग्रेस प्रत्याशियों ने नामांकन दाखिल किया। इस दौरान मुख्यमंत्री के साथ विधानसभा अध्यक्ष चरण दास महंत और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज भी शामिल थे। इस दौरान जिले में एक सभा का आयोजन किया गया।

राजनांदगांव जिले के राजनांदगांव, डोंगरगांव, डोंगरगढ़ और खुज्जी विधानसभा सीटों पर बुधवार को कांग्रेस प्रत्याशियों ने नामांकन दाखिल किया।कांग्रेस ने राजनांगदांव जो कि पूर्व सीएम रमन सिंह का गढ़ है, इस पर गिरीश देवांगन को टिकट दिया है। वहीं, डोंगरगढ़ से दलेश्वर साहू को कांग्रेस ने टिकट दिया है। इसके अलावा खुज्जी से भोलाराम साहू तो वहीं डोंगरगढ़ से हर्शिता स्वामी बघेल को कांग्रेस ने टिकट दिया है। सभी ने बुधवार को नामांकन दाखिल किया है। इस दौरान सीएम बघेल ने सभी सीटों पर जीत हासिल करने का दावा किया।

बता दें कि बीजेपी ने भी राजनांदगांव के 4 विधानसभा सीटों पर दिग्गज प्रत्याशियों को टिकट दिया है। जिले के राजनांदगांव विधानसभा सीट से

छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम रमन सिंह को बीजेपी ने फिर से टिकट दिया है। ये क्षेत्र रमन सिंह का गढ़ माना जाता है। वहीं, बीजेपी ने डोंगरगांव सीट से भरतलाल वर्मा को टिकट दिया है। डोंगरगढ़ से विनोद खांडेकर को और खुज्जी से गीता घासी साहू को बीजेपी ने टिकट दिया है।

कवर्धा में भाजपा प्रत्याशी विजय शर्मा के नामांकन में शामिल हुए असम सीएम हिमंत बिस्वा सरमा

कवर्धा। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा कवर्धा दौरे पर पहुंचे हैं। सरमा कवर्धा से भाजपा प्रत्याशी विजय शर्मा के नामांकन में शामिल होने पहुंचे हैं। कवर्धा पहुंचने के बाद असम सीएम का भाजपा कार्यकर्ताओं ने फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया। मंच पर असम सीएम के अलावा बिहार के विधायक व छत्तीसगढ़ विधानसभा प्रभारी नितिन नवीन, सांसद संतोष पांडेय, पूर्व सांसद अभिषेक सिंह, कवर्धा विधानसभा भाजपा प्रत्याशी विजय शर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष अशोक साहू समेत पार्टी पदाधिकारी मौजूद हैं। कवर्धा में सरमा ने जनसभा को संबोधित करते हुए कई आरोप लगाए। मंच से सरमा ने छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के पांच साल में छत्तीसगढ़ में सिर्फ धोखा और भ्रष्टाचार हुआ हैं। इसे पूरी तरह खत्म करना है। कांग्रेस के इस कुशासन को खत्म करने का काम सिर्फ भाजपा ही कर सकती है। कवर्धा में बड़ी जनसभा के बाद विजय शर्मा नामांकन दाखिल करेंगे। इस दौरान भाजपा प्रत्याशी बड़ा रोड शो कर कलेक्ट्रेट पहुंचेंगे और नामांकन दाखिल करेंगे। असम सीएम भी भाजपा प्रत्याशी के नामांकन में शामिल होंगे। कांग्रेस प्रत्याशी मोहम्मद अकबर ने 1 लाख 36 हजार 320 वोटों से जीत हासिल की थी। अशोक साहू को 77 हजार से ज्यादा वोट मिले थे।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

कोरिया में दो हाथियों का दल, दहशत में ग्रामीण

कोरिया। जिले में हाथियों का उत्पात एक बार फिर से शुरू हो गया है। हाथियों के दो दल कोरिया वन मंडल के गांवों में उत्पात मचा रहे हैं। हाथियों ने धान की फसल को भी बर्बाद कर दिया है। वन परिक्षेत्र बैकुण्ठपुर के कक्ष क्रमांक 622 में हाथियों के दो दल पहुंचे हैं। इन दोनों दलों में कई हाथियों के होने की सूचना है। दो हाथी खड़गवा वन परिक्षेत्र के देवाडांड बीट के सलका जंगल में तालाब के पास घूम रहे हैं। कुछ हाथी कोरिया वन मंडल की सीमा के पास जंगल में मौजूद है। खड़गवा के पास मौजूद हाथियों ने ग्रामीणों की धान की फसल को नुकसान पहुंचाया है। जिससे ग्रामीण परेशान हैं। रातभर जागकर घरों और फसलों की रखवाली कर रहे हैं। हाथियों के गांव के आस-पास घूमने से वन विभाग हरकत में आया और विभाग की टीम हाथियों के मूवमेंट की निगरानी रख रही है साथ ही ग्रामीणों को हाथियों के पास नहीं जाने की सलाह भी दी जा रही है।वन परिक्षेत्र अधिकारी खड़गवां अर्जुन सिंह ने बताया कि हाथियों से हुए धान की फसल नुकसान का आंकलन कराया जाएगा।

दुर्ग-राजनांदगांव के व्यापारियों से ईडी ने जब्त किए 90 लाख

दुर्ग-भिलाई। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम ने दुर्ग और राजनांदगांव में 7 व्यापारियों के घरों में दबिश दी। लगभग 18 घंटे तक ईडी उनके घर और ऑफिस में दस्तावेज खंगालती रही। इस पूरी कार्रवाई में ईडी ने 90 लाख रुपये कैश, प्रॉपर्टी के दस्तावेज, मोबाइल और डिजिटल सबूत जब्त किए। पदुमनगर, नेहरु नगर और वैशाली नगर में प्रवर्तन निदेशालय की छापामार कार्रवाई मंगलवार सुबह से देर रात तक चली। पांच व्यापारियों के यहां से आधी रात को ईडी की टीम लौट गई, लेकिन चावल व्यापारी सुरेश कुकरेजा के यहां ईडी की टीम सुबह तक जांच करती रही। छापामार कार्रवाई के बाद ईडी चावल व्यापारी सुरेश कुकरेजा के बेटे अंशुल कुकरेजा को अपने साथ रायपुर स्थित कार्यालय ले गई, जहां उससे ईडी के अधिकारी पूछताछ कर रहे हैं। इस कार्रवाई में छत्तीसगढ़ के सबसे बड़े पटाखा व्यापारी सुरेश धिंगानी के घर भी ईडी देर रात तक जांच करती रही। जहां से 7 लाख रुपए नकद और प्रापर्टी के कई दस्तावेज, बैंक एकाउंट और दो मोबाइल जब्त किए।

मनेन्द्रगढ़ पुलिस ने 50 लाख रुपये का कबाड़ जब्त किया

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव जैसे जैसे पास आ रहे हैं राजनीतिक दलों के साथ ही पुलिस भी एक्टिव होती जा रही है। जगह जगह गाड़ियों की चैकिंग के साथ ही बदमाशों और चोरों की धरपकड़ की जा रही है। इसी कड़ी में मनेंद्रगढ़ पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई की। एमसीबी जिले के मनेंद्रगढ़ थाना कोतवाली ने चोरी का सामान खरीदने के आरोप में चुनमुन उर्फ नियाजुद्दीन को गिरफ्तार किया। आरोपी की निशानदेही पर उसके गोदाम की तलाशी पुलिस ने ली। जहां भारी मात्रा में चार पहिया, दो पहिया और जेसीबी के कटे हुए पार्ट्स मिले। पूरा सामना चोरी का था। जिससे आरोपी माल को लेकर किसी तरह के दस्तावेज नहीं दिखा सका। पुलिस ने गोदाम में भरा सारा सामान जब्त कर लिया। लोहा काटने की मशीनों, गैस सिलेंडर सहित 15 टन लोहे का कबाड़ बरामद किया। जिसकी कुल कीमत लगभग 50 लाख रुपये आंकी गई। मनेंद्रगढ़ पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद कोर्ट में पेश किया। जहां से उसे न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया है।

इलेक्शन ड्यूटी में रायगढ़ पुलिस की ताबड़तोड़ कार्रवाई

रायगढ़। रायगढ़ में आदर्श आचार संहिता लगने के बाद से लगातार पुलिस प्रशासन सख्त है। यहां हर चौक चौराहे पर चेकिंग की जा रही है। शहर की बाहरी सीमा पर भी चौकसी बढ़ा दी गई है। इसके साथ ही रायगढ़ पुलिस लगातार कैश जब्त कर रही है। बुधवार को चक्रधर नगर थाना इलाके से पुलिस ने 18 लाख रुपये जब्त किए हैं। इससे पहले सोमवार को रायगढ़ पुलिस ने 15 लाख रुपये से ज्यादा का कैश पकड़ा था। तीन वाहनों से पुलिस ने कुल 15 लाख रुपये बरामद किए थे। रायगढ़ पुलिस को शक है कि जब्त किए गए इस रकम का इस्तेमाल चुनाव में किया जा सकता है। इसलिए पुलिस ने जांच तेज कर दी है। इसके अलावा इस केस की जांच के लिए आयकर विभाग को भी पूरी जानकारी दी गई है। इनकम टैक्स डिपार्टमेंट भी इस मामले की जाचं में जुट गया है। तीन दिनों में 31 लाख रुपये कैश जब्त- रायगढ़ पुलिस ने बीते तीन दिनों में 31 लाख रुपये कैश बरामद किए हैं। सोमवार को रायगढ़ पुलिस ने जूटमिल, छातामुड़ा और कोड़ातराई इलाके से कुल 15 लाख 64 हजार 500 रुपये सीज किए थे।

आधी रात में मगरमच्छ के हमले से मचा हड़कंप, घर में सो रहे लोगों पर किया हमला

कोरबा। कोरबा में रात में एक विशालकाय मगरमच्छ ने घर में सो रहे लोगों पर हमला कर दिया। घर के लोगों बचाने के चक्कर हरिराम टोप्पो मगरमच्छ से भिड़ गया। जिसमें हरिराम गंभीर रूप से घायल हो गया है। घर पर सो रहे सभी सदस्यों ने किसी तरह भाग कर जान बचाई। घटना कटघोरा वन मंडल के पाली वन परिक्षेत्र के शिवपुर गांव की बताई जा रही है। मगरमच्छ खुटाघाट जलाशय से निकल गांव पहुंचा था। इस घटना के बाद आधी रात में हड़कंप मच गया। वहीं घटना की सूचना पाकर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची।

नई सरकार से बिलासपुर के मतदाता उम्मीदें

बिलासपुर। विधानसभा चुनाव में वोटिंग करने को लेकर बिलासपुर की जनता काफी उत्साहित दिख रही है। जनता ने प्रदेश में आने वाली सरकार से काफी उम्मीदें रखी है। किसी को मकान चाहिए, तो किसी को शिक्षा, स्वास्थ्य की बेहतर सुविधा चाहिए, तो किसी को प्रदेश की कानून व्यवस्था में सुधार। जनता को उम्मीद है कि आने वाली सरकार उन्हें फिर से बेहतर सुविधाओं के साथ प्रदेश का विकास करेगी।

बिलासपुर जिले में 6 विधानसभा सीटें है। इन सीटों पर 2018 के चुनाव में जनता ने ऐसे परिणाम दिए थे, जिसकी किसी ने भी कल्पना नहीं की थी। बिलासपुर की जनता ने 6 सीटों में से 02 में कांग्रेस, 3 में भाजपा और एक सीट में जोगी कांग्रेस के उम्मीदवार ने जीत दर्ज की थी। अब जनता फिर से एक बार चुनाव आने पर प्रदेश के विकास और खुद के विकास की उम्मीदें इन नेताओं से

लगाए हुए है। जहां ग्रामीण इलाकों में आम मतदाताओं की छोटी-छोटी समस्याओं के समाधान करने की मांग है। वहीं शहरी क्षेत्र के मतदाता शिक्षा, स्वास्थ्य और बेहतर कानून व्यवस्था चाहती है।

बिलासपुर विधानसभा के मतदाता प्रदेश में आम नागरिकों के लिए बेहतरी के लिए काम करने वाली सरकार चाहते हैं। जनता महंगाई की मार झेल रही है। उनका मानना है कि सरकार को महंगाई कम करने की दिशा में कदम उठाना चाहिए।

स्थानीय निवासी राजेश भागवानी ने कहा बेरोजगारी एक बड़ी समस्या बनकर सामने आ रही है। इसके अलावा महंगाई, बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य को लेकर भी सरकार को उचित कदम उठाना चाहिए। ताकि जनता को इन समस्याओं से राहत मिले।

बेलतरा विधानसभा के लिंगियाडीह में रहने वाली महिलाएं अपने लिए सरकार से पक्के मकान की मांग कर रही हैं। उनके मकान जर्जर हो गया है, बारिश में पानी घर के अंदर टपकने लगता है। साथ ही ग्रामीण इलाको में जनता की छोटी छोटी समस्याएं हैं। जैसे सड़क, पानी, बिजली, बेहतर स्वास्थ्य सुविधा और अपराधिक तत्वों से मुक्ति। इन समस्याओं को ध्यान में रख कर ग्रामीण अपना वोट देने की बात कर रहे हैं।

लिंगियाडीह गांव के ग्रामीण महिलाएं ने कहा सरकार से अपने लिए एक पक्के मकान की हमें उम्मीदें है। राज्य में किसी भी पार्टी की सरकार बने, हमें पक्का मकान चाहिए। हम बार बार कलेक्टर कार्यालय के चक्कर भी लगा चुके हैं। हमें भरोसा दिलाया गया है कि चुनाव के बाद उन्हें पक्का मकान दिया जाएगा।

बिलासपुर में पिछले कई सालों में कई बड़े अपराधिक मामले सामने आये हैं। जिसे लेकर जनता में पुलिस के खिलाफ नाराजगी है। बिलासपुर के मतदाता बिलासपुर जिले की कानून व्यवस्था बिगड़ने को लेकर चिंता जाहिर कर हैं। उनकी मांग है कि जिला प्रशासन के साथ ही राज्य सरकार को भी बिलासपुर के कानून व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए। मतदाताओऔं को प्रदेश में आने वाली सरकार से जिले में बेहतर कानून व्यवस्था बनाने और ईमानदारी के काम करने की उम्मीदें हैं। अब देखना होगा कि आने वाली सरकार लोगों की इन उम्मीद पर कितना खरा उतरती है।

धमतरी में भाजपा संगठन में गुटबाजी क्षेत्रीय संगठन महामंत्री ने ली बैठक

धमतरी। छत्तीसगढ़ में सभी पार्टीयों के घोषित प्रत्याशी चुनाव के मैदान में उत्तर गए है उसके साथ ही भाजपा और कांग्रेस के सभी दिग्गज नेता भी चुनाव प्रचार में उतर गए हैं। लेकिन बात करें धमतरी की तो धमतरी में भाजपा के संगठन में गुटबाजी और कुछ नेताओं में भाजपा प्रत्याशी को लेकर नाराजगी देखने को मिल रही है। इसके साथ ही जिले में नए पद नियुक्ति को भी लेकर चर्चा चल रही है। शायद यही वजह है जो धमतरी विधानसभा के भाजपा प्रत्याशी के चुनाव प्रचार में संगठन का कोई बडा नेता नजर नहीं आ रहा है।

भाजपा के क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल और रायपुर संभाग भाजपा संगठन प्रभारी दिलीप जयसवाल धमतरी भाजपा कार्यालय में कोर कमेटी की बैठक ली है। और संगठन के नाराज नेताओं की बैठक लेकर सभी की नाराजगी दूर करने की कोशिश की गई है। वहीं चर्चा है कि बैठक में क्षेत्रीय संगठन महामंत्री अजय जामवाल ने सभी भाजपा के पदाधिकारियों को पूरी ईमानदारी से भाजपा प्रत्याशी के लिए काम कर जीत दिलाने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही चुनाव में मजबूती से कैसे लडा जाए और जीत कैसे हो इसको लेकर बैठक में विचार विर्मश किया गया है। वहीं रायपुर संभाग भाजपा संगठन प्रभारी दिलीप जयसवाल ने कहा कि भाजपा संगठन के नेताओ में कोई नाराजगी नहीं है। सभी नेता भाजपा प्रत्याशी को जीताने के लिए काम कर रहे हैं।

रमन सिंह ने मतदान की तारीख बदलने की मांग की

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री रमन सिंह ने बुधवार को भारत निर्वाचन आयोग से छठ पूजा त्योहार को देखते हुए 17 नवंबर को होने वाले, छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण के मतदान की तारीख को आगे बढ़ाने का आग्रह किया।

सिंह ने कहा है कि त्योहार के कारण बड़ी संख्या में मतदाता मतदान में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। 90 सदस्यीय छत्तीसगढ़ विधानसभा के लिए सात और 17 नवंबर को दो चरणों में मतदान होगा तथा मतगणना तीन दिसंबर को होगी। छठ का त्योहार इस वर्ष 17 से 20 नवंबर तक मनाया जाना है।

सिंह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा है, छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण (17 नवंबर) के निकट छठ पूजा का पर्व आने से बड़ी संख्या में मतदाता इस निर्वाचन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बन पायेंगे। उन्होंने लिखा है, मैं भारत निर्वाचन आयोग से आग्रह करता हूँ कि दूसरे चरण के मतदान को आगे बढ़ाने की कृपा करें, जिससे अधिक से अधिक संख्या में मतदाता इस चुनाव से जुड़कर

अपने मताधिकार का उपयोग कर पाएं।

राज्य के रायपुर, बिलासपुर, भिलाई, जगदलपुर, कोरबा और अन्य शहरों में रहने वाले बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोग बड़ी संख्या में प्रति वर्ष छठ पर्व भव्य तरीके से मनाते हैं। इससे पहले राज्य में विधानसभा चुनाव लड़ रही आम आदमी पार्टी (आप) ने भीऐसी ही मांग की थी।

भाजपा ने विधायक रमन सिंह को उनकी पारंपरिक सीट राजनांदगांव से चुनाव मैदान में उतारा है। राज्य में पहले चरण में राजनांदगांव के साथ 19 अन्य निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान होगा। दूसरे चरण में अन्य 70 सीटों पर मतदान होगा।

भावना बोहरा को पंडरिया सीट से भाजपा ने बनाया प्रत्याशी

रायपुर-दिल्ली। भावना बोहरा को पंडरिया सीट से भाजपा ने प्रत्याशी बनाया है। पंडरिया सीट पर उम्मीदवार उतारने के साथ ही भाजपा ने छत्तीसगढ़ के 90 में से 86 सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा कर दी है। अब बेलतरा, बेमेतरा, कसडोल और अंबिकापुर विधानसभा सीट पर प्रत्याशी घोषित करना बाकी है। पंडरिया सीट से कांग्रेस ने नीलकंठ चंद्रवंशी को उतारा है।

भारतीय जनता पार्टी ने काफी मंथन के बाद पंडरिया विधानसभा सीट से भावना बोहरा को अपना प्रत्याशी घोषित किया है। वर्तमान में भावना बोहरा जिला पंचायत सभापति है। इसके साथ ही संगठन में भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश मंत्री भी हैं। भावना बोहरा सोशल कामों में ज्यादा एक्टिव रहती हैं। समाजसेवी संस्था भी चलाती हैं। अपनी संस्था के जरिए पंडरिया विधानसभा क्षेत्र में कई सामाजिक काम भी करती हैं।

पंडरिया सीट से भावना बोहरा को भाजपा का टिकट देने पर भूपेश बघेल ने रमन सिंह पर निशाना साधा। सीएम ने कहा कि भाजपा परिवाद का आरोप कांग्रेस पर लगाती है। लेकिन छत्तीसगढ़ के चुनाव में सिर्फ रमन सिंह और उनका परिवार ही चुनाव लड़ रहा है। रमन सिंह, उनका भांजा और भांजी चुनाव लड़ रहे हैं। रमन सिंह का पूरा कुनबा एक साथ चुनाव में डूबेगा।

पंडरिया सीट पर भाजपा ने उतार नया और युवा चेहरा

छत्तीसगढ़ चुनाव 2023 में जीत के लिए भाजपा एड़ी चोटी का जोर लगा रही है। हर सीट पर काफी मंथन कर प्रत्याशी उतारा जा रहा है। यही वजह है कि भाजपा ने पंडरिया सीट पर युवा, महिला वर्ग को ध्यान में रखते हुए भावना बोहरा को टिकट दिया है। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने मोतीराम चंद्रवंशी को टिकट दिया था। जो कांग्रेस प्रत्याशी ममता चंद्राकर से 33547 वोटों से हार गए थे। साल 2013 में भी भाजपा ने मोतीराम चंद्रवंशी को ही मैदान में उतारा था। उस दौरान मोतीराम चंद्रवंशी पंडरिया सीट पर चुनाव जीतकर विधायक बने थे।

रमन अपने ही रिश्तेदारों को दिला रहे टिकट, भावना हैं भांजी : भूपेश

रायपुर। राजनांदगांव में कांग्रेस प्रत्याशियों की नामांकन रैली में शामिल होने से पहले पत्रकारों से चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आज पंडरिया से भाजपा प्रत्याशी भावना बोहरा के नाम की घोषणा होने पर कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह अपने ही रिश्तेदारों और लोगों को टिकट दिलवा रहे है और खास बात यह है कि भावना बोहरा उनकी भांजी है क्योंकि टिकट वितरण में डॉ. रमन सिंह की ही चल रही है। अपने लोगों को टिकिट देकर वे खुद भी डूबेंगे और पूरे कुनबे को भी डूबाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

कांकेर की तीनों सीटों से कांग्रेस उम्मीदवारों ने किया नामांकन

कांकेर। छत्तीसगढ़ में पहले चरण में होने

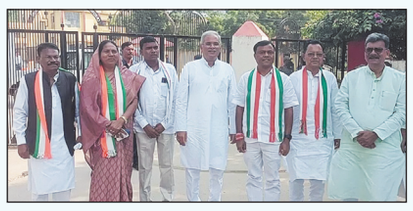

वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर आज कांकेर जिले की तीन विधानसभा सीटों के प्रत्याशियों ने मुख्यमंत्री के नेतृत्व में अपना नामांकन दाखिल किया। नामांकन दाखिल के दौरान प्रदेश के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, विधानसभा अध्यक्ष चरण दास महंत, प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज भी मौजूद रहे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व में भी क्षेत्र की जनता ने जिले की तीनों विधानसभा सीटों से पार्टी को जीत दिलाई थी, इस बार भी जनता का आशीर्वाद मिलेगा और जिले की तीनों विधानसभाओं में जीत दर्ज होगी। वहीं अंतागढ विधायक अनूप नाग के निर्दलीय चुनाव लड़ने और नामंकन लेने पहुंचने के सवाल पर उन्होंने कहा कि उन्हें मना लिया जाएगा, पार्टी से बगावत नहीं करेंगे। वहीं चुनावी घोषणा पत्र जारी करने के सवाल पर उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी उल्टा लटकाने के अलावा कोई बात नहीं कर रही है। हमने जातिगत जनगणना सहित अन्य घोषणा की है, जबकि भारतीय जनता पार्टी केवल आलोचना करने, जेल भेजने, उल्टा लटकाने की बात कह रही है।

भाजपा को देश की नहीं राहुल गांधी की ज्यादा चिंता : टीएस सिंहदेव

रायपुर-दिल्ली। दिल्ली में कांग्रेस सीईसी की बैठक हुई। सीईसी की बैठक में छत्तीसगढ़ के डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव भी शामिल हुए हैं। बैठक से पहले सिंहदेव ने बीजेपी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि भाजपा के पास करने के कुछ काम नहीं है। इस वजह से बार बार राहुल गांधी का नाम लेते रहते हैं। सिंहदेव ने कहा कि बीजेपी के पास करने के लिए कोई काम नहीं है। उन्हें देश की चिंता नहीं है। इसलिए उनका ध्यान राहुल गांधी की ओर चला जाता है। भाजपा को ज्यादा चिंता और ज्यादा खतरा राहुल गांधी से हैं इसलिए वे हमेशा उनका नाम लेते रहते हैं।

चुनाव में भी न भूलें संस्कार व सम्मान

रायपुर। चुनाव के दौर में जब राजनीतिक

पार्टियां किसी भी स्तर तक जाकर बयानबाजी व आरोप-प्रत्यारोप पर उतर आती हैं। ऐसे में कुछ क्षण ऐसे भी होते हैं जब राजनीतिक सुचिता का मिसाल बनते हैं। जो छत्तीसगढ़ की राजनीति में भी कायम है। मंगलवार को एक तस्वीर सोशल मीडिया में घूमते रही जो कि रावणभाठा दशहरा उत्सव समिति के आमंत्रण पर महोत्सव के पूर्व पूजन कार्यक्रम की थी जिसमें विधायक बृजमोहन अग्रवाल और राज्य गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष महंत रामसुंदर दास के साथ सांसद सुनील सोनी भी उपस्थित थे। महंत जी को सम्मान देते हुए सांसद-विधायक ने पैर छूकर आर्शिवाद भी लिया और जब फोटो सेशन की बारी आई तो उन्हे सम्मानपूर्वक बीच की कुर्सी पर बिठाया। यह चर्चा इसलिए कि रायपुर दक्षिण विधानसभा से बृजमोहन अग्रवाल भाजपा से प्रत्याशी घोषित हो चुके हैं और महंत जी का नाम कांग्रेस से फाइनल बताया जा रहा है। ये अलग बात की किन्ही कारणों से उन्हे टिकट न भी मिले। लेकिन देखने व सुनने वालों के लिए एक सीख हैं कि ये परम्परा संस्कार व संबंधों का चुनाव के दौर में भी कायम रहना चाहिए। इस आयोजन की एक और खूबी है जिसे बताना जरूरी होगा समिति के दो प्रमुख सदस्य पार्षद मनोज वर्मा जो कि भाजपा से हैं और सुशीलचंद्र ओझा कांग्रेस से,लेकिन दोनों की प्रमुख भूमिका हर साल के सफल आयोजन में होती है। उत्सव खुशियां देती है..रिश्तों की ये मिठास ही तो है छत्तीसगढ़ की पहचान।

जगदलपुर से कांग्रेस प्रत्याशी कौन, सस्पेंश बरकरार

रायपुर। पहले चरण के लिए चुनाव होने वाली सीट जगदलपुर पर अभी भी कांग्रेस का सस्पेंश बरकरार है। जानकारी के मुताबिक यहां से तीन दावेदारों के नाम चल रहे हैं भूपेश बघेल के कोटे से राजीव शर्मा,दीपक बैज ने मलकीत गैंदू और टी एस सिंहदेव ने जतिन जायसवाल का नाम पसंद का बताया है। लोगों की बेचैनी इसलिए बढ़ रही है क्योकि भाजपा प्रत्याशी का प्रचार जोर शोर से शुरू हो गया है और कांग्रेस से प्रत्याशी ही घोषित नहीं हो पा रहा है। वे लगातार रायपुर से दिल्ली तक संपर्क बनाये हुए हैं, शायद आज परदा हट जाए?

डागा कालेज में आज गरबा का आयोजन

रायपुर। श्रीमती प्रमिलागोकुलदास डागा कन्या महाविद्यालय में शारदीय नवरात्रि के अवसर पर गुरुवार 19 अक्टूबर को कालेज प्रांगण में सुबह 10 बजे गरबा का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि आयुक्त उच्च शिक्षा विभाग श्रीमती शारदा वर्मा प्रमुख रुप से उपस्थित रहेंगी। अध्यक्ष शासी निकाय अजय तिवारी व कालेज प्राचार्य डा.संगीता घई ने गरिमामयी उपस्थिति के लिए अनुरोध किया है।

विधानसभा चुनाव में बड़ी कार्रवाई, हफ्तेभर में मिला 5 करोड़ रुपये से ज्यादा का कैश

रायपुर। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह से अलर्ट मोड पर है। आचार संहिता के लगते ही छत्तीसगढ़ की अंतरराज्यीय सीमाओं और जिलों की सीमाओं पर पुलिस लगातार चेक पोस्ट लगाकर वाहनों की जांच पड़ताल कर रही है। पिछले आठ दिनों के दौरान छत्तीसगढ़ में 5.5 करोड़ रुपये से अधिक की बेहिसाब नकदी, शराब और अन्य सामान जब्त किया गया है। यह जानकारी मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) के कार्यालय ने दी है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय ने मंगलवार को जानकैरी दी कि पिछले आठ दिनों में चुनावी राज्य छत्तीसगढ़ में 5.5 करोड़ रुपये से अधिक की बेहिसाब नकदी, शराब और अन्य सामान जब्त किया गया है। अधिकारियों ने बताया, अन्य चीजों के अलावा, 85 लाख रुपये नकद, 37.57 लाख रुपये मूल्य की 11,851 लीटर शराब, 61.57 लाख रुपये मूल्य के 1,838 किलोग्राम नशीले पदार्थ, 1.7 करोड़ रुपये मूल्य के 63 किलोग्राम आभूषण और 2.03 करोड़ रुपये मूल्य के अन्य सामान जब्त किए गए गए हैं।

चुनाव आयोग ने 9 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान किया था। जिसके बाद से ही पूरे राज्य में आदर्श चुनाव आचार संहिता लागू कर दी गई है। पहले चरण का मतदान 7 नवंबर और दूसरे चरण का मतदान 17 नवंबर को होने हैं। जिसके लेकर पुलिस सीमावर्ती इलाकों में चेक पोस्ट लगाकर वाहनों की जांच पड़ताल कर रही है। ताकि चुनाव को प्रभावित करने के लिए अवैध नकदी, शराब, आभूषण और अन्य सामानोंं की तस्करी रोकी जा सके। पुलिस ने आदर्श आचार संहिता लागू होने के बाद 9 से 16 अक्टूबर के बीच यह जब्तियां की हैं।

अंतागढ़ सीट पर कांग्रेस में बगावत, अनूप नाग पहुंचे नामांकन लेने, निर्दलीय लड़ेंगे चुनाव

कांकेर। अंतागढ़ विधानसभा सीट पर कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। अंतागढ़ विधानसभा सीट से टिकट काटे जाने के बाद नाराज कांग्रेस विधायक अनूप नाग ने निर्दलीय चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया है। अनूप नाग आज नामंकन लेने जिला निर्वाचन कार्यालय पहुंचे हैं। उनका कहना है कि मेरे विधानसभा क्षेत्र की जनता ने मुझे स्वतंत्र चुनाव लड़ने को कहा है।

नामांकन फॉर्म लेने के बाद अनूप नाग ने कहा, बगावत कहना उचित नहीं होगा। जिस ढंग से जनता ने मुझे 2018 के चुनाव में आशीर्वाद दिया। जनप्रतिनिधि होने के नाते मेरे क्षेत्र में कई विकास कार्य हुए। हम यह सोचकर चल रहे थे कि विकास कार्यों से मूल्यांकन होगा, तो हम टिकट पाने को लेकर निश्चित थे। लेकिन हमारा टिकट काट दिया गया।

अनूप नाग ने कहा जिस दिन से टिकट की घोषणा हुई है, मेरे पूरे अंतागढ़ विधानसभा क्षेत्र की माताएं बहनें आहत है। जनता लगातार कह रही है कि आप स्वतंत्र उम्मीदवार बनकर चुनाव लड़िए। हम आपके साथ हैं। मैं उन्हीं लोगों के आदेश का पालन कर रहा हूं।

अन्य राजनीतिक दलों में शामिल होने के सवाल पर अनूप नाग ने कहा, मेरी किसी भी राजनीतिक पार्टी, क्षेत्रीय पार्टी से बात नहीं हुई है और ना ही मैं किसी के पक्ष में जाने वाला हूं। मेरे विधानसभा की जनता चाह रही हैं कि स्वंत्रत रूप से निर्दलीय उम्मीदवार बनकर चुनाव फाइट करूं। वहीं नाम वापस लेने के सवाल पर अनूप नाग ने कहा, सोच कैसे लिए। ये अनूप नाग है, कभी नाम वापस नहीं लूंगा।

अनूप नाग के बगावत पर सीएम बघेल बोले- अनूप नाग के निर्दलीय लड़ने को लेकर भूपेश बघेल ने अंतागढ़ विधानसभा से विधायक रहे अनूप नाग के फॉर्म लेने को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा, फॉर्म लेना अलग बात है, उसे जमा करना दूसरी बात है और लड़ना तीसरी बात है। हमें पूरा विश्वास है, अनूप नाग हमारे साथ हैं।

बता दें कि अंतागढ़ विधानसभा में कांग्रेस ने अनूप नाग का टिकट काट कर रूपसिंह पोटाई को टिकिट दिया गया है। रूपसिंह पोटाई को टिकट देने से अनूप नाग के समर्थकों में नाराजगी देखी जा रही थी। अंतागढ़ में हुए संकल्प शिविर में भी अनूप नाग के समर्थकों ने पीसीसी चीफ के सामने अनूप नहीं तो कोई नहीं के नारे भी लगाए थे।

छत्तीसगढ़ चुनाव के दूसरे चरण के लिए नामांकन की तैयारी, एमसीबी और कोरिया जिले में तीन विधानसभा

मनेंद्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर। छत्तीसगढ़ में दूसरे चरण का मतदान 17 नवंबर को होगा। कोरिया और मनेंद्रगढ़ जिले को मिलाकर तीन विधानसभा सीटें आती हैं।जिसके लिए नामांकन की प्रक्रिया 21 अक्टूबर से शुरु होगी। नामांकन प्रक्रिया के मद्देनजर जिला प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। नामांकन फॉर्म भरने के लिए रिटर्निंग ऑफिसर के रूम में केवल चार लोगों को ही प्रवेश करने दिया जाएगा। एमसीबी और कोरिया जिले के प्रत्याशियों के लिए फॉर्म अलग-अलग जगहों पर भरे जाएंगे। अधिसूचना का प्रकाशन 21 अक्टूबर को, नामांकन की अंतिम तिथि 30 अक्टूबर को, नामांकन पत्रों की संवीक्षा 31 अक्टूबर को, नाम वापसी की तिथि 2 नवंबर को तथा मतदान की तिथि 17 नवंबर को है।

मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर जिले के सीमा अंतर्गत दोनों विधानसभा में कुल 388 मतदान केन्द्र हैं। शेष 78 मतदान केन्द्र तहसील, सोनहत जिला कोरिया में आते हैं। जिले के अंतर्गत 30 संगवारी मतदान केंद्र होंगे।जिनका संचालन महिला मतदान दल करेगा। दिव्यांग कर्मचारियों द्वारा संचालित

मतदान केन्द्र की संख्या 2 होगी। 10 आदर्श मतदान केन्द्र भी बनाए जाएंगे। मतदान केन्द्र में अधिकतम मतदाताओं की संख्या 1500 तक निर्धारित है। वहीं मतदाताओं की बात करें तो अलग-अलग विधानसभा में अलग-अलग मतदाताओं की संख्या है।दोनों विधानसभाओं को मिलाकर 310962 मतदाता हैं।

जानकारी के अनुसार इस बार नामांकन फार्म न सिर्फ जिले में, बल्कि निर्वाचन की वेबसाइट और राजनीतिक दलों के अपने अधिकृत वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाएगा। प्रत्याशियों की शिक्षा, आय और संपत्ति से जुड़ी जानकारी सभी आसानी से देख सकेंगे।

आचार संहिता उल्लंघन को लेकर सी विजिल मोबाइल एप्लीकेशन के जरिए आम व्यक्ति शिकायत दर्ज कर सकता है। निर्वाचन सीमा के भीतर मौजूद सभी लोग आवेदन साइन इन करके अपने मोबाइल फोन के माध्यम से आदर्श आचार संहिता और व्यय उल्लंघन की शिकायत कर सकते हैं। यह मोबाइल एप फोटो, ऑडियो, वीडियो अपलोड कर शिकायत करने की अनुमति देता है। लोगों को पहचान का खुलासा किए बिना शिकायत करने की सुविधा मिलेगी।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने रायपुर दक्षिण से कन्हैया अग्रवाल को टिकट देने की मांग की

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में प्रत्याशियों को लेकर कार्यकर्ताओं के विरोध का सिलसिला जारी है। प्रदेश कांग्रेस की पहली लिस्ट जारी हो गई है। कांग्रेस की दूसरी लिस्ट जारी हो इससे पहले ही रायपुर दक्षिण कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रत्याशी को लेकर जमकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। कार्यकर्ताओं कहना है कि हमें पैरासूट

प्रत्याशी नहीं चाहिए। दक्षिण का लाल कन्हैया अग्रवाल को टिकट मिलना चाहिए। रायपुर दक्षिण विधानसभा कांग्रेस कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में प्रदेश कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन पहुंचकर विरोध जताया है। वहीं कार्यकर्ताओं का कहना है कि दक्षिण विधानसभा के लिए कन्हैया अग्रवाल को प्रत्याशी बनाकर मैदान में उतारा जाए। उन्होंने पिछले पांच सालों से काम कर रहे हैं। कार्यकर्ताओं का कहना है कि जो दुख-सुख में साथ दे उसे प्रत्याशी के रूप में देखना चाहते हैं। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की। सभी कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस कार्यालय में जमकर नारेबाजी की है। इसके साथ ही जिसने बृजमोहन को हाफ किया वही उसे साफ करेगा पोस्टर पर लिखा था। ऐसे ही कई नारों के साथ कार्यकर्ता अपने प्रत्याशी का समर्थन करने के लिए कांग्रेस भवन पहुंचे हुए थे। वहीं कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के मीडिया प्रभारी सुशील आनंद शुक्ला से बात-चीत की है। कार्यकर्ताओं ने उनसे मांग की है कि रायपुर दक्षिण विधानसभा के लिए कन्हैया अग्रवाल को मौका दिया जाए। इस बात पर सुशील आनंद शुक्ला ने आश्वासन देते हुए कहा कि इस संबध में सीएम से बात करता हूं।

भटगांव विधानसभा का पुराना है इतिहास, समझिये जातीय समीकरण

सूरजपुर। छत्तीसगढ़ के सरगुजा आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र स्थित सूरजपुर जिला काले हीरे के भंडार के लिए महशूर है। इस जिले का भटगांव विधानसभा का चुनावी इतिहास काफी लंबा तो नहीं है, लेकिन सरगुजा संभाग के 14 विधानसभा की अपनी एक अलग पहचान है। इस सीट पर अब तक चार बार विधानसभा चुनाव हो चुके हैं।

जिसमें तत्कालीन विधायक स्वर्गीय रविशंकर त्रिपाठी की सड़क हादसे में हुई। मृत्यु के उपरांत एक बार का उपचुनाव भी शामिल है। यहां हुए चार बार के चुनाव में दो बार बीजेपी को, तो वहीं दो बार कांग्रेस को जीत मिली है। मध्यप्रदेश की सरहद इलाके को छूने वाले इस विधानसभा में पिछले दो चुनाव में क्षेत्र की जनता ने लगातार दो बार बाहरी प्रत्याशी को हार का स्वाद चखाया है। वहीं स्थानीय उम्मीदवार पर मतदाताओं ने भरोसा जताते हुए विधानसभा तक पहुंचाया है। ऐसे में इस विधानसभा का चुनावी इतिहास बहुत ही ख़ास अपने आप में बयां करता है।

विदित है कि विभाजित सरगुजा जिले के समय वर्ष 2008 में परिसीमन के पश्चात पिलखा और पाल विधानसभा से टूटकर भटगांव, प्रतापपुर और रामानुजगंज विधानसभा बना था। जो वर्ष 2012 में नवीन जिला सूरजपुर बनने के पश्चात भटगांव विधानसभा सूरजपुर का हिस्सा बना। अविभाजित सरगुजा जिला के समय वर्ष 2008 में पहली बार भटगांव विधानसभा सीट के लिए चुनाव हुआ। जिसमें जिले की इस सामान्य सीट पर हुए पहले चुनाव में जमकर घमासान देखने को मिला।

कांग्रेस और भाजपा दोनों ही दलों के दर्जन भर दावेदारो के द्वारा निर्दलीय पर्चा दाखिल कर चुनावी मैदान में उतरकर जीतने हेतु एड़ी-चोटी लगा दी गई थी। उस समय इस चुनाव में कांग्रेस और भाजपा समेत कुल 29 उम्मीदवार मैदान में थे। लेकिन बीजेपी को छोड़कर सभी 28 उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई थी। इसमें मुख्य रूप से प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के उम्मीदवार श्यामलाल जायसवाल भी शामिल थे। वर्ष 2008 के चुनावी नतीजों पर अगर नजर डालें तो इस चुनाव में भाजपा के रविशंकर त्रिपाठी 17 हजार 433 वोट से विजयी हुए थे। इस जीत के साथ रविशंकर त्रिपाठी पहली बार विधायक चुने गए। इस सीट पर पहले चुनाव में भाजपा ने यहां से खाता खोला था। करीब पौने दो साल कार्यकाल पूरा करने के बाद भटगांव विधानसभा से विधायक रविशंकर त्रिपाठी की अप्रैल 2010 में रायगढ़ जिले के घरघोडा के पास सड़क हादसे में मौत हो गई थी। इस घटना के बाद इस विधानसभा सीट के लिए पुन: उपचुनाव की घोषणा हुई। अक्टूबर 2010 में इस सीट पर हुए उपचुनाव में बीजेपी ने दिवंगत विधायक रविशंकर त्रिपाठी की धर्मपत्नी रजनी रविशंकर त्रिपाठी को अपना उम्मीदवार घोषित किया।

इस सीट पर तीसरा चुनाव वर्ष 2013 में सम्पन्न हुआ। इस दौरान कांग्रेस ने राजनैतिक समीकरण के साथ स्थानीय उम्मीदवार पारसनाथ राजवाड़े पर दांव खेला। वहीं भाजपा ने सिटिंग विधायक रजनी रविशंकर त्रिपाठी को फिर से अपना उम्मीदवार घोषित किया। किंतु इस बार भाजपा का दांव कुछ उल्टा हो गया। क्षेत्र की जनता ने स्थानीय उम्मीदवार के प्रति अपना झुकाव दिखाया। लिहाजा वर्ष 2013 के चुनाव में कांग्रेस के पारसनाथ राजवाड़े पर मतदाताओं ने अपना भरोसा जताया।

2013 के इस चुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवार पारसनाथ राजवाड़े ने अपने प्रतिद्वंदी भाजपा की उम्मीदवार रजनी रविशंकर त्रिपाठी को 7368 वोट से पराजित कर यह सीट अपने नाम की। इस सीट पर कांग्रेस पहली बार अपना खाता खोलने में सफल रही। वहीं गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के प्रत्याशी 8163 वोट के साथ तीसरे स्थान और बसपा के प्रत्याशी नरेंद्र कुमार साहू को 5496 वोट के साथ चौथे स्थान पर रहे। बीते तीन चुनाव में दो बार भाजपा और एक बार कांग्रेस की जीत के बाद 2018 के चुनाव में पुन: कांग्रेस ने भाजपा को पराजित कर यह सीट अपने नाम करने में सफल रही। दूसरी जीत दर्ज कर कांग्रेस ने भाजपा से बराबरी की। वर्ष 2018 के चुनाव में कांग्रेस ने मौजूदा विधायक पारसनाथ राजवाड़े पर फिर दांव खेला था। वहीं भाजपा ने एक बार फिर रजनी रविशंकर त्रिपाठी पर भरोसा किया। इस बार भी बाहरी और स्थानीय उम्मीदवार की आंधी में भाजपा को हार का सामना करना पड़ा। साथ ही इस बार कांग्रेस के वोट शेयर में इजाफा हुआ। इस चुनाव में भाजपा की निकटतम प्रतिद्वंद्वी रजनी रविशंकर त्रिपाठी को पारसनाथ राजवाड़े ने 15 हजार 734 वोट से पराजित किया। वहीं वोट की बात करें तो कांग्रेस के पारसनाथ राजवाड़े को कुल 74 हजार 623 वोट मिले। तो वहीं भाजपा की रजनी रविशंकर त्रिपाठी को कुल 58 हजार 889 वोट मिले। जबकि 2108 के इस विधानसभा चुनाव में सामान्य सीट भटगांव में मुख्य प्रतिद्वंद्वी भाजपा-कांग्रेस के अलावा 21 उम्मीदवार चुनाव मैदान में थे।

2024 में भाजपा का मुकाबला कैसे करेगा विपक्ष

अंकित सिंह

पिछले तीन-चार महीने से देखें तो देश की राजनीति दिलचस्प रही है। ऐसा लगा कि भाजपा के खिलाफ विपक्षी दल पूरी तरीके से एकजुट हो रहे हैं और यह भगवा पार्टी के लिए पूरी तरीके से खतरे की घंटी है। 26 से ज्यादा दलों ने भाजपा के खिलाफ इंडिया गठबंधन बनाया है। इन दलों का दावा है कि वह लोकतंत्र की रक्षा करने और भाजपा को हराने के लिए मिलकर चुनाव लड़ेंगे। पिछले महीने जब उत्तर प्रदेश के घोसी में उपचुनाव हुए थे तब कहा गया था कि इंडिया गठबंधन की यह पहली परीक्षा है। उस परीक्षा में समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार की जीत हुई थी और कांग्रेस सहित सभी छोटे दलों ने सपा का समर्थन किया था। इंडिया गठबंधन बनने के बाद इस बात की संभावना जताई जा रही थी कि साल के आखिर में जिन पांच राज्यों में विधानसभा के चुनाव होने हैं, वहां भी सभी विपक्षी दल मिलकर एक साथ भाजपा के खिलाफ चुनाव लड़ेंगे। मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम में चुनाव होने हैं। राजस्थान और तेलंगाना को छोड़ दें तो बाकी राज्यों के लिए मतदान की तारीख में 1 महीने से भी काम का समय बचा है। हालांकि, किसी भी राज्य में विपक्ष एकजुट होकर लड़ता दिखाई नहीं दे रहा है। पूरा का पूरा फोकस अगर राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश पर करें जहां भाजपा मजबूत है, वहां भी विपक्षी एकजुटता दिखाई नहीं दे रही है। हालांकि, इन राज्यों के विधानसभा चुनाव को लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी गठबंधन के लिए लिटमस टेस्ट माना जा रहा था। लेकिन ऐसा लग रहा है कि विपक्षी दल की पर्टियां राज्यों में गठबंधन से कतरा रही हैं। अलग-अलग दलों के नेताओं की ओर से इन राज्यों में साफ तौर पर कहा जा रहा है कि हमारा गठबंधन लोकसभा चुनाव के लिए हुआ है। ऐसे में सवाल यह है कि कि बिना सेमीफाइनल मैच खेले इंडिया गठबंधन सीधे फाइनल मुकाबले में भाजपा को कितनी चुनौती दे पाएगा। मध्य प्रदेश में देखा जाए तो कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच बातचीत शुरू हुई थी। हालांकि किसी नतीजे पर पहुंचने से पहले ही यह खत्म हो चुकी है। दोनों राजनीतिक दलों ने अपने-अपने रास्ते अलग कर लिए हैं। इसके बाद दोनों ओर से शब्द बाण भी एक-दूसरे के खिलाफ चलाए जा रहे हैं। दावा किया जा रहा है कि सपा-कांग्रेस गठबंधन पर ब्रेक लगने से अखिलेश यादव नाराज है। उन्होंने यह तक कह दिया है कि मध्य प्रदेश में अगर यह गठबंधन नहीं हुआ तो भविष्य में प्रदेश स्तर पर गठबंधन नहीं होगा। कमलनाथ ने कहा कि विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' का ध्यान लोकसभा चुनाव पर है और अगर यह गठबंधन मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में होता है तो अच्छा होता। राजस्थान में भी इंडिया गठबंधन की कोई बात नहीं हो रही है। कांग्रेस वहां भी अकेले अपने दम पर चुनाव लड़ने की तैयारी में है। आम आदमी पार्टी भी राजस्थान में कई सीटों पर अपनी उम्मीदवार उतार रही है। राजस्थान में देखें तो अभी कांग्रेस और आरएलडी का गठबंधन है। जयंत चौधरी कांग्रेस से राजस्थान में अधिक सीटों की डिमांड कर रहे हैं। यही कारण है कि आरएलडी की ओर से साफ तौर पर कहा जा रहा है कि कांग्रेस को बड़ा दल दिखाना होगा। छत्तीसगढ़ में भी किसी तरीके का गठबंधन दिखाई नहीं दे रहा है। वहां भी आम आदमी पार्टी अपनी उम्मीदवार उतार रही है। इससे कांग्रेस की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। यही कारण है कि कांग्रेस की ओर से आम आदमी पार्टी को भाजपा की भी टीम बताया जा रहा है। फिर सवाल यह उठ रहा है कि अगर आम आदमी पार्टी भाजपा की बी टीम है तो फिर उसे इंडिया गठबंधन में क्यों रखा गया है। बघेल ने आम आदमी पार्टी (आप) पर छत्तीसगढ़ में बी टीम के रूप में काम करने और राज्य में सत्ताधारी दल में सेंध लगाने की कोशिश करने का आरोप लगाया। कुल मिलाकर देखें तो विपक्षी दलों ने गठबंधन बनाने को लेकर जितनी जल्दी कवायद की, अब वह उस रफ्तार से बढ़ता दिखाई नहीं दे रहा है।

महिलाओं को रेवड़ियां बांट रही पार्टियां

समीर चौगांवकर

नये संसद भवन में नारी शक्ति वंदन विधेयक पर बोलते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा था कि %यह सपना अधूरा था जिसे पूरा करने के लिए ईश्वर ने मुझे चुना।% इस विधेयक के कानून बनने के बाद इस बात की उम्मीद की जा रही थी कि नवंबर में होने वाले मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम के विधानसभा चुनाव में बीजेपी महिला उम्मीदवारों की संख्या 33 प्रतिशत के आसपास रख सकती है। ऐसा करके वह यह संदेश दे सकती है कि महिला आरक्षण कानून भले ही 2029 में लागू हो, भाजपा ने उसे 2023 के विधानसभा चुनावों से ही लागू करने का तय कर लिया है। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। भाजपा अभी तक मध्य प्रदेश की 230 सीटों में से 136 सीटों पर उम्मीदवार घोषित कर चुकी है जिसमें मात्र 17 महिलाओं को ही टिकट दिया गया है। राजस्थान में 41 उम्मीदवारों की पहली सूची में मात्र 4 महिलाओं को टिकट दिया गया है। छत्तीसगढ़ में दूसरी सूची के बाद कुल 14 महिला उम्मीदवार मैदान में है। छत्तीसगढ़ में सिर्फ 5 सीटों पर उम्मीदवारों के नाम घोषित होना बाकी है।

टिकट बंटवारे में भाजपा ने भले ही महिलाओं को 33 प्रतिशत हिस्सा न दिया हो लेकिन मध्य प्रदेश में भाजपा इस बार महिला वोटरों को केन्द्र में रखकर चुनाव लड़ने की रणनीति पर काम कर रही है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सिर्फ पिछले चार महीनों में ही महिलाओं के लिए 21 हजार करोड़ से अधिक की घोषणाएं की हैं। इस मामले में मुख्यमंत्री रहे और फिर से मुख्यमंत्री बनने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे कांग्रेस के नेता कमलनाथ ने भी महिलाओ के लिए 30 हजार करोड़ के वादे कर डाले हैं। इन वादों को देखे तो यह सरकार की कुल कमाई के 30 प्रतिशत के आसपास बैठता है। भारतीय जनता पार्टी ने तय किया है कि वह मध्य प्रदेश में शिवराज सरकार और मोदी के किए गए कामों को लेकर महिला मतदाताओं के बीच जाएगी। भाजपा महिलाओं को यह बताना चाहती है कि डबल इंजन की सरकार होने का मतलब महिलाओं को डबल बोनस। मोदी के रक्षा बंधन के दिन गैस सिलेडर में 200 रूपये की कटौती और 2016 में शुरू की गई उज्वला योजना को 75 लाख घरों तक बढ़ाने के साथ ही महिलाओं के लिए स्वच्छ जल मिशन, सुकन्या समुद्धि योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएं महिलाओं को समर्पित हैं।

मध्य प्रदेश की तरह राजस्थान में भी महिला मतदाताओं का दबदबा लगातार बढ़ रहा है। पिछले चार विधानसभा चुनावों में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरूषों के मुकाबले लगभग दो गुना तेजी से बढ़ा है। 2018 के चुनाव में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरूषों के लगभग बराबर पहुंच गया है। ऐसे में आधी आबादी पर राजनीतिक दलों का फोकस भी पूरा है। अशोक गहलोत सरकार ने चुनावी साल में अपनी तीन बड़ी योजनाएं महिलाओं पर ही केन्द्रित रखी। बचत-राहत-बढ़त और स्मार्ट फोन वितरण। यही नहीं, सरकारी योजनाओं के प्रचार पोस्टरों का रंग भी महिलाओं की पसंद को ध्यान में रखते हुए गुलाबी रखा गया है। इससे पहले वसुंधरा सरकार ने भी आधी आबादी के लिए भामाशाह योजना, पंचायत राज में 50 प्रतिशत आरक्षण जैसे बड़े कदम उठाए थे। राजस्थान के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2013 के मुकाबले 2018 में पुरूष वोटिंग 4.85 प्रतिशत व महिला वोटिंग 10.46 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ी है। लोकतंत्र के उत्सव में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने का ही नतीजा है कि इस बार विधानसभा चुनावों में महिलाएं सियासी दलों के केन्द्र में है। हालांकि मतदान में महिलाओं की भागीदारी भले ही लगातार बढ़ रही हो लेकिन पार्टी में पद, चुनाव में टिकट और उसके बाद मंत्रिमंडल में उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है।

छत्तीसगढ़ में भी भूपेश बघेल सरकार ने महिलाओं को ध्यान में रखते हुए महिला कोष ऋण योजना में महिलाओं को ऋण देने की सीमा चार लाख से बढ़ाकर छह लाख कर दी है। इसके अलावा भूपेश बघेल ने कौशल्या मातृत्व योजना के अंतर्गत दूसरी बेटी के जन्म होने पर महिलाओं को 5 हजार की सहायता राशि दिए जाने का प्रावधान किया है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल महिला वोटर्स पर फोकस इसलिए भी कर रहे हैं क्योकि छत्तीसगढ़ गठन के बाद पहली बार महिला मतदाताओं की संख्या पुरूष मतदाताओं से ज्यादा हो गई है। राज्य निर्वाचन आयोग के जारी किए गए आंकड़ों में बताया गया है कि छत्तीसगढ़ प्रदेश के कुल 33 जिलों मे से 18 में महिला मतदाताओं की संख्या पुरूषों से अधिक हो गई है। तेलंगाना के मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव भी महिलाओं को लुभाने में पीछे नहीं रहना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने अपने राज्य तेलंगाना में कल्याण लक्ष्मी और शादी मुबारक योजनाएं लागू की है। इसके अंतर्गत दुल्हनों को शादी के समय एक लाख रूपये की एक बार वित्तीय सहायता दी जाती है। कांग्रेस ने तेलंगाना में सरकार आने पर महालक्ष्मी गारंटी योजना के तहत बेटियों को एक लाख रूपये और एक तोला सोना देने का वादा किया है।

टिकट बंटवारे में भले ही 33 प्रतिशत हिस्सेदारी देने की बाध्यता 2029 में आये लेकिन उससे पहले ताजा विधानसभा चुनावें में सभी राजनीतिक दल महिलाओं को ध्यान में रखकर योजनाएं बना रहे हैं और सत्ता में आने पर महिलाओं के लिए नई योजनाए लागू करने का वादा कर रहे हैं। महिला आरक्षण विधेयक को संसद से पारित करवाने वाली बीजेपी यह बताना चाहती है कि मोदी के कारण महिलाओं को जीवनयापन में आसानी तथा आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी विधानसभा चुनाव में इस बात को फोकस में रखना चाहती है कि मोदी की योजनाओं की सबसे बड़ी लाभार्थी महिलाएं रही हैं और मोदी सरकार ने साढ़े नौ साल के कार्यकाल में नारी शक्ति पर विशेष ध्यान दिया है इसलिए यह बात अधिक से अधिक महिला वोटरों तक पहुंचाई जाए।

असल में बीजेपी महिला आरक्षण के असर को इस चुनाव में महिला वोटर्स के माध्यम से देखना चाहती है। यदि महिलाएं भाजपा के पक्ष में एकतरफा वोटिग करती है तो तय है मोदी और भाजपा की राज्य सरकारें 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए महिलाओं के लिए और नई योजनाएं लाकर आधी आबादी के वोट को सुनिश्चित करने की कोशिश करेगी। कांग्रेस महिला वोटरों को साधने के साथ साथ ओबीसी आरक्षण की मांग और जातिगत सर्वेक्षण कराने का वादा करके भाजपा के वोट बैक में सेंध लगाने की कोशिश में है। महिला वोटर्स ओबीसी के नाम पर बंटती है या एकमुश्त वोट करती हैं यह चुनाव परिणाम के बाद पता चलेगा लेकिन एक बात तय है कि यह पहला विधानसभा चुनाव है जिसे महिलाओं को केन्द्र में रखकर लड़ा जा रहा है। महिला वोटर्स के लिए सभी दल पूरी ताकत झोंक रहे है। भाजपा हो या विपक्षी दल सभी महिला मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए हर संभव कदम उठा रहे हैं। लेकिन महिलाओं को टिकट देने में राजनैतिक दलों की हिचक अभी भी स्पष्ट दिख रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा....

महोपनिषद् (भाग-19)

गतांक से आगे...

यह वह है, मैं यह हूँ, वे समस्त पदार्थ मेरे हैं, यह भावना ही मन है। इन्हीं भावनाओं के त्याग से मन को (काटने के उपकरण द्वारा काटने की तरह) विनष्ट किया जा सकता है। जैसे शरत-काल के आकाश में छिन्न-भिन्न हुए बादलों के समूह वायु की ठोकरों से विलीन हो जाते हैं, वैसे ही सद्विचारों के द्वारा ही मन अन्तर्हित हो जाता है। चाहे प्रलयंकारी उनचासों पवन एक साथ प्रवाहित हों अथवा सभी सागर एक साथ सम्मिलित होकर एकार्णवरूप हो जायें। चाहे द्वादश आदित्य भी एक साथ मिलकर क्यों न तपने लगे; किन्तु फिर भी मन से विहीन मनुष्य को किसी प्रकार की क्षति नहीं हो सकती। केवल संकल्पहीनता रूपी एक साध्य ही सम्पूर्ण सिद्धियों की प्राप्ति का साधन है अत: तत्पद का आश्रय ग्रहण करके संकल्पहीनता के विस्तृत साम्राज्य में प्रतिष्ठित हो जाओ।

अचञ्चल मन कहीं पर नहीं दीखता, चञ्चलता मन का सहज धर्म है, जैसे अग्नि का सहज धर्म गर्मी प्रदान करना है। यही चञ्चल स्वभाव वाली स्पन्दन शक्ति चित्त का स्वाभाविक धर्म है। इसी मानसिक शक्ति को सांसारिक प्रपञ्च का सहजस्वरूप जानना चाहिए। जो मन अचञ्चल हो जाता है, वही अमृतस्वरूप कहा जाता है, वही तप है। उसे ही शास्त्रीय सिद्धान्त की दृष्टि से मोक्ष कहते हैं। मन की चञ्चलता ही अविद्या है और वासना उसका स्वरूप है। शत्रुरूपी वासना को सद्विचारों के द्वारा काट देना चाहिए।

हे निष्पाप मुने! मन को पुरुषार्थ के द्वारा जिस उद्देश्य में स्थिर करो, उसे प्राप्त करके निर्विकल्प समाधि को अर्जित करो। अतएव प्रयासपूर्वक चित्त को चित्त से वशीभूत करके शोकरहित अवस्था के आश्रय से, आतंक से दूर रहकर शान्ति प्राप्त करो। विषय विकारों से रहित मन ही मन का पूर्णरूपेण निरोध करने में समर्थ हो सकता है। किसी राजा को पराजित करने में कोई राजा ही समर्थ होता है। जो तृष्णारूपी ग्राह के द्वारा ग्रसित किये जा चुके हैं, जो संसार-सागर में गिरकर भँवरों के जाल में फँसकर अपने लक्ष्य से दूर भटक गये हैं, उन्हें बचाने के लिए विषय विकारों से रहित मन ही समर्थ है, वही नौका का रूप धारण करके पार लगा सकता है। हे मुने! इस प्रकार के विकार रहित मन के द्वारा इस विशाल बन्धनरूपी जाल को विनष्ट कर दो। स्वयमेव संसार सागर से पार हो जाओ। अन्य और किसी के द्वारा यह संसार रूप सागर नहीं पार किया जा सकता। जब-जब अन्त:करण को आच्छादित करने वाली मनरूपी वासना का प्राकट्य हो, तब-तब उसका परित्याग करना ज्ञानी मनुष्य का परम कर्तव्य हो जाता है, क्योंकि ऐसा करने से अविद्या का विनाश हो जाता है। सर्वप्रथम भोगरूपी वासना का त्याग करो, फिर भेदरूपी वासना का त्याग करो, उसके पश्चात् भाव अभाव दोनों का ही त्याग करके निर्विकल्प होकर पूर्ण सुखी हो जाओ।

क्रमश: ...

ऑटो चलाकर दिया बेसहारा बच्चों को सहारा

मुरुगन एस

हर सुबह, जब मैं अपना ऑटो रिक्शा लेकर शहर की सड़कों पर निकलता हूँ, तब मेरी आँखें केवल सवारियों को ही नहीं ढूँढ़ती, बल्कि वे ती हैं उन बच्चों को, जिनके नन्हें हाथ किसी के आगे भीख माँगने के लिए फैले होते हैं। अगर मुझे कोई ऐसा बच्चा दिखता है, तो मैं उसकी तस्वीर खींचता हूँ और तस्वीर के सहारे नजदीकी पुलिस थाने में जाकर इसकी शिकायत करता हूँ। बेसहारा बच्चों के लिए काम करने का जब मैंने निर्णय लिया था, उस वक्त मैं सिर्फ 16 साल का था। मेरे लिए यह फैसला बहुत आसान नहीं था, क्योंकि मैं शारीरिक रूप से उतना मजबूत नहीं हुआ था और आय का तो कोई निश्चित जरिया था ही नहीं, जो मेरे प्रयासों को सुविधाजनक बना सके। मैंने सरकार या जनता से किसी तरह की मदद भी नहीं चाही थी। फिर भी पिछले 18 वर्षों में मैंने सिलाई करने से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी नौकरियाँ की और अपना संघर्ष जारी रखा है।

तमिलनाडु के चेंगोता जिले में रहने वाले मेरे माँ-बाप काम के सिलसिले में केरल आ गए थे। मेरी पैदाइश यहीं हुई। मेरा बचपन एक झुग्गी बस्ती में गुजर रहा था। शायद मैं भी उस वक्त सड़कों पर भीख माँग रहा था, तभी तो मेरे मुँह बोले भाई ने मुझे वहाँ से निकालकर एक बेहतर जिंदगी दी। वह एक प्रख्यात समाज सेवक है। उन्होंने मेरे जैसे तमाम बच्चों की उँगली थामकर उन्हें स्नेहभवन में पाला-पोसा है। वही अनाथालय वर्षों तक मेरा घर रहा। मुक्त विद्यालय से इंटर तक की पढ़ाई करने के बाद जब मेरे हाथ थोड़े मजबूत हो गए, तब मैं स्नेहभवन से निकलकर कोच्चि आ गया। चूँकि मैं खुद अनाथालय में पला-बढ़ा हूँ, इसलिए मेरे दिल की धड़कने मेरे जैसे बच्चों के लिए हमेशा धड़कती रहती हैं।

यही वजह थी कि मैं कोच्चि में एक चाइल्ड लाइन से जुड़ गया। यहाँ आकर मुझे बेघर बच्चों की कई और दर्द भरी कहानी सुनने को मिली। अखबार बेचने जैसे काम करने के बाद आज मैं कोच्चि की सड़कों पर ऑटोरिक्शा चलाता हूँ। सड़कों पर घूमने वाले बिना किसी पहचान के बेघर, अनाथ बच्चों की जिंदगी सँवारने के एकमात्र उद्देश्य से वर्ष 2007 में मैंने अपनी संस्था थेरुवोरम की स्थापना की थी। मेरे काम में मेरी पत्नी ने मेरा पूरा साथ दिया है, जो एमबीए डिग्री धारक है। उसने अपनी अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर नेक इरादों के साथ मेरा हाथ थामकर मेरी जीवन संगिनी बनने का फैसला किया था।

दया व करुणा की मूर्ति मदर टेरेसा मेरी प्रेरणा और आदर्श हैं। पिछले अट्ठारह वर्षों से मैं अब तक राज्य और शहर के अलग-अलग कोने से कई हजार बच्चों को उनकी पुरानी जिंदगी से निकालकर एक बेहतर जीवन देने की कोशिश कर रहा हूँ। दुनिया में ऐसे अनेक लोग हैं, जो गरीबी खत्म करने के लिए पर्याप्त समृद्ध हैं, लेकिन कम ही लोग इस दिशा में कुछ सोचते हैं। मैं मानता हूँ कि अगर किसी अच्छे काम के लिए अपने धन का इस्तेमाल ही न किया जाए, तो धन प्राप्त करने का क्या मतलब हैं? मेरा लक्ष्य बेसहारा बच्चों को न सिर्फ एक आश्रय प्रदान करना है, बल्कि मैं समाज में बदलाव लाने की भी ख्वाहिश रखता हूँ, और जब तक मैं इसे प्राप्त नहीं करूँगा, तब तक नहीं रुकूँगा।

हमास के हमले के बाद क्यों याद आये यासिर अराफात?

आनंद पांडे

हमास ने भले ही इजरायल पर हमले करके उसे लहूलुहान कर दिया है और इस पर अपनी पीठ थपथपा रहा हो परन्तु दुनियाभर में ऐसे लोगों की तादात बहुत अधिक है जो आज भी यह मानते हैं कि हिंसा के जरिए फ़लस्तीन कभी-भी इजरायल से नहीं जीत सकता है। जब से फ़लस्तीन में यहूदी अपने राष्ट्र की स्थापना के उद्देश्य से आकर बसना शुरू हुए तब से हिंसा और युद्ध से उनका मुकाबला किया जा रहा है और इजरायल कामयाब होता जा रहा है और फ़लस्तीन धूल में मिलता जा रहा है। हिंसा का समीकरण अब तक हमेशा इजरायल के पक्ष में ही बैठता रहा है। वह हिंसा का जवाब और अधिक हिंसा से देता है। हिंसा का रास्ता फ़लस्तीन को कहीं नहीं ले जा सकता, ऐसा लोग आज नहीं महसूस कर रहे हैं बल्कि फ़लस्तीन के नेता रहे यासिर अराफ़ात भी अपने जीवन के आखिरी दो दशकों में महसूस करने लगे थे। जीवन भर एक गुरिल्ला योद्धा के रुप में वे फ़लस्तीन के लिए लड़ते रहे और अंत में उन्होंने हिंसा की निरर्थकता समझ ली थी। उन्होंने अपने समय में इजरायल से शांति समझौते किये और शांति बहाली की कोशिश रंग भी लायी। हमास के उग्र युद्धोन्मादग्रस्त संगठन के उदय ने उन्हें किनारे लगा दिया और अराफ़ात के तमाम प्रयास धूल में मिल गए। पर युद्ध के इस माहौल में लोग फिर से उन्हें याद कर रहे हैं। और ऐसे मार्ग के बारे में सोच रहे हैं जो फ़लस्तीन को उसका वाजिब हक दिला सके। इसलिए आइए जानते हैं कि कौन थे यासिर अराफ़ात, कैसी थी उनकी ज़िंदगी और क्या था फ़लस्तीन-इजरायल संकट के समाधान का उनका सूत्र?

अराफ़ात का जन्म 1929 में कायरो, मिस्र में तब हुआ था जब उनकी मातृभूमि फ़लस्तीन पर एक नए

यहूदी राष्ट्र की स्थापना का कुचक्र शुरू हो चुका था। उनके पिता फ़लस्तीन से जाकर कायरो में बस गए थे। कुछ समय को छोड़कर अराफ़ात के बचपन से लेकर जवानी के दिन ज्यादातर कायरो में ही बीते। उनके कायरो यूनिवर्सिटी में पढ़ने के दौरान ही इजरायल की स्थापना की कोशिश और उसके अरब विरोधियों के बीच संघर्ष तेज हो चुका था। इजरायल के विरोध में एक अरब राष्ट्रवाद की विचारधारा ने अराफात के भी जुझारू और कल्पनाशील दिमाग में लहरें उठानी शुरू कर दी थीं। वे कायरो के फ़लस्तीन समर्थक स्टूडेंट्स आंदोलन में शामिल हो गए। 19 वर्ष की कच्ची अवस्था में वे पक्के अरब राष्ट्रवादी बन चुके थे। अरब राष्ट्रवाद की झंडाबरदार और यहूदी राष्ट्रवाद की प्रचंड विरोधी मुस्लिम ब्रदरहुड के साथ मिलकर 1948 के अरब-इजरायल युद्ध में एक लड़ाके के रूप में शामिल हुए। नवजात इजरायल के हाथों अरब देश एक साथ परास्त हुए तो अराफ़ात निराश होकर एक बार फिर कायरो यूनिवर्सिटी में पढ़ाई करने लगे। 1952 से 1956 के दौर में वे कायरो स्थित जनरल यूनियन ऑफ फलस्तीनी स्टूडेंट्स के अध्यक्ष रहे।

कुवैत में इंजीनियर की नौकरी और अपनी कम्पनी खोलकर जीविकोपार्जन किया। पर इसी दौरान उन्होंने अपने दोस्तों के साथ मिलकर अल फ़तह नाम से एक संगठन बनाया जिसका उद्देश्य था फिलिस्तीन की धरती से यहूदियों की विदाई। 1964 में जब पैलेस्टाइन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन बना तो वे कुवैत से आकर इससे जुड़ गए। अरब लीग के सौजन्य से बना यह ऐसा संगठन था जो फ़लस्तीन की आज़ादी के लिए समर्पित सभी संगठनों का साझा मंच था। 1967 में अरब देशों और इजरायल के बीच छह दिवसीय युद्ध के बाद एक तरफ इजरायल और सशक्त हुआ और अरबों की एकता छिन्न-भिन्न होने लगी वहीं दूसरी तरफ पीएलओ के एक घटक दल के रूप में अल फ़तह सबसे बड़े मंच के रूप में उभरा। जब अल फ़तह उभरा तो उसके संस्थापक नेता के नाते यासर अराफ़ात भी फ़लस्तीन के सर्वोच्च नेता और वैश्विक चेहरे के रूप में उभर कर सामने आए।

1969 में अराफ़ात पैलेस्टाइन लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन के अध्यक्ष बन गए और जीवन के अंत तक बने रहे। जॉर्डन मुख्यालय के दौरान इस संगठन को अराफ़ात ने एक राज्य के भीतर राज्य बना दिया था। इसकी एक गुरिल्ला फौज थी। इससे तंग आकर जॉर्डन के राजा ने इसे बाहर निकाल दिया। अब लेबनान इसका मुख्यालय बना लेकिन लेबनान पर इजरायल के हमले ने इसे ट्यूनीशिया शिफ्ट करने के लिए मजबूर किया। इस बीच अराफ़ात एक बार प्लेन क्रैश और एक बार हत्या की योजना से बाल-बाल बच निकले। जिंदगी अब अराफ़ात के लिए शह और मात का खेल बन चुकी थी। भूमिगत होकर रहना और देश-विदेश में लगातार गोपनीय यात्राएँ करना यही उनका जीवन था। इसी दौर में उन्होंने अपनी से आधी उम्र की सुहा तवील से शादी की। 1983 से 1993 तक वे ट्यूनीशिया में रहकर फ़लस्तीन की लड़ाई लड़ते रहे। पर यही वह दौर भी है जब वे हिंसा की क्षमता पर संदेह करने लगे और शांतिपूर्ण समाधान के बारे में गंभीरता से सोचना शुरू किया। जो अराफ़ात बंदूक की ताकत से इजरायल को नेस्तोनाबूद करने के लिए चालीस साल से लड़ रहे थे वे ही अब शांति का पथिक बनने को तैयार हो गये।

इसके लिए जरूरी था कि वे इजरायल के अस्तित्व को वैधता दें और फिर फ़लस्तीन के लिए समझौता करें। 1988 में उन्होंने अपने एक शत्रु राष्ट्र के वजूद को स्वीकार किया और उसकी तरफ दो राष्ट्र के सिद्धांत के आधार पर बात करने की मंशा जाहिर की। इसके काफी पहले 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि वे एक हाथ में जैतून की डाल लिए हुए हैं दूसरे हाथ में एक स्वतंत्रता सेनानी की पिस्तौल लिए हुए हैं। यानी एक हाथ में शांति का प्रतीक दूसरे में हिंसा का। 1988 तक आते आते उन्होंने दोनों हाथों में जैतून की डालें पकड़ने का संकल्प ले लिया। मां के मरने के बाद वे अपने ननिहाल येरुशलम में कुछ साल रहे। इस दौर के बचपन की एक घटना उनके दिमाग में हमेशा रही कि उनके ननिहाल के घर में ब्रिटिश फौज ने आधी रात को घुसकर मारपीट की थी, फर्नीचर तोड़ डाले थे। इस समय से लेकर चार दशकों तक उनका जीवन हिंसा और प्रतिहिंसा के सबसे रक्तरंजित अनुभवों से भरा था फिर भी उन्हें हिंसा में रास्ता दिखना बन्द हो रहा था। 1988 में जेनेवा में संयुक्त राष्ट्र संघ की एक सभा में पीएलओ की नीति पलट की घोषणा की और कहा कि वे हिंसा और आतंकवाद रास्ता छोड़ रहे हैं और मध्यपूर्व के सभी राज्यों (इजरायल समेत) के हक़, सुरक्षा का समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी राष्ट्रों का शांतिपूर्ण सहअस्तित्व चाहते हैं। इजरायल सरकार ने अराफ़ात के साथ बात की और 1993 में ऐतिहासिक ओस्लो समझौता (प्रथम) हुआ। जिसके तहत पीएलओ को इजरायल ने फ़लस्तीन का वैध प्रतिनिधि माना, 1994 में पैलेस्टिनीयन नेशनल अथॉरिटी बनी जिसे फ़लस्तीन को रामल्ला में मुख्यालय बनाकर फ़लस्तीन का शासन चलाने का हक मिला।

हिन्द स्वराज्य

सत्याग्रह-आत्मबल (भाग-10)

गतांक से आगे...

जमीन- जायदाद का, झूठी इज्जत का, सगे-सम्बन्धियों का, राज-दरबार का, शरीर को पहुँचने वाली चोटों का और मरण का अभय हो, तभी सत्याग्रह का पालन हो सकता है। यह सब करना मुश्किल है, ऐसा मानकर इसे छोड़ नहीं देना चाहिए। जो सिरपर पड़ता है उसे सह लेने की शक्ति कुदरत ने हर मनुष्य को दी है। जिसे देश-सेवा न करनी हो उसे भी ऐसे गुणों का सेवन करना चाहिए। इसके सिवा, हम यह भी समझ सकते हैं कि जिसे हथियारवल पाना होगा, उसे भी इन बातों की जरूरत रहेगी। रणवीर होना कोई ऐसी बात नहीं कि किसीने इच्छा की और तुरन्त रणवीर हो गया। योद्धा (लड़वैया) को ब्रह्मचर्य का पालन करना होगा, भिखारी बनना होगा। रणमें जिसके भीतर अभय न हो वह लड़ नहीं सकता। उसे (योद्धा को सत्यव्रत का पालन करने की उतनी जरूरत नहीं है, ऐसा शायद किसी को लगे। लेकिन जहाँ अभय है वहाँ सत्य कुदरती तौर पर रहता ही है। मनुष्य जब सत्य को छोड़ता है तब किसी तरह के भय के कारण ही छोड़ता है। इसलिए इन चार गुणों से डर जाने का कोई कारण नहीं है। फिर, तलवारबाज को और भी कुछ बेकार कोशिशें करनी पड़ती हैं, जो सत्याग्रही को नहीं करनी पड़तीं। तलवारबाज को जो दूसरी कोशिशें करनी पड़ती हैं, उसका कारण भय है। अगर उसमें पूरी निडरता आ जाय, तो उसी पल उसके हाथ से तलवार गिर जायेगी। फिर उसे तलवार के सहारे की जरूरत नहीं रहती। जिसे किसी से दुश्मनी नहीं है, उसे तलवार की जरूरत ही नहीं है। सिंह के सामने आने वाले एक आदमी के हाथ की लाठी अपने-आप उठ गयी। उसने देखा कि अभय का पाठ उसने सिर्फ जबानी ही किया था। उस दिन उसने लाठी छोड़ी और वह निर्भय-निडर बना।

तेलंगाना में क्यों मुश्किल में है केसीआर की हैट्रिक!

आशीष तिवारी

अगले कुछ दिनों में होने वाले तेलंगाना के चुनाव में क्या केसीआर की हैट्रिक लगेगी या इस बार सियासत का ऊंट किसी और करवट बैठेगा। सियासी विश्लेषकों की मानें तो केसीआर के लिए 2023 में होने वाला चुनाव बीते दो चुनावों की तुलना में सबसे चुनौती भरा होने वाला है। इसके पीछे सियासी जानकारों के अपने कई तर्क हैं। इसमें कांग्रेस पार्टी की आक्रामक रणनीति और हिमाचल समेत कर्नाटक में जीते हुए चुनाव के आधार पर तैयार किया गया सियासी रोड मैप है। वहीं भारतीय जनता पार्टी का हिंदुत्व की पिच पर बनाया जा रहा माहौल और असदुद्दीन ओवैसी का इन सभी राजनैतिक दलों के सियासी रोड मैप के बीच में मजबूत जगह तलाशना सबसे बड़ा कारण केसीआर की हैट्रिक पर ब्रेक लगाने का माना जा रहा है। फिलहाल राज्य में सभी पार्टियों का दावा अपने अपने लिहाज से सरकार बनाने या किंग मेकर बनने का ही हो रहा है। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि 2014 में तेलंगाना बनने के बाद जब वहां चुनाव हुए तो केसीआर ने राज्य की सत्ता संभाली। तेलंगाना के वरिष्ठ पत्रकार और सियासी विश्लेषक के चक्रधर राव कहते हैं कि 2014 में केसीआर को जब सत्ता मिली तो उन्होंने नए राज्य में जितना बेहतरीन और जनता के सरोकार के लिए काम किया जाना चाहिए था वह जमकर किया। नतीजा यह हुआ की 2019 के विधानसभा चुनाव में वह बंपर तरीके से राज्य में दोबारा सत्ता संभालने के लिए वापसी कर गए। राव कहते हैं कि इन 5 सालों में भी केसीआर ने राज्य की बेहतरी के लिए खूब काम किया। लेकिन बीते 10 सालों से सत्ता से बाहर रही कांग्रेस ने भी सियासी तौर पर अपनी कमियों को दूर कर राज्य में वापसी की तैयारी शुरू कर दी। उनका कहना है कि जिस तरह से कांग्रेस ने तेलंगाना में अपनी मजबूती के दावे के लिए रैलियां जनसंपर्क और सम्मेलनों के साथ साथ डोर टू डोर अभियान चलाया उसने पार्टी में राज्य की सियासत में एक बड़ी ऊर्जा पैदा कर दी।

राजनीतिक जानकारों का कहना है कि बीते 10 सालों में कांग्रेस ने अपनी कमियों को न सिर्फ समझा बल्कि अपने उन दूर गए नेताओं को भी साथ में जोड़ना शुरु किया जिससे कभी संयुक्त राज्य रहे आंध्र

प्रदेश में सत्ता संभाली जाती थी। राजनीतिक विश्लेषक चक्रधर राव कहते हैं कि राहुल गांधी से लेकर प्रियंका गांधी और सोनिया गांधी से लेकर मल्लिकार्जुन खरगे तक ने तेलंगाना को अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना कर जमकर रैलियां और जनसभाएं शुरू की हैं। पार्टी के प्रमुख नेता लगातार तेलंगाना में न सिर्फ दौरा कर रहे हैं बल्कि जनता से मुखातिब होकर कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में जीती गई बाजी के दांव को भी यहां आजमा रहे हैं। तेलंगाना कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रेवंथ रेड्डी कहते हैं कि इस बार राज्य में कांग्रेस की सरकार ही बनने वाली है। उनका दावा है कि जिस तरह से कांग्रेस ने कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में जनता के मुद्दों पर चुनाव लड़ा था उन्हीं मुद्दों के आधार पर वह तेलंगाना में भी जनता के बीच में है। वह कहते हैं कि जिस तरीके से हैदराबाद में सोनिया गांधी की रैली हुई और केसीआर की पार्टी के कई बड़े नेता कांग्रेस का दामन थाम कर इस बार उनके साथ राज्य के विकास का खाका खींच रहे हैं। उससे उनकी पार्टी पूरी तरीके से आश्वस्त है कि आने वाले दिनों में केसीआर सत्ता से बाहर होंगे।

हालांकि कुछ राजनीतिक जानकारों का कहना यह भी है कि जिस तरीके से केसीआर ने तेलंगाना राज्य के बनने के बाद गांव और शहरों में तेजी से विकास किया उससे राज्य की जनता उनके साथ मजबूती से खड़ी है। लेकिन वह यह भी मानते हैं कि दस साल तक सत्ता में बने रहना किसी न किसी स्तर पर सत्ता विरोधी लहर से जूझने वाली परिस्थितियां भी पैदा करता है। बीआरएस पार्टी के नेता एम. दिनेशकुमार कहते हैं कि जिस तरीके से केसीआर ने राज्य में किसानों के लिए पानी से लेकर उनकी फसल और गांव से लेकर शहरों में विकास का नया डेवलपमेंट मॉडल तैयार किया है। उसी की बदौलत उनकी सरकार को एक बार फिर तेलंगाना की जनता बंपर वोटो से जिता कर सत्ता में भेजने वाली है। एम कुमार कहते हैं कि एक नए राज्य के बनने के बाद जिस तरीके की ज़रूरतें होती हैं, उनकी सरकार ने दिन रात मेहनत करके किया है। यही वजह है कि राज्य की जनता और उनकी पार्टी के बीच में रिश्ता राजनीतिक नहीं बल्कि भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ है। बीआरएस पार्टी के नेताओं का मानना है कि जब सभी राजनीतिक दल नफा नुकसान देखकर चुनाव के मौके पर सीटों का बंटवारा कर रहे हैं तो उनकी पार्टी में जनता के बीच में रहने वाले नेताओं को करीब डेढ़ महीने पहले ही प्रत्याशी बनाकर अपने-अपने क्षेत्र में और मेहनत मजबूती से काम करने का निर्देश दे दिया था।

वहीं अगर बीते दस सालों से राज्य में सत्ता से दूर रही कांग्रेस ने अपनी सियासी पिच को मजबूत करने की पूरी फील्डिंग सजाई है तो भारतीय जनता पार्टी ने भी इसमें कोई कोर कसर बाकी नहीं रखी है। केंद्र में मंत्री रहे और वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जी किशन रेड्डी भी सियासी मैदान में ताल ठोक कर भाजपा को बढ़त दिलाने की पूरी तैयारी में लगे हैं। राजनीतिक विश्लेषक और वरिष्ठ पत्रकार चक्रधर राव कहते हैं जिस तरीके से भारतीय जनता पार्टी में राज्य में हिंदुत्व की पिच पर सियासी बैटिंग करनी शुरू की है उसे मामला राज्य के सियासत का पेचीदा होता जा रहा है। हालांकि वह कहते हैं कि इसका असर वोट के और सीट के तौर पर भारतीय जनता पार्टी को कितना होगा यह तो सियासी परिणाम बताएंगे। लेकिन यह बात तय है कि इस साल होने वाला विधानसभा का चुनाव केसीआर के लिए बिल्कुल आसान होगा यह कहना थोड़ा मुश्किल लग रहा है। क्योंकि 2019 के चुनाव में 119 में 101 सीटें जीतकर बीआरएस ने अगले कुछ सालों के सियासत का संदेश तो स्पष्ट दे दिया था। लेकिन इन पांच सालो में राज्य की सियासत में सत्ता से दूर रहने वाली पार्टियों ने बड़ी मेहनत कर चुनाव को रोचक तो कर ही दिया है।

वह कहते हैं कि इन सभी सियासी समीकरणों के बीच असदुद्दीन ओवैसी की भी राज्य में मजबूत पकड़ सियासत को एक नए नजरिए से देखने का बड़ा आयाम भी दे रही है। सियासी जानकारों का कहना है कि भारतीय जनता पार्टी ने अगर राज्य में हिंदुत्व की पिच पर मजबूत बैटिंग करने के लिहाज से फील्डिंग सजाई है तो इसका फायदा असदुद्दीन ओवैसी मजबूती से समूचे राज्य में लेने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इस वक्त असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी की राज्य में सात सीटें हैं। ओवैसी की पार्टी लगातार राज्य में अपनी सियासी जमीन को अपने ही राजनीतिक एजेंडे से मजबूत करने की कोशिश में बनी हुई है। राजनीतिक विश्लेषक राजू मन्नम कहते हैं कि तेलंगाना की सियासत में जातिवाद के लिहाज से जितना रंग गाढ़ा होता रहेगा उतना ही सियासी नजरिए से चुनाव अलग रंग में रंगता जाएगा।

यहां पर कांग्रेस भी उन्हीं जाति बिरादरी और समुदाय का वोट लेने की फिराक में है जो की बीआरएस का अपना कोर वोटर है। वहीं 2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी में चार लोकसभा सीटें भी जीती हैं। इसलिए भाजपा भी इस राज्य में अपनी मजबूत दावेदारी के साथ सत्ता का रास्ता तलाश रही है। इन सब के बीच बहुजन समाज पार्टी भी दलित राजनीति के साथ तेलंगाना में सत्ता पक्ष और कांग्रेस के वोट बैंक में सेंधमारी की तैयारी में लग गई है। राजू मन्नम कहते हैं बीते 5 सालों में सियासत का राज्य में विस्तार भी खूब हुआ है। और राजनीतिक दलों ने अपनी सियासी जमीन भी मजबूत करने की पूरी कोशिश की है। ऐसे में यह विधानसभा का चुनाव राज्य बनने के बाद होने वाले किसी भी चुनाव से सबसे ज्यादा रोचक होने वाला है।

भाजपा के लिए मुश्किल होती दक्षिण की डगर

राजकुमार सिंह

भाजपा के लिए दक्षिण भारत की राजनीति की डगर लगातार मुश्किल होती दिख रही है। त्रिकोणीय मुकाबले के बावजूद कांग्रेस ने जिस प्रचंड बहुमत से कर्नाटक की सत्ता छीनी, वह भाजपा के चुनाव प्रबंधन महारत के आत्मविश्वास को हिलाने वाला रहा। वोट बंटवारे से लेकर कोई भी चुनावी दांवपेंच काम नहीं आया। परिणामस्वरूप पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के उसी जनता दल सेक्युलर से अब हाथ मिलाना पड़ा है, विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान जिसे मिलनेवाले हर वोट से कांग्रेस के भ्रष्टाचार को ताकत मिलने की बात भाजपा के नेता कहते रहे। दरअसल कर्नाटक की सत्ता गंवाने के साथ भाजपा की मुश्किलें समाप्त नहीं, शुरू होती हैं। उसका लिंगायत वोट बैंक टूट चुका है, जिसकी बदौलत वह कर्नाटक को दक्षिण में अपना दुर्ग बना पाई और राज्य की सत्ता के साथ-साथ लोकसभा की भी अधिसंख्यक सीटें जीतती रही। कर्नाटक की सत्ता गंवाने और खासकर विपक्षी एकता के बाद भाजपा ने भी एनडीए को सक्रिय करते हुए रूठे हुए दोस्तों को मनाने के साथ ही नए दोस्तों की तलाश शुरू की। बेशक संख्या की दृष्टि से दर्जनों दल जुटे, पर जद सेक्युलर के अलावा शायद ही कोई ऐसा दल हो, जो अगले लोकसभा चुनाव में मददगार साबित हो सकता हो। जद सेक्युलर से चुनावी गठबंधन की बात सिरे चढ़ जाने से भाजपा जितनी आश्वस्त हुई होगी, उससे ज्यादा उसकी चिंताएं अन्नाद्रमुक और जन सेना से दोस्ती टूट जाने से बढ़ गई हैं। सनातन धर्म पर विवाद के चलते तमिलनाडु के दूसरे बड़े दल अन्नाद्रमुक ने भाजपा से गठबंधन समाप्त करने का ऐलान कर दिया है। आंध्र में फिलहाल जगनमोहन रेड्डी की वाईएसआरसीपी की सरकार है, जिसके केंद्र सरकार के साथ मधुर रिश्ते रहे हैं, पर वह भाजपा को राज्य की राजनीति में पैर क्यों जमाने देगी, जबकि उसे विधानसभा में अपने दम पर बहुमत के अलावा लोकसभा की 25 में से 22 सीटें हासिल हैं? शेष तीन सीटें टीडीपी के पास हैं और दोनों राष्ट्रीय दल भाजपा-कांग्रेस के हाथ खाली हैं। हां, आंध्र से ही अलग होकर पृथक राज्य बने तेलंगाना में अवश्य भाजपा 17 में से चार सीटें जीतने में सफल रही थी पिछली बार। अब बीआरएस बन गई सत्तारूढ़ टीआरएस ने तब नौ सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस और असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी के हिस्से एक-एक सीट आई थी। सहमति की अटकलें सही हों तो भी अपने चुनावी समीकरण के मद्देनजर केसीआर भाजपा से गठबंधन का जोखिम शायद ही उठाए। एक और दक्षिण भारतीय राज्य केरल से 20 लोकसभा सदस्य चुने जाते हैं और पिछली बार सत्तारूढ़ माकपा को एक सीट के अलावा शेष सभी 19 सीटें कांग्रेस के नेतृत्ववाले यूडीएफ ने जीती थीं। कांग्रेस को अकेले ही 15 सीटें मिली थीं।

चुनावी लड़ाई को बनाना होगा शालीन

विश्वनाथ सचदेव

यूं तो पिछले एक अर्से से हमारा देश चुनावी मोड में ही चल रहा है पर अब तो आम चुनाव से पहले के सेमीफाइनल की बाकायदा घोषणा भी हो गई है। शंखनाद हो चुका है। दिसंबर तक पांच राज्यों में नई सरकारें भी बन ही जाएंगी। सवाल यह नहीं है कि कौन जीतेगा या कौन हारेगा। सवाल यह है कि इन चुनाव के बाद हमारा जनतंत्र कुछ मजबूत होगा या कमजोर। जनता के शासन का नाम है जनतंत्र। जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा शासन। चुनावों का होना या फिर वोट देना मात्र ही इस बात का प्रमाण नहीं है कि हमारा जनतंत्र फल-फूल रहा है। वोट मांगने वाले और वोट देने वाले, दोनों का दायित्व बनता है कि वह जनतंत्र की इस पूरी प्रक्रिया में ईमानदारी से हिस्सा लें। आज हमें स्वयं से यह पूछने की आवश्यकता है कि क्या हमारी राजनीति में ईमानदारी नाम की कोई चीज बची है। झूठे वादे करना, धर्म और जाति के नाम पर मतदाताओं को बरगलाना, आधारहीन आरोपों के शोर में विवेक की आवाज को दबा देना। यह सब तो जनतंत्र नहीं है। दुर्भाग्य यह भी है कि जनतांत्रिक मूल्यों के नकार के इस खेल में कोई पीछे रहना नहीं चाहता। सब अपने-अपने महिमा-मंडन में लगे हैं। आत्म-प्रशंसा से लेकर पर-निंदा तक फैला हुआ है हमारा बदरंग इंद्रधनुष। होना तो यह चाहिए कि राजनीतिक दल अपनी-अपनी रीति-नीति का ब्यौरा लेकर जनता के पास जाएं। पर हमारी समूची राजनीति विरोधियों को कोसने से लेकर अपना ढोल बजाने तक सीमित होकर रह गई है। जो अपने आप को जितना बड़ा नेता समझता-कहता है, वह उतने ही जोर से विरोधी पर लांछन लगाने में लगा है। अपेक्षित तो यह है कि सत्ता-पक्ष चुनाव के मौके पर अपनी उपलब्धियों का लेखा-जोखा मतदाता के समक्ष प्रस्तुत करे और विपक्ष सत्ता-पक्ष की कमजोरियों और अपनी रीति-नीति के बारे में बताए। बताए कि वह कैसे और क्या बेहतर करेगा। लेकिन ऐसा कुछ होता दिख नहीं रहा। चुनाव के संदर्भ में जो हो रहा है वह एक तो यह है कि विरोधी को नीचा दिखाने की कोशिश और दूसरे, रेवड़ियां बांटने की प्रतिस्पर्धा। बड़ी बेशर्मी से मतदाताओं को लुभाने की होड़-सी लगी है। एक जमाना था जब मतदान की यज्ञ से तुलना की जाती थी और वोट को तुलसी-दल की पवित्रता प्राप्त थी। अब तो यह चुनाव ऐसी लड़ाई बन गया है जिसमें सब कुछ जायज मान लिया गया है। यहां तक कि विरोधी को अपशब्द कहते हुए भी किसी को कोई शर्म नहीं आती। पर किसी भी कीमत पर जीत हमारे जनतंत्र को खोखला ही बनाएगी। अभी पांच राज्यों में चुनाव हो रहे हैं, फिर लोकसभा के लिए चुनाव होंगे। चुनाव के इस माहौल में यह बात समझना जरूरी है कि चुनाव जीत कर सरकार बनाने में सफलता ही जनतंत्र की सार्थकता नहीं है। यह सार्थकता तभी उजागर होगी जब मतदाता के पास चुनने का अधिकार ही नहीं, अवसर भी होगा। मतदाता को स्वयं खोजना होगा यह रास्ता। अपने विवेकपूर्ण निर्णय से ही देश का मतदाता उस लक्ष्य तक पहुंचा सकता है जो किसी भी सुव्यवस्था के लिए अपेक्षित है।

राजस्थान में जाट और किसान निभाएंगे किंगमेकर की भूमिका

अनन्या मिश्रा

राजस्थान में 82 विधानसभा की ऐसी सीटें हैं, जो काफी महत्वपूर्ण हैं। बता दें कि इन सीटों पर जात और किसानों की संख्या ज्यादा है। ऐसे में किसान और जाट जिस पार्टी का समर्थन करते हैं, वह चुनाव के फाइनल नतीजे में निर्णायक साबित होते हैं। जाट और किसान ने पिछले दो विधानसभा चुनावों में परिणामों को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाई थी। साल 2013 में कांग्रेस से नाराज होकर जाटों ने बीजेपी को समर्थन दिया था। इससे बीजेपी को भारी जीत मिली और सत्ता पर काबिज हुई। वहीं साल 2018 में किसानों ने कांग्रेस पार्टी की ओर अपना समर्थन दिखाया तो अशोक गहलोत राज्य के सीएम बनें। ऐसे में इस बार यानी की साल 2023 के विधानसभा चुनाव में जाट और किसानों की भूमिका फिर से किंगमेकर वाली है। वहीं भाजपा और कांग्रेस भी इन सीटों पर अपनी जीत पक्की करने के लिए जाट और किसानों का समर्थन हासिल कर उन्हें अपने पाले में करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

राजस्थान के चुनाव में बीजेपी ने जाटों और किसानों को फिर से पार्टी के पक्ष में लाने के लिए दांव चल दिया है। बीजेपी के तरफ से सतीश पूनियां को उप नेता प्रतिपक्ष बनाया है। बता दें कि पुनिया जाट नेता हैं और वह जाट समुदाय से ताल्लुक रखते हैं। वहीं सतीश पुनिया जाटों को बीजेपी पार्टी से जोड़ने का काम कर रहे हैं। वहीं किसानों के लिए भी बीजेपी ने कई अहम और कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं। ताकि चुनाव में किसान बीजेपी की ओर अपना समर्थन रखें। राजस्थान की राजनीति के बारे में अच्छी समझ रखने वाले लोगों की मानें तो उनका कहना है कि भाजपा को साल 2018 के विधानसभा चुनावों में जाट की वजह से नुकसान उठाना पड़ा था। ऐसे में जाट समुदाय की नाराजगी के कारण बीजेपी ने सत्ता

खो दी थी। पार्टी से जाट समुदाय दूर हो गया है, ऐसे में सतीश पुनिया जाट समुदाय और बीजेपी के बीच इस गैप को भरने का काम कर रहे हैं।

वहीं विधानसभा चुनावों में जाटों और किसानों का समर्थन पाने के लिए कांग्रेस भी कड़ी मेहनत कर रही है। कांग्रेस पार्टी ने जाट नेताओं को अहम पद भी दिए हैं। इसके अलावा कांग्रेस ने किसानों के लिए कई विकास योजानाओं की भी शुरूआत की है। बता दें कि जाट और किसानों के प्रभाव वाली सीटों पर कांग्रेस की तरफ से अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा भी दौरे कर रहे हैं। अभी भी 2023 के चुनाव में जाट और किसान नेता अपनी स्थिति के बारे में स्पष्ट नहीं हैं। जाट नेताओं का मानना है कि बीजेपी पार्टी जाट समुदाय का विश्वास जीतने में सक्षण होगी। तो वहीं अन्य नेताओं का मानना है कि जाट समुदाय कांग्रेस की तरफ हैं। वहीं किसान नेता किसी भी पार्टी को अभी समर्थन करने के लिए राजी नहीं है। जाट महासभा की तरफ से कहा जा रहा है कि अभी राजस्थान विधानसभा चुनाव में काफी समय है। ऐसे में समय आने पर तय किया जाएगा कि हमें अपना समर्थन किस ओर देना है।

राजस्थान के मारवाड़ जोन में जोधपुर, पाली, जालोर, नागौर, बाड़मेर, जैसलमेर और सिरोही जिले आते हैं। इन जिलों में 42 विधानसभा सीटें हैं। यह सारी सीटें जाट और किसान समुदाय के प्रभाव वाली सीटें हैं। माना जाता है कि यहां पर जाट और किसान जिस भी पार्टी के पक्ष में अपना समर्थन देते हैं, उसी पार्टी का पलड़ा भारी हो जाता है। इस साल के अंत में राजस्थान विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में राजनैतिक पार्टियों ने विधानसभा चुनाव को लेकर अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं।

पिछले दो विधानसभा चुनाव में भाजपा ने वसुंधरा राजे को सीएम फेस घोषित कर सत्ता हासिल की थी। लेकिन इस बार पार्टी द्वारा पीएम मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ने की बात कह रही है। ऐसे में भाजपा की गुटबाजी उस पर भारी पड़ सकती है। वहीं बीजेपी ने सत्ता परिवर्तन के ट्रेंड को बरकरार रखने के लिए सीएम गहलोत को निशाने पर ले रखा है। पार्टी के नेता सीएम गहलोत के खिलाफ मोर्चा खोले हुए हैं। सियासी जानकारों की मानें तो इस बार भाजपा गहलोत सरकार के खिलाफ कोई बड़ा प्रदर्शन नहीं कर पाई है। वहीं पार्टी के अंदर चल रही उठापटक से पार्टी को नुकसान झेलना पड़ सकता है। इसके अलावा वसुंधरा राजे की नाराजगी भी देखने को मिल रही है। ऐसे में बीजेपी के अंदर चल रही इस फूट का कांग्रेस पार्टी फायदा जरूर उठा सकती है।

बीते कुछ समय से राज्य की राजनीति में कई बड़े बदलाव देखने को मिले हैं। जहां सीएम के पद को लेकर नाराजगी दिखी, तो वहीं राजस्थान में लाल डायरी का राज अभी भी बरकरार है। मंत्री की बर्खास्तगी हो, या पूर्व मुख्यमंत्री को कई अहम सूची से बाहर रखना हो। दोनों ही मुख्य राजनीतिक पार्टियों के तमाम मुद्दे हैं, जिनके जरिए वह एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप कर रहे हैं। ऐसे में राजस्थान में जो सबसे अहम फैक्टर है, वह राज्य के लोगों का मिजाज है। ऐसे में यह देखना काफी ज्यादा दिलचस्प होगा कि राज्य की जनता सत्ता परिवर्तन के ट्रेंड को बरकरार रखती है या पुरानी सरकार को फिर से मौका देती है।

कमलनाथ बनाम दिग्विजय, गालियां खाने की राजनीतिक 'पावर ऑफ एटर्नी'!

अजय बोकिल

सियासत में ये अंदाज भला नया हो, लेकिन हकीकत नई नहीं है। मध्यप्रदेश कांग्रेस में एक विधानसभा सीट पर टिकट वितरण के विवाद को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और पार्टी के सीएम पद के दावेदार कमलनाथ ने कांग्रेस सांसद और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह से सरेआम कहा कि 'मैंने गालियां खाने की पावर ऑफ एटर्नी आपको दे रखी है। ये पावर ऑफ एटर्नी आज भी वैलिड है। आप पूरी गालियां खाइए। चाहे मेरी गलती हो या न हो।' मध्यप्रदेश में कांग्रेस के इन दो दिग्गज नेताओं के बीच आपसी रिश्ते कैसे हैं, यह सभी को पता है। लेकिन इस रिश्तेदारी में गालियां खाने का अधिकार पत्र (मुख्त्यारनामा) देना और उसका सार्वजनिक रूप से एलान जरा नई बात है। कुछ लोग इसे दोनो नेताओं के बीच मधुर सम्बन्धों का नकली 'गाली एंगल' मान रहे हैं तो कुछ की निगाह में यह आपसी कलह की 'पावर ऑफ एटर्नी की सार्वजनिक स्वीकारोक्ति है। यूं भारतीय राजनीति में राजनेताओं और राजनीतिक दलों के बीच आए दिन गालियों के आदान-प्रदान की परंपरा नई नहीं है।

चुनावों के समय तो यह अपने चरम पर होती है। कई बार ये गालियां शालीनता के अंतिम छोर को भी पार करने की दुर्भावना से प्रेरित होती हैं। ऐसी गालियों का तो एक अलग शब्दकोश तैयार किया जा सकता है। यह मान्यता अब आम हो चली है कि सियासत में एक दूसरे को कोसने अथवा दोषी ठहराने के लिए जितने घटिया और अमानुष शब्दों का इस्तेमाल किया जाएगा, वोटों की हांडी उतनी ही ज्यादा पकेगी। ऐसे में मर्यादा शब्द का अर्थ ही अमर्यादा में तब्दील हो जाता है। वहीं, भोपाल में कमलनाथ ने जो कहा वो इस मायने में अलग है कि उन्होंने उन्हें पड़ने वाली सार्वजनिक गालियों को खाकर हजम करने का अधिकार पत्र अपने ही एक समकालीन नेता को दिया है। कानूनी अर्थ में पावर ऑफ एटार्नी एक लीगल डाक्यूमेंट होता है, जिसके जरिए एक व्यक्ति किसी दूसरे को अपनी प्रॉपर्टी मैनेज करने के लिए अधिकृत करता है ताकि वो ऐसा करने के लिए जरूरी फैसले भी ले सके। ऐसे पावर ऑफ एटर्नी प्राप्तकर्ता को कानून की भाषा में एजेंट और यह अधिकार देने वाले को ग्रांटर कहा जाता है। अब कमलनाथ ने जो कहा उसका तात्पर्य यह है कि वो भी अच्छे फैसले करें, उसका क्रेडिट सीधे उनके खाते में होगा और जो गलत या विवशता भरे फैसले करें, उसकी डिसक्रेडिट दिग्विजयसिंह के खाते में ट्रांस्फर होगी।

हालांकि, भोपाल में कांग्रेस पार्टी के 1209 वचनों के पत्र विमोचन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दोनो नेताओं के बीच जो नोंक झोंक हुई, उसमें दिग्विजय ने इस अयाचित और अनपेक्षित पावर ऑफ एटर्नी का यह कहकर विरोध किया कि %भैया, ए फॉर्म और बी फॉर्म में दस्तखत किसके होते हैं, पीसीसी चीफ के। तो कपड़े किसके फटने चाहिए, बताओ। गलती कौन कर रहा है, ये भी पता होना चाहिए। अब शंकरजी का काम यही है विष पीने का, तो पीएंगे। यानी कि जो हुआ, उसमें मैं कहां हूं? ऐसे में गालियां खाने की पावर ऑफ एटर्नी मुझे क्यों? इसके पहले जो वीडियो वायरल हुआ था, उसमें कमलनाथ राज्य की कोलारस सीट पर घोषित टिकट का विरोध करने वालों से कहते दिखे कि (टिकट तो दिग्विजय ने बांटे हैं, इसलिए) कपड़े फाड़ने हैं तो दिग्विजय और उनके बेटे जयवर्द्धन सिंह के फाड़ो। यहां सवाल यह भी है कि किसी एक व्यक्ति को दी गई गालियां दूसरा कोई क्यों अपने करंट अकाउंट में डलने दे। फिर जो गालियां दी गई हैं, उसके पीछे क्या कुछ कारण हैं? हालांकि अकारण दी गई गालियों को रिटर्न या खारिज किया जा सकता है। लेकिन यह उस व्यक्ति पर निर्भर है, जिसे पावर ऑफ एटर्नी दी गई है। यहां दिग्विजय ने बिन मांगी गालियों को यह कहकर लौटाने की कोशिश की कि जिस वजह से गालियां मुझे ट्रांस्फर की जा रही हैं, उसमें मेरा कोई हाथ नहीं है। यानी ये उधार का सिंदूर मेरे माथे क्यों? इसी संदर्भ में दिग्विजयसिंह ने एक सोशल मीडिया पोस्ट भी डाली। उन्होंने कहा कि जब परिवार बड़ा होता है तो सामूहिक सुख और सामूहिक द्वंद्व दोनों होते हैं। समझदारी यही कहती है कि बड़े लोग धैर्यपूर्वक समाधान निकालें। इस कसक पर कपड़ा डालने के अंदाज में कमलनाथ ने कहा- मैंने मजाक और प्यार में ये बात कही थी। इस पर किसी को नाराज नहीं होना चाहिए।'

दरअसल, राजनीति में राजी नाराजी जताने के तरीके भी अलग होते हैं। राजनीति के नियम विज्ञान की तरह स्पष्ट और प्रमाण आधारित नहीं होते। लेकिन राजनीतिक प्रयोगशीलता सियासत आत्मा है। अमूमन यहां जो दिखता है, वो वैसा होता नहीं है और जो होता है, वह कई बार किसी और ही रूप में दिखाई पड़ता है। ताजा प्रकरण में गालियों की पावर ऑफ एटर्नी देने का अर्थ केवल 'विषपान के अधिकार' से है। जैसा कि खुद दिग्विजयसिंह ने भी कहा। यह बात अलग है कि कई बार खुद दिग्विजय अपने ही विवादित बयानों के कारण कटघरे में खड़े होते हैं और फिर 'हर फिक्र को धुएं में उड़ाने' के अंदाज में उस कटघरे से बाहर निकलने की कोशिश करते हैं। इसका निहितार्थ इतना ही है कि राजनेता को हमेशा मोटी चमड़ी वाला होना चाहिए। छुईमुई भाव से सियासत नहीं होती। क्योंकि सियासत के रास्ते फूलों और कांटो से एक समान भरे हैं। यहां हर बात का श्रेय लेने का उद्दाम घोष और आत्ममुग्धता में डूबे रहने का सुभीता भी है तो वक्त पड़े गम और गालियां खाते रहने की फजीहत भी है। सियासत में विरोधियों के कपड़े फाड़ सकने की कूवत भी चाहिए और अपने फटे कपड़ों को लेकर राजनीतिक हमदर्दी कबाड़ सकने का माद्दा भी चाहिए।

यही भी सचाई है कि आज राजनीति में ज्यादातर बड़े नेता इस तरह गालियां खाने अथवा उसे पचा जाने की 'पॉवर ऑफ एटर्नी' अघोषित तौर पर किसी न किसी को दिए ही रहते हैं। बल्कि यूं कहें कि ये 'पावर ऑफ एटर्नी' किसी न किसी को लेनी ही पड़ती है। क्योंकि कई बार किसी आला नेता के सार्वजनिक बयान, जो कितने ही अतार्किक या मूर्खतापूर्ण क्यों न हों, की व्याख्या करने और उसे उचित ठहराने का नैतिक दायित्व अमूमन उन प्रवक्ताओं अथवा समर्थक नेताओं कार्यकर्ताओं का होता है, जो किसी भी दल में होते ही इसीलिए हैं। ताकि पार्टी में शीर्ष स्तर के मुखारविंद से जो और जैसा कहा गया है, उसकी कुतर्कीय व्याख्या अथवा संदर्भ से परे विवेचना करने का कौशल दिखाया जाए। यही गतकेबाजी किसी भी राजनीतिक 'पावर ऑफ एटर्नी' का वांछित गुणधर्म है। इसके पीछे मान्यता यही है कि जो एक बार कह दिया गया है, वो सौ टंच सही है और अकाट्य है। अगर आप उसकी काट पेश भी करना चाहते हैं तो आपको उससे बड़ा विवादित और मूर्खतापूर्ण बयान देकर सुर्खियां जुटानी होंगीं।

छत्तीसगढ़ का सबसे छोटा मतदान केंद्र, वर्ष 2008 से लगातार 100 फीसदी हुआ है मतदान

छत्तीसगढ़ में चुनाव आयोग द्वारा तिथि निर्धारित करने के बाद प्रदेश में राजनीतिक सरगर्मी तेज हो चुकी है। भाजपा ने अपने अधिकांश सीटों से प्रत्याशी घोषित कर चुनावी प्रचार में जुट चुकी है। वहीं, कांग्रेस से प्रत्याशियों की लिस्ट आना बाकी है। इसी बीच खबर आ रही है कि प्रदेश का सबसे छोटे मतदान केंद्र भरतपुर सोनहत

विधानसभा क्षेत्र के शेराडांड़ को बनाया गया है।

आविभाजित सरगुजा के विभाजन के बाद कोरिया के दो विधानसभा का वर्ष 2008 में नए सिरे से परिसीमन के बाद नया विधानसभा सीट भरतपुर-सोनहत अस्तित्व में आया था। उस समय यहां के शेराडांड़ को पहली बार मतदान केंद्र बनाया गया था। वर्ष 2008 में यहां सिर्फ दो मतदाता थे। जबकि विधानसभा चुनाव 2013 में तीन, 2018 में चार थे, इस विधानसभा चुनाव में पांच मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। मतदान के लिए यहां भी पूरी प्रक्रिया का पालन किया जाता रहा है। 15 साल बाद यहां मतदान केंद्र झोपड़ी नहीं, बल्कि गांव में बने पक्के के देवगुड़ी भवन में कराने की तैयारी शासन ने की है।

कोरिया जिला के वनांचल विकासखंड सोनहत के ग्राम पंचायत चंदहा का आश्रित ग्राम शेराडांड़ है, जो जिला मुख्यालय कोरिया से करीब 75 किलोमीटर और ग्राम पंचायत मुख्यालय चंदहा से करीब पांच किमी दूर सुदृढ़ इलाके में जंगल के बीच बसा हुआ है। पोलिंग पार्टी को यहां पहुंचने के लिए उबड़-खाबड़, पगडंडी रास्ते होते हुए मुडक़ी नदी को पार कर जंगल-पहाड़ के बीच से गुजरना पड़ता है। इसके बाद अस्थायी मतदान केंद्र में वोटिंग कराई जाती है।

पोलिंग पार्टी सुबह सात से शाम पांच बजे तक बैठा रहता है। हालांकि हर साल लोकसभा, विधानसभा, त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव में यहां 100 फीसदी मतदान होता है। पोलिंग पार्टी शेराडांड़ मतदान केंद्र में पहुंचने के लिए ट्रैक्टर जैसे वाहन का सहारा लेती हैं। इसके बाद यहां के मतदाता अपने मतों का उपयोग कर पाते हैं। वहीं, कोरिया जिले में शेराडांड़ की तरह इसी प्रकार दूसरा मतदान केंद्र कांटो है, जहां सिर्फ 12 मतदाता हैं। जिसमें सात पुरुष और पांच महिलाएं शामिल हैं।

भरतपुर सोनहत विधानसभा का चुनावी गणित, कांग्रेस को यहां सिर्फ एक चेहरे पर भरोसा

भारतीय जनता पार्टी ने 64 उम्मीदवारों की अपनी दूसरी सूची जारी करके राजनीतिक हलकों के साथ-साथ अपने ही संगठन में हलचल बढ़ा दी है. इस सूची ने सबको अचंभे में डाल दिया है. दरअल, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले की भरतपुर-सोनहत विधानसभा सीट पर सत्ताधारी कांग्रेस के वर्तमान विधायक गुलाब कमरो ने दावेदारी की जिसके बाद बीजेपी ने केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह को चुनावी मैदान में उतारने का फैसला किया है.

भरतपुर-सोनहत बनी हाई प्रोफाइल सीट

रेणुका सिंह पर भाजपा ने जताया है भरोसा

भरतपुर-सोनहत विधानसभा सीट के लिए केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह का नाम सामने आने के बाद विपक्षी बीजेपी में अटकलें शुरू हो गई हैं. ऐसा भी माना जा रहा है कि एमसीबी-कोरिया जिले के तीनों विधानसभा में सबसे हाई प्रोफाइल विधानसभा सीट भरतपुर-सोनहत ही रहेगी. गौरतलब है कि भरतपुर-सोनहत विधानसभा क्षेत्र के लिए बीजेपी की उम्मीदवार सांसद रेणुका सिंह के नाम ने जिले के चुनाव से पहले ही राजनीतिक पार्टियों में सक्रियता बढ़ा दी है.

कांग्रेस की लहर के बाद भी बीजेपी प्रत्याशियों ने दी थी टक्कर

एमसीबी-कोरिया जिले के तीन विधानसभा क्षेत्र मनेन्द्रगढ़ के लिए श्याम बिहारी जायसवाल, बैकुंठपुर के लिए भईयालाल राजवाड़े और भरतपुर-सोनहत के लिए रेणुका सिंह के नाम सामने आए हैं. गौर करने वाली बात यह है कि विधानसभा चुनाव 2018 में बैकुंठपुर और मनेन्द्रगढ़ सीट पर कांग्रेस की लहर रहने के बावजूद भी कड़ा टक्कर देने वाले दोनों पूर्व विधायक और मंत्री पर बीजेपी ने फिर से दांव खेला है. बता दें कि बीजेपी ने पहली सूची में 21

छत्तीसगढ़ में इसी साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। चुनाव शब्द सुनते ही जनता में यह बात बैठ जाती है कि अब जनप्रतिनिधि चुनने और उनके पिछले कामों का लेखा-जोखा बनाने का वक्त आ गया है। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव के लिए महज कुछ महीनों का वक्त बचा है। भाजपा-कांग्रेस के साथ-साथ जितने भी राजनीतिक दल हैं वह सक्रिय हो गए हैं। छत्तीसगढ़ में सभी 90 विधानसभा सीटों पर चुनाव होने वाले हैं। वर्तमान में 71 सीटों पर कांग्रेस, 14 में भाजपा, 3 में जनता कांग्रेस और 2 सीटों पर बसपा के विधायक हैं। 15 साल विपक्ष में रहने के बाद 2018 में कांग्रेस सत्ता में आई। साल 2030 के विधानसभा के चुनाव में क्या मुद्दे होंगे, किस पार्टी की मजबूती विधानसभा में देखने को मिलेगी इन सभी पर चर्चा करेंगे सबसे पहले आज हम जानेंगे सीमांकन के बाद छत्तीसगढ़ की पहली विधानसभा भरतपुर-सोनहत के बारे में।

2008 में बनी थी भरतपुर-सोनहत विधानसभा सीट

छत्तीसगढ़ बनने के बाद कोरिया जिले के अंतर्गत आने वाली इस विधानसभा में साल 2008 में पहली बार चुनाव हुए। राज्य बनने से पहले यह सीट मनेंद्रगढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत आती थी। जो एसटी के लिए आरक्षित थी। साल 2002, 2003 में परिसीमन होने के बाद 2008 में छत्तीसगढ़ की पहली विधानसभा सीट सोनहत-भरतपुर के रूप में बनी। जिसे एसटी के लिए आरक्षित किया गया। विधानसभा क्षेत्र में 1,58,649 मतदाता हैं। जिसमें 79, 214 पुरुष और 79431 महिला वोटर हैं। साल 2008 पहली बार हुए चुनाव में यहां 67.43त्न वोट पड़े। साल 2013 में हुए चुनाव में 82.01त्न वोट पड़े। साल 2018 के हुए चुनाव में 84त्न वोट का प्रतिशत रहा है।

2008 और 2013 में बीजेपी को मिली थी जीत

पहली बार इस सीट पर भाजपा की जीत

2008 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने फूलचंद सिंह को मैदान में उतारा। वहीं, कांग्रेस ने गुलाब कमरो को मैदान में उतारा था। आदिवासी सीट होने के कारण गोंडवाना गणतंत्र पार्टी ने यशवंत गोड़ पर दांव खेला था। पहली बार हुए चुनाव में यहां मतदाताओं की संख्या 1,33,071 थी जिसमें 89,766 लोगों ने वोटिंग की। बीजेपी के फूलचंद सिंह ने 39% वोट के सांथ 35493 वोट लेकर जीत हासिल की। वहीं, कांग्रेस पार्टी को 28145 वोट मिले तो गोगंपा पार्टी को 9117 वोट मिले।

साल 2013 में भाजपा जीती लेकिन बदल दिया प्रत्याशी

साल 2013 के चुनाव में बीजेपी ने अपना प्रत्याशी बदला। कांग्रेस पार्टी से प्रत्याशी एक बार फिर गुलाब कमरों थे। बीजेपी ने चंपादेवी पावले को टिकट दिया। इस साल भी यहां से बीजेपी को जीत मिली। चंपादेवी पावले ने कांग्रेस की गुलाब कमरो को 4608 वोटों से हराया।

2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को मिली थी जीत

गुलाब कमरो ने 2018 में किया हिसाब बराबर

साल 2018 में बीजेपी को सत्ता में आए 15 साल का वक्त पूरा हो चुका था। 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को करारी हार का सामना करना पड़ा। साल 2018 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने एक बार फिर गुलाब कमरों को प्रत्याशी बनाया। वहीं, बीजेपी ने चंपादेवी पावले पर एक बार फिर भरोसा जताया था। लेकिन इस बार गुलाब कमरो ने चंपा देवी पावले को 16, 533 वोट से मात दी।

2023 में क्या हैं समीकरण

गुलाब कमरो को साल 2023 के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर कांग्रेस का चेहरा माना जा रहा है। फिलहाल ऐसा उस क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी की तरफ से कोई बड़ा नाम निकल कर सामने नहीं आया है। वहीं, बीजेपी में कई बड़े चेहरे सक्रिय हुए हैं। बीजेपी ने इन तीन पंचवर्षीय में दो बार अपने प्रत्याशी का चेहरा बदल दिया। भाजपा ने जहां पहली बार पुरुष प्रत्याशी को मैदान में उतारा वहीं दो बार महिला प्रत्याशी पर दांव खेला। लेकिन इस बार भारतीय जनता पार्टी इस विधानसभा सीट से नए चेहरे पर दांव लगा सकती है।

छत्तीसगढ़ में भाजपा ने चला ओबीसी कार्ड, लेकिन एक भी मुस्लिम को टिकट नहीं

छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान के चुनावों पर राजनीति में दिलचस्पी रखने वालों की खास नजर हैं। इन तीनों राज्यों को अगले साल होने जा रहे लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल भी बताया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में दो चरण में चुनाव होने हैं। राज्य में कांग्रेस की सरकार है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) राज्य के अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) वोटरों को साधने के लिए एक बड़ा दांव चली है। भाजपा ने अब तक 90 में से 85 उम्मीदवारों को चुनावी मैदान में उतारा है। इनमें से 29 ओबीसी नेता हैं। आइए समझते हैं इसके मायने

भाजपा ने छत्तीसगढ़ में 85 कैंडिडेट के नाम का ऐलान कर दिया है। पांच सीटों पर उम्मीदवारों की घोषणा नहीं की गई है। पार्टी ने अभी तक 29 ओबीसी नेताओं को चुनावी मैदान में उतारा है और यह संभावना जताई जा रही है कि बाकी बचे 5 सीटों में से तीन पर भाजपा ओबीसी नेताओं को ही उतारेगी। इस तरह ओबीसी नेताओं की संख्या 32 तक पहुंच सकती है। बता दें कि 2018 के चुनाव में भाजपा ने 28 ओबीसी उम्मीदवार उतारे थे। वहीं कांग्रेस ने 26 ओबीसी नेताओं को टिकट दिया था। छत्तीसगढ़ में 40-45 फीसदी ओबीसी हैं।

छत्तीसगढ़ में भाजपा ने पांच सीटों- अंबिकापुर, बेलतारा, कसडोल, बेमेतरा और पंडरिया पर अभी कैंडिडेट के नाम का ऐलान नहीं किया है। भाजपा ने पहली लिस्ट 17 अगस्त को जारी की थी। वहीं दूसरी लिस्ट सोमवार को जारी की गई। आगामी विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने अब तक 16 %उच्च जाति% के उम्मीदवारों को टिकट दिया है। इनमें सात ठाकुर, पांच ब्राह्मण, तीन अग्रवाल और एक जैन शामिल हैं। भाजपा ने अब तक जिन 85 सीटों के लिए उम्मीदवारों की घोषणा की है, उनमें से 29 सीटें अनुसूचित जनजाति (एसटी) और 10 सीटें अनुसूचित जाति (एससी) के लिए आरक्षित हैं।

किसी मुस्लिम नेता को टिकट नहीं- भाजपा के एक नेता ने बताया, %हम ओबीसी वोटरों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं क्योंकि पिछले चुनाव में ओबीसी मतदाताओं के एक बड़े हिस्से ने कांग्रेस को वोट दिया था। इस बार उनका झुकाव हमारी ओर है।% गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ में एसटी के लिए 29 आरक्षित सीटें हैं, लेकिन भाजपा ने 30 एसटी उम्मीदवारों को टिकट दिया है। गोंड जनजाति के उम्मीदवारों को सबसे ज्यादा 17 टिकट दिए गए हैं, उसके बाद कंवर (4), राठिया कंवर (2), भतरा (2), हल्बा (2), क्रिश्चियन ओरांव (2) और हिंदू ओरांव (1) हैं। अब तक भाजपा ने किसी भी सिख, सिंधी, पंजाबी, गुजराती और मुस्लिम नेता को टिकट नहीं दिया है।

कांग्रेस को क्यों काटने पड़े 30 में से 8 विधायकों के टिकट, नाराजगी का था डर

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस ने 3 प्रत्याशियों को सियासी रण में उतार दिया है। लिस्ट में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और विधानसभा अध्यक्ष चरण दास मंहत समेत 13 मंत्रियों को मौका दिया गया है। वहीं एक पूर्व मंत्री प्रेमसाय सिंह टेकाम का टिकट काट दिया गया है। हालांकि अभी सरगुजा संभाग की कई सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा नहीं हुई है। पार्टी ने 7 विधानसभा क्षेत्रों में नए चेहरे उतारे हैं। 3 में से 4 सीटों पर महिलाओं को मौका दिया गया है। वहीं मौजूदा 8 विधायकों के टिकट काटे गए हैं।

कांग्रेस की पहली लिस्ट को देखकर स्पष्ट नजर आ रहा है कि इस सूची में सीएम बघेल की चली है। वो अपनी टीम, अपने समर्थक विधायकों और करीबियों को फिर से टिकट दिलाने में सफल रहे हैं। प्रदेश की जिन 8 सीटों पर मौजूदा विधायकों का परफॉर्मेंस और विधायकों की स्थिति कमजोर देखकर उनकी जगह सीएम बघेल ने पार्टी हाईकमान से नए चेहरों को मौका देने की गुजारिश की थी। सियासी गलियारे में इसी बात की चर्चा है कि पार्टी ने 8 विधायकों के टिकट काटकर नए प्रत्याशियों को चुनावी क्षेत्रों में उतारा है। इन नए चेहरों में अधिकांश सीएम के समर्थक हैं। ऐसे में माना जा रहा है कि इन सीटों पर पार्टी को हार का डर साफतौर पर दिख रही थी। इसलिए 8 विधायकों को बाहर का रास्ता दिखाया गया है। हालांकि सीएम ने कहा कि जिन विधायकों का टिकट कटा है। उन्हें सरकार आने पर कहीं न कहीं जिम्मेदारी दी जाएगी। उनके अनुभवों का लाभ लिया जाएगा।

कांग्रेस की इस लिस्ट में मंत्री गुरु रुद्र कुमार की सीट बदल दी गई है। गुरु रूद्र कुमार इस बार नवागढ़ से चुनाव लड़ेंगे। इससे पहले वे आरंग और अहिवारा से चुनाव लड़ चुके हैं। डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव को उनके गढ़ अंबिकापुर से और भूपेश बघेल को पाटन में बीजेपी के विजय बघेल के खिलाफ लड़ने के लिए बरकरार रखा गया है। दुर्ग ग्रामीण से ताम्रध्वज साहू और सक्ती से चरण दास

महंत जैसे दिग्गजों को भी टिकट दिया गया है।

छत्तीसगढ़ में 30 में से 14 सीटें एसटी समुदाय को दी गई हैं। वहीं एससी की तीन सीटें हैं। सिर्फ चार महिलाओं और एक अल्पसंख्यक उम्मीदवार को टिकट दिया गया है। कांग्रेस ने पार्टी के आंतरिक सर्वेक्षण के अनुसार उन विधायकों को टिकट दिया है जो अपनी सीटों पर सत्ता विरोधी लहर का सामना कर रहे थे।

इन नए चेहरों को मिला है अवसर

छत्तीसगढ़ में आठ विधायकों की टिकट कटने के साथ ही कांग्रेस पार्टी ने नए चेहरे को मौका दिया है। इनमें पंडरिया विधानसभा क्षेत्र से ममता चंद्राकर की जगह नीलकंठ चंद्रवंशी, खुज्जी विधानसभा से छन्नी साहू की जगह भोलाराम साहू, कांकेर विधानसभा में शिशुपाल शोरी की जगह शंकर ध्रुव, डोंगरगढ़ विधानसभा से भुवनेश्वर सिंह बागेल की जगह हर्षिता स्वामी बागेल को मौका दिया गया है।

इसी तरह नवागढ़ क्षेत्र से गुरु दयाल बंजारे की जगह गुरु रुद्र कुमार, अंतागढ़ विधानसभा में अनूपनाग की जगह रूप सिंह पोटाई को टिकट दिया है। वहीं, चित्रकोट विधानसभा क्षेत्र से रामजन बेंजाम की जगह दीपक बैज को मैदान में उतारा है। दंतेवाड़ा विधानसभा क्षेत्र से देवती कर्मा की जगह छविंद्र कर्मा को मौका मिला है।

रमन के खिलाफ देवांगन मैदान में, महेंद्र कर्मा के बेटे को भी टिकट

साल 2018 की विधानसभा के चुनाव में चित्रकोट से दीपक बैज ने चुनाव लड़ा और वह जीते थे। इसके बाद लोकसभा चुनाव में उन्हें प्रत्याशी बनाया गया था और वह सांसद बने। जिसके कारण चित्रकोट विधानसभा क्षेत्र में उपचुनाव हुआ, जिसमें कांग्रेस पार्टी ने रामजन बेंजाम को मौका दिया और वह विधायक रहे। इस बार उनका टिकट काटकर सांसद दीपक बैज को दोबारा दिया गया है। इसके साथ ही दंतेवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में महेंद्र कर्मा की पत्नी देवती कर्मा का टिकट काट कांग्रेस पार्टी ने उनके बेटे छविंद्र कर्मा को टिकट दिया है। हालांकि उनके परिवार में ही टिकट मिला है। इसके साथ ही कांग्रेस पार्टी ने राजनांदगांव विधानसभा सीट में भी बदलाव करते हुए वहां से भी नए चेहरे को मैदान में उतारा है। राजनांदगांव विधानसभा सीट से बीजेपी के लिए छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम डॉ रमन सिंह मैदान में उतरे हैं। वहीं उनके खिलाफ गिरीश देवांगन को कांग्रेस पार्टी ने मौका दिया है।

3 एससी, 14 एसटी, 1 अल्पसंख्यक वर्ग से टिकट

कांग्रेस की पहली सूची में 3 अनुसूचित जाति से, 14 अनुसूचित जनजाति वर्ग से उम्मीदवारों के नाम की घोषणा की गई है। वहीं एक अल्पसंख्यक वर्ग के नेता मोहम्मद अकबर को टिकट दिया गया है।

साहू समाज से तीन नेताओं को मौका

कांग्रेस ने अपनी पहली लिस्ट में 3 साहू समाज के नेताओं को टिकट दिया है। इसमें दुर्ग ग्रामीण से गृहमंत्री ताम्रध्यक्ष साहू, डोंगरगढ़ से बालेश्वर साहू और खुज्जी से भोलाराम साहू को मौका दिया गया है। पिछली बार भोलाराम साहू का टिकट कटा था। और संदीप साहू को टिकट मिला था। इस बार संदीप साहू का टिकट काटकर भोलाराम साहू को दोबारा मौका दिया गया है

रुद्र कुमार ने 3 बार बदली सीट

मंत्री गुरु रुद्र कुमार ने तीन बार सीट बदली है। गुरु रुद्र कुमार को पहले पहली बार रायपुर जिले के आरंग से, दूसरी बार दुर्ग जिले के अहिवारा और अब बेमेतरा जिले के नवागढ़ से चुनाव रण में उतरेंगे।

इन नए चेहरों को मिला मौका

पंडरिया से नीलकंठ चंद्रवंशी
डोंगरगढ़ से हर्षिता स्वामी बघेल
राजनांदगांव से गिरीश देवांगन
खुज्जी से भोलाराम साहू
अंतागढ़ से रूप सिंह पोटाई
कांकेर से शंकर ध्रुव
दंतेवाड़ा से छविंद्र कर्मा

राजनांदगांव की जनता इस बार किसे देगी मौका

छत्तीसगढ़ में इस साल के आखिर में विधानसभा चुनाव होना है। इसके लिए अभी से राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। वहीं सभी राजनीतिक दलों ने चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी हैं। बता दें कि 15 साल तक सत्ता में केंद्र बिंदू रही राजनांदगांव विधानसभा सीट पर बीजेपी का दबदबा कायम रहा है। छत्तीसगढ़ में इस साल के आखिर में विधानसभा चुनाव होना है। इसके लिए अभी से राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। वहीं सभी राजनीतिक दलों ने चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी हैं। बता दें कि 15 साल तक सत्ता में केंद्र बिंदू रही राजनांदगांव विधानसभा सीट पर बीजेपी का दबदबा कायम रहा है। विधायक डॉ. रमन सिंह लगातार तीन बार राजनांदगांव से मुख्यमंत्री रहे। विधानसभा चुनाव के लिए राजनांदगांव को अहम सीट माना गया है।

जातीय समीकरण

राजनांदगांव सीट पर होने वाले विधानसभा चुनाव 2023 किस पार्टी के पक्ष में जाता है। यह जनता तय करेगी। लेकिन अगर इस क्षेत्र में जातीय समीकरण की बात करें तो साल 2018 में यहां पर मतदाताओं की संख्या 1,97,661 है, जो साल 2023 में अपना नेता चुनेंगे।

जानिए चुनावी मुद्दे

राजनांदगांव विधानसभा सीट के ग्रामीण क्षेत्र में सड़कों की हालत जर्जर हो गई। यह एक बड़ा चुनावी मुद्दा बन सकता है। सड़कों की मरम्मत ना होने के कारण स्थानीय लोगों को आवागमन में खासी परेशानी का समाना करना पड़ता है।

राज्य में बढ़ती बेरोजगारी के कारण लोगों ने बीएनसी मिल के अलावा नया उद्योग लाने की मांग की है। जिससे कि स्थानीय लोगों को रोजगार मिल सके।

इस सीट के ग्रामीणजन क्षेत्र में सिंचाई सुविधा का विस्तार कराने की भी मांग कर रहे हैं। जिससे कि किसानों को पर्याप्त मात्रा में पानी मिल सके और सूखे की समस्या से किसानों को निजात मिल सके।

राजनांदगांव में मेडिकल कॉलेज अस्पताल में आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार नहीं होने से क्षेत्र की जनता में खासी नाराजगी है। इस क्षेत्र की जनता चिकित्सा सुविधाएं मुहैया कराने की मांग की है।

राजनांदगांव से अलग हुए दो जिलों के बाद अब संभाग को बनाने की मांग उठ रही है। आपको बता दें कि खैरागढ़-छुईखदान-गंडई और मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौक को नया जिला बनाया गया था।

भाजपा का गढ़ कही जाने वाली राजनांदगांव सीट पर कांग्रेस कब्जा करने के लिए काफी प्रयास कर रही है। वहीं कांग्रेस के 54 नेताओं ने इस सीट पर अपनी दावेदारी पेश की है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

मिजोरम के लिए भाजपा ने जारी की उम्मीदवारों की सूची

आइजोल। भाजपा ने बुधवार को पहले मिजोरम के 12 विधानसभा सीटों के लिए उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की। इसके कुछ देर बाद पार्टी ने छह सीटों के लिए अपनी दूसरी सूची भी जारी कर दी। राज्य में सात नवंबर को विधानसभा चुनाव होने वाला है। भाजपा द्वारा जारी उम्मीदवारों की सूची में लुंग्लेई पश्चिम सीट से आर लालबियाक्तलुआंगी को टिकट दिया गया है। थोरंग से शांति विकास चकमा, हाचेक से मलसलत्लुअंगा और डंपा सीट से वनलालमुआका को टिकट दिया गया है। भाजपा ने छत्तीसगढ़ के पंडरिया निर्वाचन क्षेत्र से भावना बोहरा को टिकट दिया है। छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव सात नवंबर और 17 नवंबर को दो चरण में होने वाला है। भाजपा के केंद्रीय चुनाव समिति जिसमे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा शामिल है, ने मिजोरम और छत्तीसगढ़ में उम्मीदवारों के नामों को मंजूरी दे दी है।

कांग्रेस वंशवादी है और तुष्टिकरण में माहिर है : पटेल

नई दिल्ली/भोपाल। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर सत्ताधारी कांग्रेस और विपक्षी दल कांग्रेस के बीच जमकर सियासी रस्साकशी चल रही है। इसी क्रम में केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद पटेल ने राहुल गांधी द्वारा भाजपा पर वंशवाद की राजनीति करने के आरोप पर पलटवार करते हुए बुधवार को कहा कि कांग्रेस फरेब करने में और उसे फैलाने में बड़ी माहिर पार्टी है। भाजपा सांसद प्रह्लाद सिंह पटेल ने कांग्रेस पार्टी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कांग्रेस तो दशकों से वंशवाद की राजनीति कर रही है। उसे तुष्टिकरण करने, झूठ बोलने और भ्रम फैलाने में महारथ हासिल है। मीडिया से बात करते हुए केंद्रीय मंत्री पटेल ने कहा, पूरे देश जानता है कि कांग्रेस के पास वंशवाद की राजनीति का प्रमाण पत्र है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के बेटे और अनुराग ठाकुर पर सवाल उठाना सिर्फ लोगों को धोखा देने के लिए झूठे तर्क गढ़ने के समान है। उन्होंने आगे कहा, इसलिए मुझे लगता है कि वंशवाद की राजनीति पर जवाब देने के लिए कांग्रेस के पास कुछ भी नहीं है।

महुआ मोइत्रा मामले में 26 को सुनवाई करेगी एथिक्स कमेटी

नई दिल्ली। संसद की आचार समिति तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ कैश-फॉर-क्वेरी शिकायत पर 26 अक्टूबर को सुनवाई करेगी। संसदीय समिति ने महुआ मोइत्रा के खिलाफ शिकायत पर मौखिक साक्ष्य के लिए भाजपा सांसद निशिकांत दुबे को 26 अक्टूबर को बुलाया। संसदीय समिति 26 अक्टूबर को वकील जय अनंत देहाद्रई को भी सुनेगी। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने मोइत्रा पर अडानी समूह और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को निशाना बनाने के लिए व्यवसायी दर्शन हीरानंदानी की ओर से संसद में सवाल पूछने के लिए रिश्वत लेने का आरोप लगाया। लोकसभा अध्यक्ष को अपनी शिकायत में, दुबे ने उनसे उनके खिलाफ आरोपों की जांच के लिए एक जांच समिति गठित करने का आग्रह किया था। इसके बाद मंगलवार को स्पीकर ओम बिरला ने दुबे की शिकायत को निचले सदन की आचार समिति के पास भेज दिया।

विपक्ष ने मिलकर बनाया इंडिया गठबंधन, हम मजबूती से लड़ेंगे

मुंबई। शिवसेना (उद्धव ठाकरे गुट) के वरिष्ठ नेता संजय राउत ने कहा कि अगले साल होने वाले आम चुनाव को एकजुट होकर लड़ने के लिए इंडिया गठंबधन पूरी तरह से तैयार है और कांग्रेस उन राज्यों में सीट बंटवारे पर चर्चा शुरू करे, जहां वो कमजोर स्थिति में है। संजय राउत ने बुधवार को मुंबई में पत्रकारों से बात करते हुए कहा, सबसे पहले विपक्ष ने 2024 का लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए मिलकर इंडिया गठबंधन बनाया था। हमारा सबसे पहला मुद्दा है भाजपा के खिलाफ एकजुट होकर चुनाव लड़ना। राज्यसभा सांसद राउत ने कहा, विपक्ष में राष्ट्रीय स्तर पर कई बड़ी पार्टियां शामिल हैं, जैसे कि अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी बड़ी पार्टी है। इसी तरह अन्य क्षेत्रीय पार्टियां भी इस गठबंधन में शामिल हैं, जिनकी राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी उपस्थिति है। राउत ने आगे कहा कि कांग्रेस को उन राज्यों में सीट बंटवारे पर चर्चा शुरू करनी चाहिए, जहां उसकी बड़ी उपस्थिति नहीं है।

आजम खां, बेटे अबदुल्ला और पत्नी को 7 साल की सजा

रामपुर। समाजवादी पार्टी के नेता आजम खां के बेटे अब्दुल्ला आजम के दो जन्म प्रमाण पत्र के मामले में कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया है। कोर्ट ने आजम खां, अब्दुल्ला आजम और पत्नी तंजीन फात्मा को सात साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही कोर्ट के आदेश पर तीनों को सीधे जेल भेजा जाएगा। इससे पहले, बुधवार को ही कोर्ट ने मामले में तीनों को दोषी करार दिया था। सपा के पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम खां के दो जन्म प्रमाणपत्र मामले में दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद कोर्ट ने बुधवार को अपना फैसला सुनाया। लघु उद्योग प्रकोष्ठ के तत्कालीन क्षेत्रीय संयोजक एवं भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने 2019 में गंज थाने में सपा के वरिष्ठ नेता आजम खां के बेटे पूर्व विधायक अब्दुल्ला आजम के खिलाफ दो जन्म प्रमाणपत्र होने का मामला दर्ज कराया था, जिसमें सपा नेता आजम खां और उनकी पत्नी डॉ. तंजीन फात्मा को भी आरोपी बनाया गया था। पुलिस ने विवेचना के बाद मामले में चार्जशीट कोर्ट में दाखिल की थी। तीनों ही लोग इस समय जमानत पर चल रहे हैं।

अडाणी के बहाने कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने फिर साधा केंद्र सरकार पर निशाना

शरद पवार की अडाणी से बार-बार हो रही मुलाकातों के सवाल पर सकपका गये राहुल

नईदिल्ली। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने एक बार फिर अडानी मुद्दे को लेकर केंद्र की भाजपा सरकार को घेरा है। उन्होंने भाजपा सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा, इस बार चोरी जनता की जेब से हो रही है...जब आप स्विच का बटन दबाते हैं तो अडानी की जेब में पैसा आ जाता है। उन्होंने कहा कि अलग-अलग देशों में पूछताछ हो रही है और लोग सवाल पूछ रहे हैं लेकिन भारत में कुछ नहीं हो रहा है। राहुल गांधी ने कहा कि अडानी इंडोनेशिया में कोयला खरीदते हैं और जब तक कोयला भारत आता है तब तक इसकी कीमत दोगुनी हो जाती है...हमारी बिजली की कीमतें बढ़ रही हैं...वह (अडानी) पैसे लेते हैं। सबसे गरीब लोग...यह कहानी किसी भी सरकार को गिरा देगी। यह सीधी चोरी है।

दरअसल, कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने दिल्ली में एक संवाददाता सम्मेलन में अडानी और रहस्यमय कोयले की कीमत में वृद्धि पर एक मीडिया रिपोर्ट दिखाई और दावा किया कि जनता के साथ धोखा हो रहा है।

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने बुधवार से सवाल किया गया कि उन्होंने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार से उद्योगपति गौतम अडानी के साथ उनकी मुलाकात के बारे में सवाल क्यों नहीं पूछा, इसके जवाब में कांग्रेस नेता ने कहा कि शरद पवार प्रधानमंत्री नहीं है अगर वह प्रधानमंत्री होते तो मैं उनसे भी सवाल करता।

राहुल गांधी ने यह बात एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही, जहां उन्होंने फाइनेंशियल टाइम्स की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए पीएम मोदी पर अडानी को बचाने का आरोप लगाया, जिसमें दावा किया गया था कि अडानी इंडोनेशिया से कोयला खरीदते हैं और भारत में आते ही इसकी कीमत दोगुनी हो जाती है। राहुल गांधी ने कहा, इसे याद रखें जब आप अपना पंखा या लाइट चालू करते हैं, तो आपका पैसा अडानीजी की अधिक कीमत के माध्यम से अडानी की जेब में जा रहा है। आप प्रत्येक यूनिट के लिए अधिक भुगतान कर रहे हैं। 32,000 करोड़ का आंकड़ा याद रखें। और यह

राशि केवल बढ़ेगी। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में, पीएम मोदी के संरक्षण के बिना यह संभव नहीं है। कोई जांच नहीं है। क्यों?

राहुल गांधी ने कहा, अडानीजी इंडोनेशिया में कोयला खरीदते हैं और जब यह कोयला भारत पहुंचता है, तो कीमत दोगुनी हो जाती है। इस प्रकार अडानीजी ने ओवरइनवॉयसिंग करके जनता से 12,000 करोड़ रुपये प्राप्त किए। हमने कर्नाटक में बिजली सब्सिडी दी है, मध्य प्रदेश में भी ऐसा ही करेंगे.. लेकिन दिलचस्प है बात यह है कि भारतीय मीडिया कोई सवाल नहीं उठा रहा है।

फाइनेंशियल टाइम्स की कहानी किसी भी सरकार को गिरा देगी क्योंकि यह एक आदमी द्वारा की गई सीधी चोरी है, जिसे भारत के प्रधानमंत्री द्वारा बार-बार बचाया जा रहा है। मुझे समझ में नहीं आता कि प्रधानमंत्री क्यों हैं मंत्री इस पर कुछ नहीं बोलते। राहुल गांधी ने कहा कि यह उनकी सुरक्षा के बिना संभव नहीं है। सेबी ने सरकार से कहा कि उन्हें दस्तावेज नहीं मिले, लेकिन फाइनेंशियल टाइम्स को सभी दस्तावेज मिल गए। इसलिए मामला बिल्कुल स्पष्ट है कि सुरक्षा है सरकार के उच्चतम स्तर से हो रही है।

हम आपको यह भी बता दें कि राहुल गांधी के आरोपों पर फिलहाल अडाणी समूह की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। अमेरिकी कंपनी 'हिंडनबर्ग रिसर्च' द्वारा अडाणी समूह के खिलाफ 'अनियमितताओं' और स्टॉक मूल्य में हेरफेर का आरोप लगाए जाने के बाद से कांग्रेस इस कारोबारी समूह पर निरंतर हमलावर है और आरोपों की संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) से जांच कराए जाने की मांग कर रही है। अडाणी समूह ने हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में लगाए गए सभी आरोपों से इंकार किया है। उसका कहना है कि उसकी ओर से कोई गलत काम नहीं किया गया है।

राहुल गांधी के तेलंगाना दौरे पर बीआरएस-कांग्रेस में वार-पलटवार

हैदराबाद। बीआरएस एमएलसी के कविता ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को चुनावी गांधी कहते हुए उनपर तंज कसा। बीआरएस नेता ने कहा कि राहुल कथित तौर पर केवल चुनावों के दौरान ही तेलंगाना का दौरा करते हैं। कविता ने कांग्रेस पार्टी पर आरोप लगाते हुए कहा कि पार्टी के नेता गारंटी दे रहे हैं और झूठे वादे कर रहे हैं। बुधवार को, कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और महासचिव प्रियंका गांधी तेलंगाना का दौरा करने और तेलंगाना विधानसभा चुनाव 2023 के लिए जोरदार चुनाव प्रचार शुरू करने के लिए तैयार हैं। के कविता ने कहा कि तेलंगाना में चुनाव का माहौल है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी आज यहां आ रहे हैं। वे गारंटी दे रहे हैं और झूठे वादे कर रहे हैं। वे कभी भी वह नहीं करते जो कांग्रेस पार्टी कहती है। मैं राहुल गांधी को %चुनावी गांधी% कहूंगी क्योंकि वह केवल चुनाव के दौरान ही राज्य का दौरा करते हैं। सांसद प्रमोद तिवारी ने के कविता के बयान पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि मेरे ख्याल से के कविता जी की याददाश्त थोड़ी खराब हो गई है जिस तरह से उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं और लगातार वो जवाब दे रही हैं तो उससे परेशान होकर वो अब प्रासंगिक बातें नहीं बोलती हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि राहुल गांधी जन-जन के नेता है।

राहुल ने भाजपा में वंशवाद पर उठाया सवाल तो हिमंत ने किया पलटवार

राहुल गांधी एक अनपढ़ बच्चा है

नईदिल्ली। वंशवाद की राजनीति को लेकर देश में वार-पलटवार का दौर चलता रहता है। इन सब के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मिजोरम में भाजपा के भीतर वंशवाद को लेकर गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पर निशाना साधा था। इसी को लेकर अब असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने राहुल गांधी पर पलटवार किया है। राहुल गांधी की आलोचना की हुए हिमंता ने उन्हें अनपढ़ बच्चा बता दिया जिसे राजनीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं है। हिमंता ने कहा कि अमित शाह का बेटा कैसे आया सामने? वह बीजेपी में नहीं हैं लेकिन राहुल का पूरा परिवार राजनीति में है। राहुल को लगता है कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) भाजपा का एक अंग है। भाजपा नेता ने साफ तौर पर कहा कि मुझसे उसके बारे में ज्यादा मत पूछो, वह एक अनपढ़ बच्चा है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि क्या राजनाथ सिंह के बेटे, जो अभी यूपी में विधायक हैं, की तुलना (कांग्रेस महासचिव) प्रियंका गांधी से की जा सकती है? क्या वह भाजपा को नियंत्रित करते हैं? उन्होंने कहा कि राहुल गांधी को नए लोगों को मौका देना चाहिए और फिर वंशवाद की राजनीति पर बात करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राहुल को राजनीति के बारे में कोई ज्ञान नहीं है और उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि वह वंशवाद की राजनीति के मूल में हैं। एक परिवार – माँ, पिता, दादा, बहन, भाई – हर कोई राजनीति में है और पार्टी को नियंत्रित कर रहा है। लेकिन, वह भाजपा में उसका समानांतर कैसे देख सकते हैं? बेचारा अनपढ़ आदमी वह और क्या कह सकता था। उन्हें लगता था कि बीसीसीआई बीजेपी की एक शाखा है।

भाजपा के परिवारवाद के आरोप पर राहुल ने कहा था कि अमित शाह का बेटा वास्तव में क्या कर रहा है? राजनाथ सिंह का बेटा क्या करता है?...पिछली बार मैंने सुना, अमित शाह का बेटा भारतीय क्रिकेट चला रहा है। उन्होंने कहा कि उनमें

से कई अनुराग ठाकुर जैसे बच्चे वंशवादी हैं। आपको बता दें कि मिजोरम में चुनाव होने हैं और राहुल गांधी राज्य के दौरे पर थे। कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि दोनों पार्टियाँ ज़ोरम पीपुल्स मूवमेंट और मिज़ो नेशनल फ्रंट भाजपा और आरएसएस के लिए राज्य (मिज़ोरम) में प्रवेश करने के साधन हैं। कांग्रेस पार्टी कभी भी (राज्य में) प्रवेश का साधन नहीं बन सकती क्योंकि हम वैचारिक रूप से पूरी तरह से भाजपा के खिलाफ हैं।

दुर्गा पूजा के दौरान शराब बिक्री पर रोक नहीं लगेगी : हिमंत

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने घोषणा की है कि राज्य में चल रहे दुर्गा पूजा समारोह के दौरान शराब की बिक्री पर प्रतिबंध नहीं होगा। पूजा के दौरान असम में संभावित ड्राई डे के बारे में पूछे गए सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि शराब की बिक्री को प्रतिबंधित करने का मतलब है काला बाजारी में वृद्धि। हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा कि अगर हम शराब की बिक्री पर किसी प्रतिबंध की घोषणा करते हैं, तो कालाबाजारी करने वाले तुरंत जमाखोरी शुरू कर देंगे और पूजा के दौरान इसे बेचेंगे। परिणामस्वरूप मीडिया आउटलेट सरकार पर दोषारोपण करते हुए इसकी रिपोर्ट करेंगे। हालांकि, उन्होंने कहा कि सरकार आवश्यकता और स्थिति के आधार पर ड्राई डे पर विचार कर सकती है।

खेल
प्रमुख समाचार

विश्व कप में टीम इंडिया की आज बांग्लादेश से मुकाबला

मुंबई। भारतीय क्रिकेट टीम आईसीसी विश्व कप 2023 के 17वें मैच में (गुरुवार) 19 अक्टूबर को पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में बांग्लादेश से भिड़ेगी। भारत ने टूर्नामेंट में अपने शुरुआती तीन मैचों में तीन प्रभावशाली जीत दर्ज की है और अंक तालिका में भी शीर्ष पर है। टीम इंडिया की नजर चौथी जीत पर है। बांग्लादेश ने टूर्नामेंट की शुरुआत अफगानिस्तान के खिलाफ शानदार जीत के साथ की, लेकिन इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के खिलाफ दो लगातार हार का सामना करना पड़ा। टीम के कप्तान शाकिब अल हसन मामूली चोट से जूझ रहे हैं, लेकिन भारत के खिलाफ अहम मैच से पहले उनके ठीक होने की संभावना है। मैच 2 बजे से शुरू होगा। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम को इस खेल में चोट की कोई चिंता नहीं है और संभावना है कि वह वही अंतिम एकादश उतारेगी, जिसने पाकिस्तान को सात विकेट से हराया था। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम ने शाकिब अल हसन की अगुवाई वाली टीम के खिलाफ 40 एकदिवसीय मुकाबलों में 31 मैच जीते हैं, जबकि शाकिब अल हसन की अगुवाई वाली टीम ने आठ जीत दर्ज की हैं।

भारत-रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पंड्या (उप-कप्तान), शुबमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल, रवींद्र जडेजा, शार्दुल ठाकुर, जसप्रित बुमरा, मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव, मोहम्मद शमी, रविचंद्रन अश्विन, ईशान किशन, सूर्यकुमार यादव।

बांग्लादेश- शाकिब अल हसन (कप्तान), लिट्टन कुमेर दास, तंजीद हसन तमीम, नजमुल हुसैन शान्तो (उपकप्तान), तौहीद हृदोय, मुश्फिकुर रहीम, महमुदुल्लाह रियाद, मेहदी हसन मिराज, नसुम अहमद, शक महेदी हसन, तस्कीन अहमद, मुस्तफिजुर रहमान, हसन महमूद, शोरफुल इस्लाम, तंजीम हसन साकिब।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 551 अंक लुढ़का निफ्टी 19,700 के नीचे

नईदिल्ली। ग्लोबल मार्केट से मिले कमजोर रुझानों, मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक तनाव और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के बीच हफ्ते के तीसरे कारोबारी दिन यानी बुधवार को घरेलू शेयर बाजार बिकवाली के दबाव में लाल निशान पर बंद हुए। दोनों फ्रंटलाइन इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी में भारी गिरावट दर्ज की गई। इसके अलावा, भारत और दुनिया भर में बॉन्ड यील्ड में बढ़ोतरी ने निवेशकों को जोखिम भरी संपत्तियों से दूर कर दिया। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 551 अंक कमजोर हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 144 अंकों की गिरावट दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप इंडेक्स 0.85 फीसदी और स्मॉलकैप इंडेक्स 0.32 फीसदी गिर गया। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 551.07 अंक यानी 0.83 फीसदी की गिरावट के साथ 65,877.02 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 66,475.27 की ऊंचाई तक गया ।

कच्चे तेल कीमत में 2 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई

नईदिल्ली। इजराइल और हमास युद्ध का असर कच्चे तेल की कीमतों पर देखने को मिल रहा है। आज यानी बुधवार को क्रूड ऑयल के रेट में लगभग 2 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। हालांकि, भारतीय तेल कंपनियों ने पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं किया है। उद्योग के आंकड़ों के अनुसार, इजराइल-हमास के बीच जारी संघर्ष के चलते मिडिल ईस्ट से सप्लाई में रुकावट की चिंताओं के कारण कच्चे तेल की कीमतों में उछाल देखने को मिला है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रूड ऑयल 91.68 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड के दाम 88.55 डॉलर प्रति बैरल है। 18 अक्टूबर 2023 की लेटेस्ट अपडेट के मुताबिक, इंडियन ऑयल कंपनियों ने पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बढ़ोतरी नहीं की है। हालांकि, राज्यों द्वारा लगने वाले टैक्स के कारण कई राज्यों में पेट्रोल और डीजल के रेट में मामूली बदलाव देखा गया है।

लॉजिस्टिक्स कंपनी की सुस्त मार्केट में भी शानदार एंट्री

मुंबई। लॉजिस्टिक्स कंपनी कमिटेड कार्गो केयर के शेयरों ने सुस्त मार्केट के बावजूद बुधवार को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर दमदार एंट्री की है। इस आईपीओ को भी निवेशकों का शानदार रिस्पॉस मिला था और ओवरऑल 78 गुना से अधिक सब्सक्राइब हुआ था। आईपीओ के तहत 77 रुपये के भाव पर शेयर जारी हुए थे। बुधवार को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसके शेयर 82 रुपये के भाव पर लिस्ट हुए। इस आईपीओ के निवेशकों को लगभग 6.49 फीसदी का लिस्टिंग गेन मिला है। कमिटेड कार्गो आईपीओ एक एसएमई आईपीओ था जो 06 अक्टूबर को सब्सक्रिप्शन के लिए खुला और 10 अक्टूबर को बंद हुआ। कंपनी ने आईपीओ के माध्यम से 24.95 करोड़ रुपये जुटाए। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये की फैस वैल्यू वाले 32.44 लाख नए शेयर जारी हुए हैं। आईपीओ आवंटन को 13 अक्टूबर को अंतिम रूप दिया गया था।

चीनी निर्यात पर लगी पाबंदी 31 के बाद भी रहेगी जारी

नईदिल्ली। सरकार ने चीनी निर्यात पर 'अंकुश' इस साल 31 अक्टूबर से आगे बढ़ा दिया है। इस कदम का मकसद त्योहारी सीजन के दौरान घरेलू बाजार में चीनी की बेहतर उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इससे पहले चीनी निर्यात पर अंकुश इस साल 31 अक्टूबर तक के लिए थे। विदेश व्यापार महानिदेशालय ने बुधवार को एक अधिसूचना में कहा, ''चीनी (कच्ची चीनी, सफेद चीनी, परिष्कृत चीनी और जैविक चीनी) के निर्यात पर अंकुश 31 अक्टूबर, 2023 से आगे बढ़ा दिया गया है। अन्य शर्तों में कोई बदलाव नहीं किया गया है।'' अधिसूचना में हालांकि स्पष्ट किया गया है कि ये अंकुश यूरोपीय संघ और अमेरिका को सीएक्सएल और टीआरक्यू शुल्क छूट कोटा के तहत भेजी जाने वाली चीनी पर लागू नहीं होंगे। सीएक्सएल और टीआरक्यू (शुल्क दर कोटा) के तहत एक निश्चित मात्रा में चीनी का निर्यात किया जाता है।

विश्व कप में छोटी टीमों का बड़ा धमाका

अनुराग भारती

एक पुरानी कहावत है कि देखन में छोटे लगे, घाव करे गंभीर। ये कहावत क्रिकेट के मैदान पर, वो भी इस बार के वनडे विश्व कप में खरी उतरती दिख रही है। पहले अफगानिस्तान ने मौजूदा वनडे विश्व चैंपियन इंग्लैंड को चौंकाया और फिर इसी सिलसिले को नीदरलैंड की टीम ने बरकरार रखा और दक्षिण अफ्रीका को चारों खाने चित कर दिया।

हर कोई हैरान है और अफ्रीकी टीम के खिलाड़ी हक्का-बक्का। बारिश की वजह से 43 ओवर के इस मुकाबले में नीदरलैंड ने एक वक्त सात विकेट सिर्फ 140 रन पर ही खो दिए थे, लेकिन फिर कप्तान स्कॉट एडवर्ड्स ने लीडिंग फ्रॉम द फ्रंट की मिसाल पेश करते हुए पुछल्ले बल्लेबाजों के साथ मिलकर स्कोर को न सिर्फ 245 रनों तक पहुंचाया बल्कि ये अहसास करा दिया कि उन्हें हल्के में लेने की भूल कभी मत करना। बारी जब गेंदबाजों की आई तो दक्षिण अफ्रीका के बल्लेबाजों को कभी पॉल वान मीकरन ने अपनी रफ्तार पर छकाया तो कभी रूलोफ वान डर मेर्व की फिरकी कहर बनकर टूटी। नतीजा ये कि धर्मशाला में मैदान पर वो ऐतिहासिक कारनामा हो गया जिसकी किसी ने उम्मीद भी नहीं की थी।

नीदरलैंड के सामने दक्षिण अफ्रीका घुटनों पर था। दिल्ली से धर्मशाला तक की दूरी तय करने में तस्वीर एकदम उलट ही गई। किसी को यकीन ही नहीं हो रहा था कि मैदान पर सरेंडर करने वाले ये दक्षिण अफ्रीका के वही बल्लेबाज हैं, जिन्होंने दिल्ली में श्रीलंका के खिलाफ 428 रनों का पहाड़ खड़ा कर वनडे विश्व कप का सबसे बड़े स्कोर का रिकॉर्ड अपने नाम किया था। तीन बल्लेबाजों के शतक समेत कई और रिकॉर्ड भी अफ्रीकी बल्लेबाजों

के नाम थे। धर्मशाला में नीदरलैंड की जीत इसलिए भी ज्यादा हैरान करने वाली है क्योंकि मौजूदा टूर्नामेंट में अब तक दक्षिण अफ्रीका की टीम सबसे दमदार अंदाज में दिख रही थी। चाहे वो बल्लेबाजी हो या फिर गेंदबाज़ी। हालांकि पहले अफगानिस्तान की उड़ान और अब नीदरलैंड के चैंपियन अंदाज ने इस बात का अहसास करा दिया है कि उन्हें छोटा या कमजोर समझने की भूल मत करना...और अगर आप ऐसा करते हैं तो बड़े जख्म के लिए तैयार रहिए। ये पहला मौका नहीं है जब नीदरलैंड की टीम ने दक्षिण अफ्रीका को मैदान पर चौंकाया हो। हां, बस फॉर्मेट बदल गया है। नीदरलैंड ने 2022 में टी20 वर्ल्ड कप में बड़ा उलटफेर किया था। तब उसने अफ्रीकी टीम को 13 रन से हराया था। इस हार के कारण दक्षिण अफ्रीका की टीम टी20 वर्ल्ड कप से बाहर हो गई थी। किसी को भी दक्षिण अफ्रीका की उस हार पर यकीन नहीं हुआ था। उस वक्त दक्षिण अफ्रीकी टीम के कप्तान तेंबा बावुमा ने कहा था कि इस हार को पचाना मुश्किल है। इस बार भी बावुमा एंड कंपनी के लिए हार को हजम करना आसान नहीं होगा क्योंकि मौजूदा विश्व कप टूर्नामेंट में वे अर्श से सीधे फर्श पर आ गए हैं। कप्तान बावुमा हार के बाद कहते दिखे- इट विल हर्ट। नीदरलैंड ने अपने आक्रामक अंदाज तो वैसे क्वालीफायर टूर्नामेंट से ही दिखाने शुरू कर दिए थे। तब उनके निशाने पर दो बार की विश्व विजेता टीम वेस्टइंडीज थी। फिर क्या था नीदरलैंड ने वेस्टइंडीज को ऐसी पटखनी दी कि उसकी विश्व कप टूर्नामेंट में एंट्री और वेस्टइंडीज का पहली बार पत्ता साफ। नीदरलैंड की ऑरेंज आर्मी के इरादे एकदम साफ हैं। मैदान पर जीत के लिए भूख साफ दिख रही है और ये बता रही है कि दुनिया भले ही उन्हें चैंपियन बनने की रेस में न मान रही हो लेकिन वे बड़ी से बड़ी टीम के चैंपियन बनने का खेल तो जरूर बिगाड़ सकते हैं। दिल्ली में अफगानिस्तान ने जो धमाका किया, वो भी छोटा नहीं है। सामने अगर मौजूदा विश्व चैंपियन हो तो हर कोई नतीजा तय मानकर चल रहा था। हालांकि अफगानिस्तान के खिलाड़ियों की सोच तो कुछ और ही थी। उनकी इस सोच ने मैदान पर नतीजा और क्रिकेट पंडितों की भविष्यवाणी दोनों को ही बदलकर रख दिया। इंग्लैंड के बल्लेबाज फिरकी के फेर में ऐसे फंसे कि बस घूमते ही रह गए, और जब उन्हें होश आया तो अफगानिस्तान के खिलाड़ी जीत का जश्न मना रहे थे।

आज जगदलपुर आएंगे अमित शाह लाल बाग मैदान में सभा को करेंगे संबोधित

रायपुर। भाजपा प्रत्याशियों के लिए चुनावी माहौल बनाने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह गुरुवार को जगदलपुर पहुंचेंगे। यहां लाल बाग मैदान में वे आम सभा को संबोधित करेंगे। उनके इस कार्यक्रम में बस्तर, चित्रकोट और जगदलपुर इन तीनों विधानसभा क्षेत्र के करीब 30 हजार लोगों के जुटने की संभावना है। अमित शाह के दौरे को देखते हुए सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किए गए हैं।

दरअसल, निर्धारित कार्यक्रम के तहत अमित शाह 19 अक्टूबर की दोपहर 12 बजे मां दंतेश्वरी एयरपोर्ट पहुंचेंगे। यहां से वे सीधे लाल बाग मैदान आएंगे। 12=15 बजे से 1=15 बजे तक वे आम सभा के मंच पर रहेंगे। इसी मंच से अपने प्रत्याशियों के लिए प्रचार करेंगे। उनके आगमन पर प्रशासन ने तैयारियां पूरी कर ली हैं।केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के दौरे को देखते हुए तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के दौरे को देखते हुए तैयारियां पूरी कर ली गई हैं।

अमित शाह के बस्तर दौरे को लेकर सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। एयरपोर्ट से लेकर सभा स्थल तक करीब 2500 जवानों की तैनाती रहेगी। साथ ही (बम निरोधक दस्ता) की करीब 10 से ज्यादा टीमें भी रहेंगी। कार्यक्रम स्थल से लेकर एयरपोर्ट पहुंचने वाले मार्ग में लगातार सर्चिंग अभियान चल रहा है।कहा जाता है कि किसी भी पार्टी को यदि प्रदेश में अपनी सरकार बनानी हो, तो सत्ता की चाबी बस्तर के पास होती है। यहां की सारी 12 विधानसभा सीटों पर कब्जा जमाने से किसी भी पार्टी के लिए प्रदेश में सरकार बनाने का रास्ता आसान हो जाता है। वर्तमान में इन पूरी 12 सीटों पर कांग्रेस का कब्जा है। क्ष्छ्क को इन 12 विधानसभा सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारने के लिए काफी मंथन करना पड़ा।

इसके बाद 12 में से 8 पर नए चेहरे उतारे गए हैं, जबकि 4 सीटों पर हारे हुए प्रत्याशियों को दोबारा मौका दिया गया है। इनमें 4 पूर्व मंत्री केदार कश्यप, लता उसेंडी और महेश गागड़ा और विक्रम उसेंडी पर पार्टी ने फिर से भरोसा जताया है, जबकि केशकाल विधानसभा से पूर्व क्ष्ठ्स नीलकंठ टेकाम को क्ष्छ्क ने अपना प्रत्याशी बनाया है।

भाजपा ने दंतेवाड़ा से चैतराम अटामी, कोंटा से सोयम मुका, चित्रकोट से विनायक गोयल, जगदलपुर से किरणदेव, भानुप्रतापपुर से गौतम उइके, कांकेर से आशाराम नेताम पर दांव खेला है।

अडानी का विरोध करने पर कांग्रेस ने काटा छन्नी साहू का टिकटः रंजना

रायपुर। प्रदेश भाजपा प्रवक्ता विधायक रंजना साहू ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल से सवाल किया है कि क्या खुज्जी विधायक छन्नी साहू को कांग्रेस ने अडानी के खिलाफ विधानसभा में सवाल उठाने की सजा देते हुए उनकी टिकट काटी है। उन्होंने कहा कि

कमल का बटन दबाओगे तो वीवीपेट से अडानी निकलेगा जैसे नारे लगाने वाले जवाब दें कि 5 साल में अडानी को दी गई एक भी अनुमति रद्द क्यों नहीं की और विधानसभा में वनमंत्री से परसा पर सवाल करने वाली महिला विधायक का टिकट क्या अडानी का विरोध करने पर काटा है। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता विधायक रंजना साहू ने कहा कि %लड़की हूं, लड़ सकती हूं% का नारा क्या केवल प्रियंका गांधी के लिए तैयार किया गया? छत्तीसगढ़ की एक बेटी अडानी को लेकर कांग्रेस की भूपेश बघेल सरकार से लड़ी तो कांग्रेस ने उनका टिकट काट दिया। कांग्रेस किसे टिकट दे, यह उसका मामला है लेकिन नवरात्र में टिकट देने का ढिंढोरा पीटने वाले भूपेश बघेल से यह जानने का हक छत्तीसगढ़ की हर बेटी को है कि जनता के लिए लड़ने वाली महिला विधायक को किस बात का दंड दिया है।

उत्तर में फिजां बदलने की तैयारीः पुरंदर मिश्रा

रायपुर। छत्तीसगढ़ में चुनावी तारीखों के ऐलान के बाद सभी पार्टियों ने अपनी-अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। मुख्य विपक्षी पार्टी बीजेपी इस बार कांग्रेस को हर हाल में राज्य की सत्ता से बेदखल करना चाहती है। विपक्षी दल को मात देने के लिए भाजपा कार्यकर्ताओं ने कमर कस ली है। इसी बीच रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में भी भाजपा प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा को विजयश्री दिलाकर फिजां बदलने की तैयारी जोर-शोर से चल रही है।

बताते चलें कि बीजेपी ने रायपुर उत्तर विधानसभा से पार्टी के वरिष्ठ नेता व समाजसेवी पुरंदर मिश्रा को अपना उम्मीदवार बनाया है। यही वजह है कि, उत्तर विधानसभा क्षेत्र के हर वर्ग में उत्साह का महौल नजर आ रहा है। इधर, पुरंदर मिश्रा के जनसम्पर्कअभियान का कारवां बुधवार को शंकर नगर पहुंचा। यहां मंडल के कार्यकर्ताओं की बैठक स्वदेशी भवन में हुई। इस अवसर पर बीजेपी प्रत्याशी पुरंदर मिश्रा ने कहा कि जनसेवा और क्षेत्र का विकास ही उनकी सबसे पहली प्राथमिकता है। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए उत्तर विधानसभा क्षेत्र की तस्वीर बदलने का प्रयास किया जाएगा। लेकिन सपने को पूरा करने के लिए वर्तमान में चुनाव जीतना बेहद जरूरी है। यह चुनाव कार्यकर्ताओं की मेहनत और जनता के आशीर्वाद से ही जीता जा सकता है। उन्होंने आगे कहा, चुनाव धन बल से नहीं, कार्यकर्ताओं के मनोबल के सहारे लड़ा जाता है। बीजेपी का एक कार्यकर्ता होने के नाते कार्यकर्ताओं का जोश व जुनून का वे सम्मान करते हैं। श्री मिश्रा ने कहा कि कार्यकर्ताओं की मेहनत व ईमानदारी की बदौलत बीजेपी इस बार प्रचंड बहुमत से जीतेगी और राज्य में सरकार बनाएगी। श्री मिश्रा ने आगे कहा, उत्तर विधानसभा क्षेत्र राजधानी का हृदय स्थल है लेकिन कांग्रेस सरकार की भ्रष्ट नीतियों के कारण विकास के मामले में यह क्षेत्र अभी भी काफी पिछड़ा हुआ है। उत्तर विधानसभा में रेलवे स्टेशन, मेडिकल कॉलेज, जेल, कोर्ट व कलेक्ट्रेट सहित तेलीबांधा तालाब के अलावा अफसरों, मंत्री व मुख्यमंत्री का निवास होने के बाद भी क्षेत्र बदहाल है।

बीजेपी सांसद सुनील सोनी ने कांग्रेस सरकार पर जमकर निशाना साधा और आरोप लगाया कि वह केवल राज्य को लूटने का काम कर रही है। राजधानी में अपराधी बेखौफ घूम रहे हैं। शहर में मंत्री बंगले के सामने बलात्कार की घटना घट रही है। मुख्यमंत्री अपने कार्यक्रमों से शहर के प्रथम नागरिक महापौर एजाज ढेबर से दूरी बनाकर रखते हैं। महापौर पूरी तरह से भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। शहर की हालत आज बद से बदतर हो गई है। मुख्य मार्गों से लेकर प्रमुख चौंक चौराहों में हर तरफ सड़क पर धूल ही धूल का साम्राज्य है। भाजपा प्रवक्ता संजय श्रीवास्तव ने कहा कि इन दिनों नवरात्र का माहौल है। कार्यकर्ताओं को लोकतंत्र के सबसे बड़ेत्योहार चुनाव में बढ़-चढ़ कर भागेदारी निभानी है। जो कि पांच साल में एक बार आता है। कार्यकर्ताओं को सोशल मीडिया में होने वाले अफवाहों से सावधान रहना है। एकजुट होकर आपसी मनमुटाव को भुलाकर भाजपा का कमल खिलाना है।

बैठक में मुख्य रुप से पूर्व मंत्री पूनम चंद्राकर, प्रदेश मंत्री किशोर महानंद, संयोजक नलनेश ठोकने, मंडल अध्यक्ष अनुप खेलकर, मंडल महामंत्री प्रीतम महानंद, टिकेंद्र वर्मा, विपिन पटेल, गोरेलाल नायक, संतोष साहू व संजय कश्यप सहित कार्यकर्तागण शामिल रहें।

कांग्रेस की नामांकन रैली में भाजपा पर बरसे सीएम बघेल

- **मोदी धान खरीदी पर झूठ बोलकर गए, रमन सिंह ने दो साल का बोनस तक नहीं दिया**

राजनांदगांव। जिले के चारों विधानसभा के कांग्रेसियों प्रत्याशियों की नामांकन रैली में सीएम भूपेश बघेल, चरणदास महंत, प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज शामिल हुए. स्टेट स्कूल में कांग्रेस की आमसभा को संबोधित करते हुए सीएम बघेल ने भाजपा पर जमकर निशाना साधा. मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा, राजनांदगांव में पहले पलायन होता था, पहले आंखफोड़वा कांड होता था,

पहले किसानों की आत्महत्या होती थी, चाउर वाले बाबा चाउर भी खा जा रहे थे, घोटालों पे घोटाला हो रहा था, नान का घोटाला, खदान का घोटाला, धान का घोटाला, इन सबके खिलाफ जनता 2018 में कांग्रेस के साथ खड़ी हुई और कांग्रेस की सरकार बनी.

सीएम बघेल ने कहा, अमित शाह भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हैं, लेकिन नान की जांच नहीं कराते हैं. अमित शाह धान खरीदी पर झूठ बोलकर गए. मोदी जी धान खरीदी पर झूठ बोलकर गए. रमन सिंह ने दो साल का बोनस अब तक नहीं दिया. कांग्रेस की सरकार देना चाहती है, लेकिन मोदी सरकार अनुमति नहीं दे रही है. कांग्रेस की सरकार किसानों के साथ है. धान के साथ है, खेती के साथ है.

सीएम भूपेश बघेल ने कहा, अब राज्य में 20 क्विंटल धान की खरीदी होगी. केंद्र सरकार केंद्रीय पुल में चावल की कटौती कर दें, लेकिन राज्य सरकार अपना वादा पूरा करेगी. उन्होंने कहा, रमन सिंह ने सभी वर्ग को ठगने का काम किया था. कांग्रेस की सरकार ने किसानों से, आदिवासियों से, महिलाओं से जो वादा किया था उसे तत्काल पूरा किया. रमन सिंह और भाजपा के दिमाग में सिर्फ अडानी है. अडानी के हाथों सब कुछ बेच दाना चाहते हैं. जनता सब जागरूक रहे, 7 नवंबर को मतदान करते वक्त ध्यान रखे, गलती से कमल बटन दब गया तो सब अडानी के हाथ में चला जाएगा.

भाजपा की बजाय दर्पण में अपना चेहरा देखें भूपेशः चंदेल

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल ने मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को सलाह दी है कि वह अपनी पार्टी की तरफ देखें कि कांग्रेस में क्या हो रहा है और वह स्वयं क्या कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के भीतर अपने सभी प्रतिद्वंद्वी नेताओं की टिकट कटवाने वाले भूपेश बघेल को कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को जवाब देना चाहिए। लेकिन वह कांग्रेस के लोगों को डायवर्ट करने के लिए भाजपा के पर अनावश्यक टीका टिप्पणी कर रहे हैं। परिवारवाद की जननी कांग्रेस दर्पण में अपना मुख देखे। भूपेश बघेल को भाजपा के प्रत्याशियों पर टिप्पणी करने की बजाय इस पर बात करनी चाहिए कि अब तक प्रत्याशी घोषित क्यों नहीं कर पा रहे थे। नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल ने कहा कि भाजपा ने अपने प्रत्याशी कार्यकर्ताओं की पसंद पर चुने हैं जबकि कांग्रेस में केवल %टारगेट% चला है। यह बात कांग्रेस में वे सभी विधायक महसूस कर रहे हैं, जिनकी टिकट काटी गई है। कांग्रेस में छिड़ी महाभारत का अंत यही है कि यह आपस में लड़कर सत्ता से सड़क पर आने वाले हैं। बस्तर से लेकर सरगुजा तक हर जगह कांग्रेस में बवंडर मच चुका है। भूपेश बघेल से हम कहना चाहते हैं कि वह भाजपा पर नुक्ता चीनी करने की जगह कांग्रेस पर ध्यान दें। कांग्रेस का हारना तो तय है। लेकिन कांग्रेस का थोड़ा बहुत सम्मान बचा रहे, यह भी भूपेश बघेल नहीं चाहते।

बृजमोहन ने बिरगांव में बदली फिज़ा

- **युवाओं का संकल्प परिवर्तन की विकल्प**

रायपुर। वरिष्ठ भाजपा विधायक और पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल बीरगांव रायपुर में नवमतदाता सम्मेलन में शामिल हुए। सम्मेलन का आयोजन भारतीय जनता युवा मोर्चा ने किया था। इस सम्मेलन का मकसद चुनाव में पहली बार अपने मताधिकार का उपयोग करने जा रहे नवमतदाताओं को भाजपा से जोड़ना है।कार्यक्रम में बृजमोहन अग्रवाल ने भाजपा छोड़ कर गए कई कार्यकर्ताओं की घर वापसी भी कराई।बृजमोहन ने कांग्रेस की युवा विरोधी नीतियों को नव मतदाताओं के सामने रखा। उनका कहना था कि, छत्तीसगढ़ और छत्तीसगढ़ियों की बात करने वाली भूपेश बघेल सरकार छत्तीसगढ़ियों की सबसे बड़ी दुश्मन है।

अग्रवाल ने वादाखिलाफी को लेकर भूपेश बघेल को घेरा और कहा कि, भूपेश बघेल ने 5 सालों में वादे तो बहुत किए लेकिन काम एक भी नहीं किया। चाहे वो युवाओं को रोजगार भत्ता, हो या फिर विकलांगों और विधवाओं को पेंशन देने का वादा हो। या फिर गरीबों को पक्का मकान देने की बात हो। सरकार बनने के बाद खुद मुख्यमंत्री भूपेश बघेल केवल भ्रष्टाचार और घोटालेबाजी में जुटे हैं। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री मोदी की गरीब आवासीय योजना और अमृत मिशन योजना के तहत मिलने वाले पैसे को खा गए। अग्रवाल ने रायपुर महापौर ऐजाज ढेबर पर भी भूपेश बघेल के साथ मिलकर गरीबों के हक पर डाका डालने का आरोप लगाया।

बृजमोहन अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ के विकास के लिए कांग्रेस को सबक सिखाने और बहुमत से भाजपा को जिताने की अपील की।

कार्यकर्ताओं में भरा जोश

मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मंगलवार को सिविल लाईन और मदर टेरेसा वार्ड में बैठकें लीं। इन बैठकों में चुनावी रण में उतरने के पहले उपस्थित कार्यकर्ताओं में जोश और उत्साह का संचार किया। सुनील सोनी और गिरी राज भी शामिल रहे। प्रगति चौक सुंदर नगर में के के शर्मा के आवास पर और गोकुल नगर, मठपुरैना में रमेश शर्मा के आवास पर विश्वकर्मा और बढ़ई समाज की बैठक ली। बृजमोहन अग्रवाल ने बैठक में उपस्थित चुनाव प्रभारियों पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता का मार्गदर्शन किया और उनको जमीनी स्तर पर काम करने के निर्देश दिए। उन्हें चुनाव की बारीकियों को समझाया।

छत्तीसगढ़/राजधानी
प्रमुख समाचार

कांग्रेस के उम्मीदवार प्रचंड मतो से चुनाव जीतेंगेः बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद दीपक बैज ने कहा कि कांग्रेस ने उम्मीदवारीं चयन में कार्यकर्ताओं की पसंद का पूरा ख्याल रखा है। टिकट के दावेदारों के आवेदन पर कई बार गंभीरता से विचार किया है और जीतने योग्य उम्मीदवारों को अवसर दिया है। 83 प्रत्याशी की सूची में 14 महिला, 32 नया चेहरा है और दूधाधारी मठ के महंत रामसुंदर दास को भी प्रत्याशी बनाया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं

सांसद दीपक बैज ने कहा कि पहली और दूसरी 83 उम्मीदवारों की सूची से स्पष्ट हो गया अबकी बार 75 पार का लक्ष्य जो कांग्रेस ने तय किया है जरूर पूरा होगा। कांग्रेस की सूची हर वर्ग का पूरा ख्याल रखा गया है। एसटी, एससी, ओबीसी वर्ग तथा सामान्य वर्ग के लोगों को, महिलाओं को भी एवं संत महात्मा को अवसर दिया गया है। भाजपा ने चुनाव के पहले ही अपनी हार मान लिया है। कांग्रेस के 83 उम्मीदवार प्रचंड मतो से चुनाव जीतेंगे। अब की बार राजनांदगांव विधानसभा में भी नया इतिहास लिखा जायेगा। रमन सिंह भी चुनाव हारेंगे। भाजपा ने 15 सालों के शोषण के सभी आरोपियों को एक बार फिर से प्रत्याशी बनाकर छत्तीसगढ़ की जनता में जले में नमक छिड़का है। नान घोटाले, झलकी, पनामा, इंदिरा प्रियदर्शनी बैंक घोटाला, स्काईवॉक घोटाला, चिटफंड घोटाला, आंखफोड़वा के सभी आरोपियों को प्रत्याशी बनाया है।

जनता के मुद्दे भाजपा के पास नहीं बचेः शुक्ला

रायपुर। भाजपा छत्तीसगढ़ में जनसरोकारों के मुद्दों पर चुनाव लड़ने से डर रही है। उसके पास आम आदमी से जुड़े मुद्दे उठाने के लिये नहीं है। वह हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिकता की गंदगी फैलाकर छत्तीसगढ़ की फिजा खराब करना चाह रही है। जिस प्रदेश में हिन्दू-मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध सभी मिल कर आबादी 3 प्रतिशत से भी कम है उस प्रदेश में भाजपा सांप्रदायिकता का गंदा खेल खेलने की कोशिश में है ताकि मतो का ध्रुवीकरण हो जिस कवर्धा में प्रदेश में

सबसे बड़ी जीत मोहम्मद अकबर को दिया, वहां पर आकर आसाम का मुख्यमंत्री धार्मिक विद्वेष भड़काने का काम करता है। पहले अमित शाह ने भड़काऊ भाषण दिया अब हेमंत शर्मा इनमे साहस नहीं किसानों के बारे में आदिवासियों के बारे में लोगों से जुड़ी समस्या महंगाई के बारे मेमं बात करें, धान के बारे में बात करें, मजदूर के बारे में बात करें, यह सिर्फ धार्मिक विद्वेष भड़काना जानते है वही कर रहे है। इनको जनता और जनता के सुख दुख से मतलब नहीं है। देश का तीसरा सबसे ज्यादा बेरोजगारी वाला राज्य आसाम है आसाम की बेरोजगारी दर 17.2 प्रतिशत से अधिक है, छत्तीसगढ़ बेरोजगारी दर 0.5 प्रतिशत है देश में सबसे कम, वह छत्तीसगढ़ में बेरोजगारी की बाते कर रहे है, बेरोजगारी पर मोदी से सवाल करने का साहस क्यों नही दिखाते। मतलब आसाम में महिलाएं पूरे देश में सबसे ज्यादा असुरक्षित है जबकि कांग्रेस राज में महिलायें देश के 5 सबसे ज्यादा सुरक्षित राज्यों में एक है। साइबर क्राइम में आसाम देश में दूसरे नंबर पर हे।

लोरमी की जनता को पता है साव निष्क्रिय सांसदः ठाकुर

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता धनंजय सिंह ठाकुर ने कहा कि लोरमी की जनता को पता है अरुण 100 एक निष्क्रिय सांसद है जिनकी बतौर सांसद कोई उपलब्धि नहीं है।लोरमी की जनता आज दुःखी है कि सांसद के रूप निष्क्रिय व्यक्ति को प्रत्याशी बनाकर लोरमी की जनता के जख्मों पर भाजपा ने नमक छिड़का है। अरुण साव कभी भी बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र की जनता के सुख-दुख में खड़े नहीं हुए हैं

बिलासपुर में ट्रेन रद्द की गई बिलासपुर से चलने वाली हवाई सेवा को बन्द किया गया तब भी अरुण साव मौन थे। कोविड कॉल के दौरान भी जनता को किसी प्रकार से मदद नही की। लोरमी की जनता मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सरकार के कामों से खुश है किसान आर्थिक रूप से सक्षम हुए हैं भूपेश सरकार ने ओबीसी वर्ग को 27 प्रतिशत, एससी वर्ग को 13 प्रतिशत, एसटी वर्ग को 32 प्रतिशत और सामान्य वर्ग को चार प्रतिशत आरक्षण का अधिकार देने 76 प्रतिशत आरक्षण संशोधन विधेयक पास किया तब यही बीजेपी राजभवन की आड़ में उस विधेयक को रुकवा कर आरक्षित वर्गों के हित को बाधित किया है कांग्रेस पार्टी ओबीसी वर्ग को संख्या के आधार पर उनके अधिकार देने के लिए जातिगत जनगणना करने की मांग केंद्र सरकार से की तब भी ओबीसी वर्ग के नेता होने का दावा करने वाले अरुण साहू मौन रहे और ओबीसी वर्ग के साथ हो रहे अन्याय पर चुप रहे।

ईडी और आईटी छत्तीसगढ़ में जमी हुई हैः वर्मा

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय चुनाव मीडिया संयोजक सिद्धार्थ नाथ सिंह के बयान पर पलटवार करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि भारतीय जनता पार्टी के आदतन झूठे नेता अपने संविधान विरोधी चरित्र और संवैधानिक संस्थानों के दुरुपयोग पर परदेदारी करने के लिए हाई कोर्ट की कार्यवाही की गलत व्याख्या करके परदेदारी करने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं। ईडी के प्रवक्ता की भूमिका निभा रहे भारतीय

जनता पार्टी के नेता यह बताएं कि कांग्रेस के किस नेता के पास से ईडी आईटी ने अब तक कितनी संपत्ति जब्त की है? या क्या बरामद किया है? सच यह है कि रमन राज में आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे भाजपाई भूपेश सरकार पर प्रमाणीत आधार पर एक रुपए का भी भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा पाए है। केवल भारतीय जनता पार्टी के राजनीतिक एजेंडा को पूरा करने के लिए ईडी और आईटी छत्तीसगढ़ में जमी हुई है। भाजपा का शीर्ष नेतृत्व और केंद्र की मोदी सरकार भी यह मान चुकी है कि छत्तीसगढ़ में भूपेश पर भरोसे की सरकार के सामने भारतीय जनता पार्टी चुनावी मुकाबले में कहीं नहीं है और इसीलिए एडिट को भारतीय जनता पार्टी के अनुसार एक संगठन के तौर पर भेजा गया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ प्रवक्ता सुरेंद्र वर्मा ने कहा है कि न्यायालय के भीम की गलत व्याख्या करने वाले भाजपाई ईडी जांच पर सुप्रीम कोर्ट के कमेंट भी पढ़ ले 18 जुलाई 2023 को सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने ईडी की जांच पर रोक लगा दी है।

नाकामी छुपाने 25 विधायकों को बलि का बकरा : चोपड़ा

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता डॉ. विमल चोपड़ा ने कांग्रेस की दूसरी सूची में 53 प्रत्याशी घोषित होने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि कांग्रेस ने पहली सूची में 30 में से आठ विधायकों की टिकट काटी। दूसरी सूची में 53 उम्मीदवार घोषित किए तो इनमें 17 विधायकों की टिकट काट दी। 24 प्रत्याशी बदल दिए। अब तक 25 विधायकों को बलि का बकरा बना दिया गया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री होने के नाते

भूपेश बघेल की जिम्मेदारी थी कि विधायक ठीक से काम करें। उन्हें बलि का बकरा बनाने की बजाय भूपेश बघेल को नैतिक जिम्मेदारी लेना चाहिए थी कि उनके विधायकों ने अच्छा काम नहीं किया इसलिए वे चुनाव नहीं लड़ेंगे। लेकिन उन्होंने अपनी विफलता छुपाने के लिए 25 विधायकों की टिकट कटवा दी। यह कांग्रेस की टिकट सूची नहीं, बल्कि भूपेश बघेल की असफलता का जीता जागता नमूना है। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता डॉ. विमल चोपड़ा ने कहा कि कांग्रेस में जो प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया है, उसमें हाईकमान ने भूपेश बघेल की चलने नहीं दी। टीएस सिंहदेव के पीछे जिनको लगाया गया था, उनकी टिकट सिंहदेव ने कटवा कर यह साबित कर लिया कि भूपेश बघेल की बनिस्बत उनकी पकड़ ज्यादा है। भूपेश बघेल की चारों योजनाएं नरवा गरवा घुरवा, बाड़ी फेल हो गई। कांग्रेस ने हार मानकर अपने लगभग 33 प्रतिशत विधायकों को हटा दिया है। यह कांग्रेस की हार है।

भाजपा का सवाल

क्या भूपेश अब ईडी,आईटी, सीबीआई के साथ हाईकोर्ट का नाम भी जोड़ेंगे?

रायपुर। भारतीय जनता पार्टी के केंद्रीय चुनाव मीडिया संयोजक व प्रयागराज (उ.प्र.) के विधायक सिद्धार्थनाथ सिंह ने मुख्यमंत्री से सवाल किया है कि छत्तीसगढ़ के शराब घोटाले में गिरफ्तार लोगों की जमानत याचिका खारिज करते हुए हाई कोर्ट ने जो टिप्पणी की है, उसके मद्देनजर वे जिस तरह कहते रहे हैं कि भाजपा की तरफ से ईडी, आईटी, सीबीआई चुनाव लड़ रही है, तो क्या वे अब इसमें हाईकोर्ट को भी शामिल करेंगे? श्री सिंह ने कहा कि हाई कोर्ट के निर्णय से यह साफ हो गया है कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार को शराब की लत लगी हुई है। कांग्रेस की भूपेश सरकार पर तीखा प्रहार कर श्री सिंह ने कहा कि देश के इतिहास में छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार ऐसी पहली सरकार है, जो अपने राजस्व पर ही डाका डालती है। शराब घोटोले में जमानत याचिका खारिज करते हुए हाई कोर्ट ने कई महत्वपूर्ण तथ्यों को भी संज्ञान में लिया है।

भाजपा केंद्रीय चुनाव मीडिया संयोजक व विधायक श्री सिंह ने कहा कि छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार में सरकारी मुलाजिमों उपसचिव सौम्या चौरसिया, अनिल टुटेजा, सीएसएमसीएल के मैनेजिंग डायरेक्टर अरुणपति त्रिपाठी और राजनीतिक पृष्ठभूमि के अनवर ढेबर, इन सबको हाई कोर्ट के जजमेंट में %सिंडीकेट% कहा गया है, जिसने सोची-समझी रणनीति के तहत सीएसएमसीएल को सिंडीकेट की कठपुतली बना दिया था। यह कोई सामान्य बात नहीं है। सीएसएमसीएल की दुकानों के माध्यम से अवैध और नकली होलोग्राम से नकली शराब बिक रही थी। साथ-ही-साथ सिंडीकेट ने यह भी प्लानिंग की कि जो विदेशी शराब आती है, उसके लिए नए प्रावधान कर दें और इसके लिए एक लाइसेंस बना दिया जिसे एफएल 10-ए कहा जाता है, उसके तहत उन लोगों ने 10 प्रतिशत का कट (कमीशन) लेना शुरू किया। एकात्म परिसर स्थित भाजपा कार्यालय में आहूत पत्रकार वार्ता में श्री सिंह ने कहा कि वह (श्री सिंह) जो तथ्य रख रहे हैं, वे हाई कोर्ट के जजमेंट में हैं। इसमें जिक्र है 19.2 करोड़ जो अवैध बोतलों पर नकली होलोग्राम उसे लगाकर बेचा गया है और 2019-20 से लेकर 2022-23 तक यह चला।

चुनाव में भी न भूलें संस्कार व सम्मान...

रायपुर। चुनाव के दौर में जब राजनीतिक पार्टियां किसी भी स्तर तक जाकर बयानबाजी व आरोप-प्रत्यारोप पर उतर आती हैं। ऐसे में कुछ क्षण ऐसे भी होते हैं जब राजनीतिक सुचिता का मिसाल बनते हैं। जो छत्तीसगढ़ की राजनीति में भी कायम है। मंगलवार को एक तस्वीर सोशल मीडिया में घूमते रही जो कि रावणभाठा दशहरा उत्सव समिति के आमंत्रण पर महोत्सव के पूर्व पूजन कार्यक्रम की थी जिसमें विधायक बृजमोहन अग्रवाल और राज्य गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष महंत रामसुंदर दास के साथ सांसद सुनील सोनी भी उपस्थित थे। महंत जी को सम्मान देते हुए सांसद-विधायक ने पैर छूकर आर्शिवाद भी लिया और जब फोटो सेशन की बारी आई तो उन्हे सम्मानपूर्वक बीच की कुर्सी पर बिठाया। यह चर्चा इसलिए

कि रायपुर दक्षिण विधानसभा से बृजमोहन अग्रवाल भाजपा से प्रत्याशी घोषित हो चुके हैं और महंत जी का नाम कांग्रेस से फाइनल बताया जा रहा है। ये अलग बात की किन्ही कारणों से उन्हे टिकट न भी मिले। लेकिन देखने व सुनने वालों के लिए एक सीख हैं कि ये परम्परा संस्कार व संबंधों का चुनाव के दौर में भी कायम रहना चाहिए। इस आयोजन की एक और खूबी है जिसे बताना जरूरी होगा समिति के दो प्रमुख सदस्य पार्षद मनोज वर्मा जो कि भाजपा से हैं और सुशीलचंद्र ओझा कांग्रेस से,लेकिन दोनों की प्रमुख भूमिका हर साल के सफल आयोजन में होती है। उत्सव खुशियां देती है..रिश्तों की ये मिठास ही तो है छत्तीसगढ़ की पहचान।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्पलेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.